

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् दिसम्बर सन् १८८७ ई. पर्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं उनमें से कुछ इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किरायात से घटा के नियत हुआ है और व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह सुंरी नवलकिशोर के छापेखाने सुकाम लखनऊ महल्ला हज़रतगंज के पते से स्वत भेजकर कीमत का निराय कर लें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
(अ)	दानन्दरत्ननन्दनारक	(से)	कर्मविपाकसंहिता
अपराधभङ्गनस्तोत्र	अथर्ववेदीयप्रश्नोपनिषद्	सेक १ सन् १८७९ ई.	कथाबाललीला
अंतरकोषप्रथमकांड	अथ कावयान	सेक २२ सन् १८८१ ई.	फाल्गुनरमणात्म्य
अस्कांधतीनोकाण्ड	अरिथमेदिक १ भाग	सेक १० सन् १८७९ ई.	कथासागर
अथभयात्रा	नथा २ व ३ भाग	सेक १४ सन् १८८२ ई.	कथाश्री गंगाजी
अनुतरामायण	अंकप्रकार	सेक १० सन् १८८२ ई.	कीबल्प कल्पद्रुम
अध्यात्मरामायण भा	अपरोक्षानुभव	सेक १० सन् १८८५ ई.	कथाप्रिया
बारीका सहित	(इ)	सेक १० सन् १८६२ ई.	कविकुलकल्पतरु
कथासास्त्राऽन्त	इहासुल्लुर्वा	सेक २० सन् १८६६ ई.	कुंडलियागिरिधरवल्ग
अवतारसिद्धि	इन्द्रमभा	सेक २६ सन् १८६० ई.	कथागीतावली
आनन्दाश्रितविद्ययी	इन्द्रनास्त्र	सेक १८ सन् १८६५ ई.	किस्ताचहारदरवेश
अद्वैतप्रकार	ईशावास्यवाजसनेय-	साध १६ सन् १८६८ ई.	किस्ताज्ञातमताई
अपूर्वकथा	संश्रितार्थनियत	सेक १८ सन् १८६६ ई.	किस्तागुनरानोय
अमरविनोद	ईशियनपिनलकोड	सेक ७४ सन् १८७० ई.	किस्ताशैलत मदी
अथभयभङ्ग कल्पवली	इतिहासतिमिरनाराय	सेक १६ सन् १८७३ ई.	कवितारा
अष्टासुतारवडा	इतिहासतानकाइतिहास	(क)	काशीभजनचली
अष्टासुतार खोरा	(उ)	काव्यकुलमास्त्र	कल्पभाष्य
अक्षरचली	इत्यापनिर्दिबिजय	कल्पम्य चिनोद	किताबजंत्री

श्रीगणेशायनमः

काव्यकल्पद्रुम सटीक

श्लोक

कलावर्गाविश्वस्थितिपालयाये गुराणिर्गुरा-
त्मांसलैवेदगाये । तमेकंविभुंसारस्वच्छन्दनामी सश्री
रामपादांबुजातंनमामी १ अथगुरुविचार। विसर्गादिसं
जोगिदीर्घानुस्वारै चतुर्भातियुर्तासदावेर्मधारै। लयौघ-
र्कहोपादश्रुतैकहैज नमः सत्यसीतापरम्पारहैज २

श्रीगणेशायनमः ॥ सश्रीसहित श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथ कपर
कमल की नमस्कार है कैसे हैं श्री रघुनाथजी जिनकी कलापरता कहे
चेष्टा है विराटरूपकी अर्थात् विश्वकी उत्पत्ति पालन संघार गुराणां
कहे यावत् सगुरारूप है निर्गुरात्मकहे निर्गुरारूप जो सो जिनको
अंशहै ऐसा वेदगावत् है तं कहे तौनजं श्रीरघुनाथजी हैं एक कहे
एक आपुही विभुं कहे समर्थ हैं सबको सारांशहै स्वच्छन्दकहे स्व-
चश है नामी कहे जिनको रामसेसो नाम ब्रह्माण्ड में प्रसिद्ध है अ-
थवाश्री आदि छन्दकोनमस्कार हैकैसी हैं छन्देकलाजं मायाकर्ता
जो अक्षरविकहे सोज जाके स्थिति कहे उत्पत्ति पालन कहे गुराणां ।
पूर्वक पदबलय कहे छन्दोभंगादि बोधहोता है गुराणां कहे गुराणां-
दिगारा निर्गुरा कहे शुभ आतम अंशहै ऐसालेकै वेदगावत् है तं कहे
है तौन जो छन्दनामी जिनको नाम जग में प्रसिद्ध है स्वच्छन्द आ-
ही एक विभु कहे समर्थ वेदादि को सारांशहै सबको नाई श्री रघुनाथ
रामा छन्द पादांबुलक छन्द अम्बुजा कहे कमला छन्द इत्येकनामी
नमस्कार है १ जा सीता की गति अक्षरधार है जिनको नमस्कार है
कैसी हैं श्री सीता विसर्गादि कहे चराचर जो विराट् तं उत्पत्तिहोना

संयोगा सन्ध्यादि दीर्घ कर्हं बड़ाई अनुस्वार कहे छोटाई इत्यादि चारि भाँति कर्तव्यता को गुरुता कहे आसुने प्रभाव ते बर्रांजो चे या उत्पत्तिपालननासादि को भारसा करती है अथवा विसर्ग की आदि को बर्रा संयोगी के आदि को बर्रा अरु जामें दीर्घ मात्रा है अरु जामें शीश पर अनुस्वार है यात्री चारि भाँति बर्रा गुरुता पावत है कहे पदके अन्त में लघो बर्रा गुरुता पावत है यथानमः विसर्ग की आदि मकार गुरु है सत्यसंयोगी की आदि सकार गुरु है सीता दीर्घ मात्रा ते तकार गुरु है परंकार अनुस्वार ते गुरु है अन्त जकार लघु को गुरु मानियत है २ ॥

विना दीर्घ मात्रा अनुस्वार हीनो लघो आदि संयोगी वा मानिलीनो । लघुर्धासणा भाँति चारी कही है सदा ई सदाया तुम्हारी गही है ३ अथ गुरु लघु संज्ञा गुरु गकार जानिये लघु लकार मानिये । कलागनै जुजाचिये टगाडडागा पाँचये ४ तस्य कला विचार । छारगन टगा कल पाँच चौडगन टगात्रै जाँच । पुनि गा गन है कल जानि क्रम भेद नाम बखानि ५ यट कल भेद १३ नाम शिव शशि दिनपति सुरफनी शेषसरोज रुधाता कलिचंद्र रुधुवधर्म सालिकर त्रिदशनाम विख्याता ६ पञ्चकल भेद ८ नाम पंचकल । ७ भेद सुरव्य इन्द्रासन सूर गनाये चापहार शेषर पुनिकुसमो अहिगारा पाप गनाये ७ इन्द्रसन लघु आदिनाम पुनि तारापति मेरावत । सुतरेन्द्राधिप कुंजर दंतो मेघनाम कहि जावत ८ ॥

अब लघु को विचार दीर्घ मात्रा अनुस्वार जामें न होइ तिनको लघु कर्हो अरु कर्ह संयोगी की आदि लघु होत है कहे एरो को लघु मानो जात है इत्यादि चारि भाँति लघु होत यथा सदाई-

सदाया दोऊ सकारै लघु तुम्हारी तकार संयोगी की आदिगोत्र
 है यही है एकार गुरु है ताको लघु मानियत है ३ गुरु लघु संज्ञा
 कहत गकार कहें गुरुको बोध लकार कहें लघुका बोध र ग रा
 ठ गन ड गन ट गन सा गन इति पाँच मात्रा गन है ४ ट गन छक
 ला ठ गन पाँच ड गन चारि ट गन तीनि सा गन हैं तिर्गक भेद।
 क्रमते नाम आगे कहत ५ षट्कल तेश भेद प्रथम ॥११॥ शिवनम
 द्वितीय ॥१२॥ शशि तृतीय ॥१३॥ दिनपति ३ चतुर्थ ॥१४॥ सुर ४ पंचम-
 ॥१५॥ फनी ५ षष्ठ ॥१६॥ श्रेष्ठ ६ सप्तम ॥१७॥ सरोज ७ आठम ॥१८॥
 वाता ८ नवम ॥१९॥ कलि ९ दशम ॥२०॥ चन्द्र १० एकादशम ॥२१॥
 भुव ११ द्वादशम ॥२२॥ धर्म १२ त्रिदशम ॥२३॥ मालिकार १३ ईदगन
 पाँच कल आठ भेद प्रथम इन्द्रासन ॥२४॥ द्वितीय ॥२५॥ उर २ तृतीय
 ॥२६॥ चाप २ चौथ ॥२७॥ हारु ४ पंचम ॥२८॥ शेष ५ षष्ठ ॥२९॥ कृष्णम
 ६ सप्तम ॥३०॥ अहिगारा ७ अष्टम ॥३१॥ पापगारा ८ प्रथम जो इन्द्रा-
 सन है ॥३२॥ ताके अपर नाम कहत तारापति संगवत सुनेन्दु अधि-
 प कुंजर मेघ के यावतनाम ८ ॥

सुरमध्यलघुनाम पंचकलपंक्षि विडाल सुगेन्द्र अ-
 मृतवीन अरु सूर्यसकहि गरुडोवापसेन्द्रा ६ अथचौ-
 कलसंज्ञा। गजरथ तुरग पदादपि संज्ञा भेद चतुर्कल जा-
 ये करन और करतल अश्ववसु कहि डिजवर है है पाँचै १०
 करतल जो गुरु अंत चतुःकल कहौ तासुके नामा भु-
 जाहथ्यार सिंगार बाहं कर वज्र रतन अभिरामा ११ म-
 धि गुरु अश्व मनुजपति गजपति वसुधा आदिपती च-
 वनरज्जु गोपाल पयोधर नायक चक्रवती १२ चारि क-
 ला गुरु आदिनाम वसुतातपिता महगाये दहन और ब-
 लभद्रांड पुनि पद परजाय गनाये १३ त्रकल आदिलघु

नामध्वजा अरुतोमरचिन्ह चिराले पवनतुंबरुकचूडाक
ह्रियेवले चासरसमाले १४ पटहतालसुरसुरपतिआनंद
तरजवानसमुद्रे इतिगुरुआदितीनि लघुतांडव सात्विक
नारीसुन्दे १५ ॥

पुनः द्वितीय भेद ८।९ ताके अपरनाम पक्षी विडाल कृगेन्द्र अमृत
पीना सूर्य यस्य गरुड पदेन्द्र ६ चारिकल मात्र की संज्ञा राज रथपुर-
रा पदाति ताके पाँच भेद प्रथम ९।९१ करन द्वितीय ॥९२ करतल त-
तीय ॥९३ अश्वच्छुर्य ॥९४ वसु पंचम ॥९५ हिजवर १० चौकल में
दुजो भेद ॥९६ ताके अपरनाम भुजा हथ्यार शंभार वाहकर बज्र रतन
११ तीजो भेद ॥९७ याके अपरनाम लज्जपति गजपति वसुधापति
चवन रज्जु गोपाल प्रयोधर नायक चक्रवर्ती १२ चौथो भेद ॥९८ ताके
अपरनाम तात पितामह दहन बलभद्र गंड पाँचके यावत् नामहैं १३
ठगानं जो तीनि कल तीनि भेद प्रथम आदि लघु ॥९९ ताके नाम १-
ध्वजा तोभर चिन्ह चिराल पवन तुंबरुक चूडा बलय चास रस मा-
ला १४ विकल में सुरादि ३। दुजो भेद नाम पटह ताल सुरसुरपति
आनन्द तरजवान समुद्र तीजो भेद विलघु ॥३ नाम तांडव सा-
त्विक भाव नारी १५ ॥

अथद्विकल दूपुरअरुमंजीरचामरोहारुवलेअभि-
रामा कंकनअरुताटककुंडलोगुरिकहिलघुप्रियनामा
१६ अथ एकलघुनामा कनक शंख रत्न लेकडंडरसजानि
सकल अभिलाये कुसुमरूपरसपरसगंधगनामसकल
लहभाये १७ इतिमावागना अथवरणागरा लिरव्यते।
नगन त्रिगुरुसहिदेवताकरतसिद्धिनगनत्रिलघुदोषसु-
स्वमनसिचहै भगनादिगुरुचन्द्रदेवताकरतकीर्तियग-
नादिलघुमलजसभयभूतहै सधियुरुजगनकोरविशोगा

तगनांत लघु वायू भ्रमत उदास जननित है सधि लघु-
गन को अग्नि करत दाह सगनांत गुरु काल रस है अ-
मित्र है २८ ॥

शागन द्विकल द्वै भेद प्रथम एक गुरु ५ नाम चूपुर मंजीर चालर
हार वलय कंकन ताटक कुंडल इति अथ द्विलघुनाम अति प्रिय पा-
मप्रिय सप्रिय १६ एकलघुनाम । कनक शंख रत्न मंरु दंड रस कुसुम
रूप रस गंध परस २७ इति सात्रा गना अथ वरन गन तीनि वरन कां ।
गन तीनिह गुरु होइ ५५५ ताको भगन कही ताको देवता श्रद्धा
है सो लक्ष्मी की देनहारी है तीनि लघु होइ ॥॥ ताकां नगन कही-
ताको देवता श्रेय सो सुख को देनहारे हैं सगन नगन मंजु मित्र
संज्ञा है २ आदिगुरु ५॥ ताको भगन कही याको देवता चन्द्रार्का-

नाम	उदाहरण	रूप	देवता	फल	संज्ञा
भगन	सीतैतं	५५५	श्रुति	मंगल	मित्र
नगन	रमन	॥॥	श्रेय	हृदि सुख	मिष्ट
भगन	राम हि	५॥	चन्द्र	कीरति	दास
वगन	विद्याशी	१५५	जल	यश सुख	दास
जगन	सियांन	१५१	भायु	संग	उदास
तगन	हेरी हू	५५१	पवन	भ्रान	गराम
रगन	भूल हू	५१५	अग्नि	दाह	गण
सगन	अमं त	११५	काल	मृत्यु	गण

ति सुख को दाता है आदिलघु १५५ याको यगन कही याको देवता-
जल है सो यश धन को दाता है भगन यगन ये दोऊ राम संज्ञा है २
सधि में गुरु होइ ५१ याको जगन कही याको देवता सूर्य गंगकदाता
हैं अन्त में लघु होइ ५५१ तरान कही याको देवता यवन है जग में
भ्रमन करावै है जगन तरान दोऊ उदास संज्ञा है ३ मध्यमें लघु होइ
५१५ ताको रगन कही याको देवता अग्नि है दाह को दाता है अंत में लघु
होइ ताको सगन कही ॥५ याको देवता काल है मृत्यु को दाता है अन्त
सगन दोऊ शत्रु संज्ञा है ४। २८ ॥

अथ द्विगन। सिद्धि मित्र मित्रजय दास अरु मित्र मिले
 हानि मित्रो दास प्रियनाश मित्र अरि है दास मित्र सिद्धि
 दास दास हानि जानियत दासो दास पीड़ा दास शत्रु न हारि
 है अल्पता उदास मित्र दुखद उदास दास अफल उदास दोऊ
 दुखो दास अरि है शत्रु मित्र अफल तिया को नाश शत्रु दास
 शत्रो दास शंक शत्रु शत्रु नाश करि है २६ अथ सात्रानय।
 पूछै जौ न भेद जै कल में तै कल को लिखिली जै एक द्वैती नि
 पांचवसुत्रै दश यह क्रम कल प्रति दी जै पूछो भेद को अन्त
 अंक जोता मे प्रथम मिदय उबरो अंक लिखे कल ऊपर तिन
 में अनि घटैय जेहि शिर घटै कला ताही में अगिली कला
 मिलावै सो गुरु करै और सब लघु लिखिनय भेदयोगावै २७

अथ द्विगन को विचार कहत प्रथम चरणा अरु दूसरे चरणादि
 में जो मित्रगन होइ तो सिद्धि दाता प्रथम मित्र दूजे दास जै को दा-
 ता आदि मित्र दूजे उदास हानि करै आदि मित्र दूजे शत्रु मित्रनाश
 होइ १ आदिपद में दास दूसरे में मित्र होइ तो सिद्धि दाता है दोऊ
 पदन में दास होइ हानि दाता प्रथम पद दास दूजे में उदास होइ तो

	सिद्धि	मित्र	हानि	प्रियनाश	
माय	५५५ ॥ मित्र	५॥ ॥ दास	१५१ ५५१ ॥ शत्रु	५१५ ॥ ॥ शत्रु	५५५ ॥ ॥ सिद्धि
शंका	५१५ ॥ ॥ शत्रु	मगन ५५५	मगन ॥	मगन ॥	५१॥ ॥ ॥ सिद्धि
स्वियनाश	१५१ ५५१ ॥ शत्रु	मगन ५१५	मगन ॥	मगन ५५५	५१५ ५५१ ॥ शत्रु
भय	५५५ ॥ ॥ शत्रु	मगन ५१५	मगन ॥	मगन ५५५	५१५ ५५१ ॥ शत्रु
	५५५ ॥ ॥ शत्रु	५१५ ५५१ ॥ शत्रु	५१५ ५५१ ॥ शत्रु	५१५ ५५१ ॥ शत्रु	५५५ ॥ ॥ शत्रु

पीराके दाता प्रथम दास दूजे शत्रु होइ तो मंग्राम में हारि दाता २।
 आदि यद उदास दूजे में मित्र होइ तो अल्पफल प्रथम उदास दूजेमें
 दास होइ तो दुरब के दाता दोऊ में उदास होइ तो अफल के दाता अ-
 दि उदास दूजे शत्रु दुरब दाता ३ आदि शत्रु दूजे मित्र अफल दाता
 आदि शत्रु दूजे दास युवती नाश करै आदि शत्रु दूजे उदास शंका
 करै दोऊ में शत्रु नाश करै २६ अथ मात्रा नद्यांमो कोऊ पूँछे यतरे
 कला में यह भेद कैसे हो ते कला सीधी पाइ लिखि लेइ तिनके गी-
 श पर एक है है एक तीनि तीनि है पाँच पाँच तीनि आठ आठ पाँच
 तेरह तेरह आठ एकैस एई अंकक्रम ते कलन के शीरा पर लिखि
 जाइ तहाँ प्रथम अंक जो भेद पूँछे तैको अंक शेष अंक जो पीछे
 को है तामे मिटाइ देइ जो बाकी रहै ताको कलन के ऊपर अंकन
 में घटाइ देइ जीनी जीनी कलाके ऊपर घटै ता कला को अगिला
 कला में मिलाइ गुरु करै बाकी रहै ते लघु यथा मात मात्रा में चोद-
 हो भेद कैसे हो तब मात कला लिखी ता कलन के ऊपर एक है
 तीनि पाँच आठ तेरह एकैस लिखे प्रथम अंक जो चोदह सो शेष
 अंक एकैस तामे मिटाये बाकी रहे मात तहाँ दूसरी कला पर गुरु
 को अंक चौथी पर पाँच को अंक तो दूसरी को तीसरी में मिलाइ गुरु
 की न चौथी पाँचई में मिलाइ गुरु की न तो दूसरा तीसरो गुरुभयो
 अरु प्रथम चौथो पाँचो लघु रहे यह चोदहो भेद भयो २० ॥

अथ उद्दिष्ट मात्राको लिखिके भेद पूर्व दूने क्रम अंक
 लघुन शिर दीजे गुरुके प्रथम शीश पुनि पायन या वि-
 धि सो लिखि लीजे गुरु शिरके सब अंत अंक में मेदिपुन-
 अभिलाषी बचै जु अंक उद्दिष्ट भेद सो वैजनाय यह भा-
 यो २१ अथ वरन नद्य गुरुदै आदि विषम लघु समदै भा-
 ग सहज सम कीजे विषम एकदै भाग विषम सम गुरु
 लघुक्रम सोइ दीजे गुरु लघु धरत भाग तब लगि करु भेद

प्रज्व आवे वरन नष्ट की शतियथा विधि वैजनाथ य-
द्ग आवे २२ ॥

अथ मात्रा उदित् लिखि कै पूछै यह कौन भेद है तब एक डैती-
नि पाँच आठ तेरह सक्कीसादि अंक लघुन के शीश पर लिखै अरु १-
गुरु के शीश पर लिखै पुचातरे लिखै तहाँ गुरु के शीश के अंक जोरि
शेष जो अंत को अंक है तासैं घटावै जो बाकी रहे सोई भेद है यथा
प्रथम लघु दूसरो तीसरो गुरु चौथ पाँचौ लघु यह कौन भेद है त-
हाँ प्रथम लघुताके शीश पर एक लिखा दूसरो गुरु है ताके शीश
पर प्रथम दुइ को अंक लिखा ताके नीचे तीनि को अंक लिखा ती-
सरो गुरु है ताके शीश पर पाँच लिखा नीचे आठ लिखा चौथो लघु
ताके शीश पर तेरह लिखा पाँचौ ल-
घु ताके शीश पर सक्कीस लिखा तब
देखा गुरु के शीश पर दुई अरु पाँच
है ताके जोरे सात भये सो सक्कीसमें
घटावा तब चौदह रहे यह चौदहो भेद
है ॥ २१ ॥

अथ मात्रा नष्ट चक्र
१ २ ३ ४ ८ १३ २१
१ ५ ५ १ १
चौदहो भेद है २४

अथ वरना नष्ट - कौज पूछै यतरे वरन में यह भेद कैसो है तब प्र-
रनाक्षर जो विषम होइ तो प्रथम गुरु धरे जो सम होइ तो लघु धरै
पुना ताके है भाग करै तहाँ जो सम होइ तो सन्नजही सैं भाग वने
जो विषम होइ तो एक और मिलाव भाग करै जो विषम परै तो गुरु धरै
सम परै तो लघु धरै याही

सम भाग देता गुरु लघु धरत
नद नरना प्रर होइ जाय तब
कहे यह भेद है यथा पाँच

मात्रा उदित् चक्र
१ २ ४ १३ २१
१ ५ ५ १ १
३ ८
चौदहो भेद है २४

वरन नष्ट चक्र
२१ ११ ६ ३ २
५ ५ १ ५ १
सक्कीसो भेद २१

वरन प्रत्तार में सक्कीसवाँ भेद प्रत्य तहाँ सक्कीस विषम है ताको
गुरु भयो : सक्कीस को भाग नावनी एक मिलाव चाईस ताके आधे
गैरा निवृत्त ताके गुरु भयो : गैरा को भाग नावनी एक मिलाव

अथ याही विधि मात्रा को मेरु सक है सुरादि जानो जात है २५ ॥

अथ वरसा मेरु गनती रीति को व आद्यंतन सक सक लिखि आवै सूने शिरत्रै कोठ मध्य में है को अंक बनावै शिरते अंक जोरि आदि नते परको कोटा भरिये सूने कोटा या विधि पूरो वरसा मेरु यों करिये २५ ॥

अथ वरसा मेरु प्रथम है फिरि तीनि चारि पाँच इत्यादि कोटा बनावै आदि अंत कोठन में सक सक को अंक लिखि जाइ पुनः तीनि कोटा में मध्य कोटा शून्य तामें है को अंक लिखे पुनः शीशते जोरि नीचे के कोटा आदि ते भरत जाइ यामें सक है सुरादि भेद होत २५

मेरु वरसा

								१	१	१
							१	२	१	२
					१	३	३	२		३
			१	४	६	४	१			४
		१	५	१०	१०	५	१			५
	१	६	१५	२०	१५	६	१			६
	१	७	२१	३५	३५	२१	७	१		७
	१	८	२८	४६	५०	४६	२८	८	१	८
१	६	३६	८४	१२६	१२६	८४	३६	६	१	६
६	८	७	६	५	४	३	२	१	गुरु	

अथ मात्रा पताका जै मात्रा को रचै पताका मेरु खंड सोइ लीजे प्रतिकोठन गनि छन्द कोष्ट तै खड़ी पाँति सब कीजे है उदिष्ट शिरशेष अंक में एक एक अंक घटैये एक गुरु पाँति दोय घटि है गुरु त्रै गुरु तीनि मिटैये

अथ मात्रा पताका जै मात्रा को पताका रचिवे होइ मेरु को खसड सोइ उतारि जाकोरा में जै भेद होइ बाके नीचे ते तरे कोटा बनावै याही पाँति के पुनः उदिष्ट रीति तै अंक सक है तीनि पाँच

आठ तेरह इक्कीसादि लिखै युनः शेष जो अन्त को अंक नामें-
 एक एक घटाइ लिखि चारमात्रापताका नीनि मात्रापताका
 जाइ एक गुरु पाँति होइ
 याही विधि द्वै द्वै घटावै
 द्गुरु पाँति तीनि तीनि
 घटावै त्रिगुरु पाँति इत्यादि
 अथवा प्रस्तार खेंचत में जै
 गुरु की छन्द होइ ताकी पाँति
 में लिखत जाय या विधि पताका
 सहजही बनाइ लीजे २६ ॥ सातमात्रापताका चाडमात्रापताका

चारमात्रापताका

१	२	५
	३	
	४	

नीनि मात्रापताका

१	३
२	

पाँचमात्रापताका

१	३	८
२	५	
४	६	
	७	

षट् मात्रापताका

१	२	५	१३
	३	८	
	४	१०	
	६	११	
	७	१२	
	९		

सातमात्रापताका

	१	३	८	२१
	२	५	१३	
	४	६	१६	
	७	९	१६	
	१०	१६		
	११	२०		
	१२			
	१४			
	१५			
	१७			

चाडमात्रापताका

१	२	५	१३	३१
	३	८	२१	
	४	१०	२६	
	६	११	२६	
	७	१२	३१	
	९	१६	३२	
	१४	१८	३४	
	१५	१६		
	१७	२०		
	२१	२३		
	२४			
	२५			
	२६			
	२७			

अथ बररा पताका यथामेरु खराड लै बररा पताका छंद अंक जै देखै प्रति कोठा तै कांष्ट गणित करि खड़ी पंक्ति तर लखै पुरुव अंक भरी पर अंकन आयां अंकन आवै करि गनती प्रस्तार भरो लै बररा पताका गावै

अथ वरगा पताका यथा जै वरगा को पताका बनायो चहै सोई खंडमेरु को उतारिलेइ जोने कोटा में जै को अंक होइ तै कोटा तरे खड़ी पाँति के बनावै शीश के कोठन में उदिरि गति हुने क्रम अंक लिखि जाइ पुनः पूर्व के अंक लैके पर अंक भेरे अरु अरु आयो अंक फिरि ना आवै यथा चारि वरगा पताका हेतु मेरु को खंडलीन तामें पाँच को कोटा है तहाँ प्रथम -

पाँच वरगा पताका

१	२	४	८	१६	३२
	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	२८	
	९	१०	१५	३०	
	११	१२	२०	३१	
	१३	२२			
	१८	२३			
	१६	२६			
	२१	२७			
	२५	२९			

त्रिवरगा पताका

१	२	४	८
	३	६	
	५	७	

द्विवरगा पताका

१	२	४
	३	

चारि वरगा पताका

१	२	४	८	१६
	३	६	१२	
	५	७	१४	
	९	१०	१५	
	११			
	१३			

बह्वरगा पताका

१	२	४	८	१६	३२	६४
	३	६	१२	२४	४८	
	५	७	१४	२८	५६	
	९	१०	१५	३०	६३	
	११	१२	२०	३१	६२	
	१३	१४	२२	४०	६१	
	१८	१९	२४	४४		
	१६	२६	२६			
	२१	२७	३७			
	२५	२९	३२			
	२४	३६	३४			
	३५	३८	३५			
	३७	३९	४८			
	४१	४२	४९			
	४६	४३	६३			
	४५					
	५०					
	५१					
	५२					
	५४					

कोटा में एक को अंक एक कोटा बनावा दूसरे में चारि को अंक चारि कोटा तरे बनावा तीजे में छः कोटा चौथे में चारि कोटा पाँचये में एक अंक एक कोटा तहाँ शीश के कोठन में हुने क्रम अंक लिखा अदि मफ हुने है तीजे चारि चौथे आर लिखा पाँचये भोलइ तहाँ पूर्व एक को हुइ मिलाइ तीजे नीचे लिखा चारि में एक मिलाइ पाँच तांक नीचे लिखा आर में एक मिलाइ नो पाँच के नीचे लिखा त्रिगुरु पाँति हो गई पुनः पुनः

चारि छः एक है तीनि चारि मात पुनः दुइ अरु आठ दश एक दुइ छः
ठ ग्यारह लिखा पुनः एक चारि पाँच आठ तेरह लिखा द्विगुरु पाँच
भई पुनः चारि आठ बारह पुनः दुइ चारि छः आठ चौदह पुनः एक
है चारि आठ पन्द्रह एक गुरु पाँचि भई २७ ॥

अथ मात्रा मरकटी षटकोठावलि पंचशूनयकहैचौ
षट्षट् पाँचै षट् सरचौसरचौत्रै शिरहै है कम सोय गचै
औरो लिखै जहाँ लौ चाहै कला मरकटी मानै हत भेद मा-
त्रा अरु वरसौ गुरुलघु को पहिचानै २८ ॥

अथ मात्रा मरकटी यथा छः कोठा की पाँचि करि पंचसको
ठा शून हरि अक्षरमें एक को अंक बनाइ गये पुनः दूसरे अरु
चौथे कोठा को अंक जोरि छठयें कोठा में लिखा छठे कोठा को अं-
क पंचयें कोठा में लिखा छठयें पंचयें को जोरि चौथे कोठा में।

हत	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	
भेद	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मात्रा	१	४	८	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
वरसौ	१	२	७	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
गुरु	०	१	२	५	१०	१०	३०	७१	११०	२२५	४२०	७४४	१२०८	१८००
लघु	१	२	५	१०	१०	३०	७१	११०	२२५	४२०	७४४	१२०८	१८००	२४००

लिखा पंचयें चौथे को जोरि तीजे कोठा में लिखा अरु शिरके है है
अंक जोरि दूजे कोठा में लिखा एक है कम ते पहिले कोठा में लि-
खाया विधि जहाँ ले चाहै तहाँ लौ लिखै प्रथम कोठा में हत उजे
में भेद तीजे में मात्रा चौथे में वरसा पाँचयें में गुरु छठयें में लघु
इत्यादि जानबे हेतु मरकटी है २८ ॥

अथ वरसा मरकटी षटकोठन की पाँचि आदि।
कम दूजी दुगुरा बनाबै आदि हैक गुरा चारि लिखै

चौ अर्द्ध पंच घट पाधे पाँच चारि लै तीनि लिखै यह वरसा मर्कटी माही चत भेद मात्रा अरु वरसों गुरुलघु जाने जाही २६ ॥

अथ वरसा मर्कटी प्रथम चः कोठन की पाँति बनावै शीशको ठन में एक द्वै तीनि कमते अंक लिखि जाइ अत दूसरे कोठन में द्वै चारि आठादि बूने कम लिखि जाय पुनः ऊपर के अंक दूसरे में गुणित करि चौथी पाँति लिखि जाइ पुनः चौथी पाँति के अंकन को आधे आधे पंचदं अरु छठई पाँति में लिखै पंचदं पाँति

वरसा मर्कटी चक्र

घट	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
भेद	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२	१०२४	२०४८
मात्रा	३	१२	३६	६६	२४०	५७६	१३४४	३०७२	६६६२	१५३६०	३३०८६
वरसा	२	८	२४	६४	१६०	३८४	८६६	२०४८	४६०८	१०२४०	२२५२८
अत	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४४	१०२४	२३०४	५१२०	११२६४
लघु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	२३०४	५१२०	११२६४

अरु चौथी जोरि तीसरी पाँति लिखै याही भाँति जहाँ लौ चाहैतहाँ तक लिखै यही वरसा मर्कटी ते वरसा प्रस्तार के चत भेद मात्रा अरु वरसा अत्यादि जानो जात है प्रथम कोठा में चत दूसरे में भेद तीसरे में मात्रा चौथे में वरसा पाँचये में गुरु वरसा छठये में लघु वरसा २६ ॥

अथ मात्रा प्रस्तार देख प्रथम गुरु तर लघु समक रू पाँति शेष लघु गुरु सो प्रस्तार कला को जत सर्व लघु सो ३० ॥

अथ मात्रा प्रस्तार जै मात्रा को प्रस्तार करो चाहि तै मात्रा प्रथम भेचि लेइ पुनः प्रथम गुरु के तर लघु सँचे वनः जैसी पाँति ऊपर

अथ वरणा प्रस्तार देह प्रथम गुरुतरलघुसमकरु
पाति शेष गुरु पावे पूरकरौ प्रस्तार वरणा को जौ ल
गि सब लघु आवै ३१ ॥

अथ वरणा प्रस्तार प्रथम सब वरणा गुरु लिखे मुनः प्रथम
गुरुतर लघु बनावै मुनः ऊपर सम पाति पूरि करै जो बाकी रहे
सो वरणा गुरु ते पूरकरै याही भाँति लिखे जब सब लघु आवै-
तब प्रस्तार को अंत है ३१ ॥

(वरणा प्रस्तार)

वरणा प्रस्तार आत्मः	५५१ ५	१११ ५ ८	५१५५५ ३	१५११५ १४	५५५११ २५
९५ १	१५१ ६	५५५१ ६	११५५५ ४	५१११५ १५	१५५११ २६
१२	५११ ७	१५५१ १०	५५१५५ ५	११११५ १६	५१५११ २७
२५५ १	१११ ८	५१५१ ११	१५१५५ ६	५५५५१ १७	११५११ २८
१५ २	४५५५५ ९	११५१ १२	५११५५ ७	१५५५१ १८	५५१११ २९
५१ ३	१५५५ २	५५११ १३	१११५५ ८	५१५५१ १९	१५१११ ३०
११ ४	५१५५ ३	१५११ १४	५५५१५ ९	११५५१ २०	५११११ ३१
३५५५ १	११५५ ४	५१११ १५	१५५१५ १०	५५१५१ २१	१११११ ३२
१५५ २	५५१५ ५	११११ १६	५१५१५ ११	१५१५१ २२	इति
५१५ ३	१५१५ ६	४५५५५ १२	११५१५ १२	५११५१ २३	
११५ ४	५११५ ७	१५५५५ २	५५११५ १३	१११५१ २४	

अथ शुभाक्षर गुरादायक श्रुति जाच साधु इ-
र्षा छाड़ौ अघे दायक वित सदा च सुवरणा मय भूष-
णा सुगान ३२ ॥

शुभाक्षर विचार यथा करव ग घ च छ ज उ त द न य श स ह
इत्यादि शुभाक्षर है मगन नगन भगन यगन इत्यादि सुगान
हैं कवित के आदि में देख ३२ ॥

अथ रथासरावोद्वेभूटाभावयदपथहरफरिवा
 ड. मजना कवितनसगलावतजसरअग्रिसमानर ३३
 अथ वरणा चति। धीही गोश्री १ मधुरितकुसवित २ ल-
 प्रीयलै लही धमे ३ तालभारु पावसारु ४ शरदअम-
 लनवलकमल ५ हे मांतै मेयाला परती धीलै ताला ६
 रससीक समै शिशिसमासमै ७ इति ऋतुवर्गानि ॥

अथ धर्मसीधाचंगा सेलारंगा सोटाऊचा स्वस्थानीचा
 धीरादेगा धावारेगा कामाकर्मा करार्धाधर्मा ॥ ८ ॥

अथ रथासरावोद्वेभूटाभावयदपथहरफरिवा इ-
 त्यादि रथासरा हैं तगन जगन समान रगन इत्यादि कवित्त आदि
 में नरे ३३ अथ वरणा चति धीशुद्धिही लखागो इन्दी में जाके होइ
 ली श्री कहे अथ हे पुनः गो कहे एक पुरु की श्री छन्द है ११ विकहे
 इइकुस कहे लख ॥ ताको मधुछन्द कही पुनः मधुवसन्त भेवनादि
 पूले दोहा। वज्रकुम्भित अलिमगा भ्रमत कोकिल शब्द गंधीर।
 निरहिलि वधों सहि पीव बिन डोलत विविधिसमीर २ लग्नीलय
 गुरु। १५ ताको महीछन्द कही प्रीधमचरतु में शृष्ठी आदि तप्त दोहा।
 चेंडमातुं करतप्त महि हस्ते सरिसर नीर। स्वस गुलाव जल जंत्ररुचि
 प्रीधम तप्त समीर ३ ताल कहे गुरु लघु ५। ताको सारु छन्द कही पुनः
 पावसचरतु में तालादि जल सो भरे दोहा। सतडिगर्जि घनवर्षि म-
 हि हरि धुनि रावुर मोर। विडुकी शरभतु पांतिवक चात्तिक भींगुर
 सोर ४ नकहे एकनगन की ॥। कमल छन्द है पुनः शरदचरतु में
 कमल नवीन चन्द्रमा जलादि अमल दोहा। कमल नवलजल अमल
 शशिकास कुसुमसित औनि। न्यपयान पथ पथिक चलि शरद
 चारुनी औनि ५ मे कहे एक मगन की १११ ताला छन्द है पुनः हे
 मांत में याला परत ताल में जल सपेव दोहा। शीत विपुल जगपिक
 लसित कल जल कमल सताल। उष्णतल तियतैल चहि विपुल नि-

या विमि काल ई सकहे एक सगन ॥ ९ कीरमनीक चन्द है पुनः
 शिशिरप्रतु में रमणीकता दोहा। नृत्यबाच भरि रंग में गारी
 गान नबोग। खेलत हंसत अनन्द सो शिशिर लाज तजिलोग ७
 इति वरश्चतु वर्णान अथ पूर्णा उपमांग प्रथम धर्म वर्णान यथा १
 सङ्घट्टे सेतादि रंग मोटा जैबा पातरनीच धीरावेगि दौरव मन्द-
 बाल इत्यादि का मन के कर्म तिनको कराये सब धर्म है पुनः क-
 र्णा कहे द्वियुक्त ९९ की कामाचन्द है ८ ॥

अथ वाचक सोसेसीसासेसासाना मोगोतीरार्ण
 वाचैजाना ६ अथ उपमेय। पादजाघतुचा लंकनाभी
 कुचा हाथ ग्रीवा मुखवाकर्ण भूचच्छुरवा पीपियारी
 कहे सोपमेई लहे १० मराल गयंद जुंरंभमृगेंद ११
 कूपलता पर सौरभमंदर १२ कपोतालि सीपौ जपादा
 खदीपौ सुकाहीच्छुमीना छटाहीरवीना लताहेमवा
 ना शशीसोयमाना १३ जटाअनूठासपर्कीयपंचालि
 मुग्धाज्ञज्ञाताममध्यारुप्रौढालि १४ ५। मनायका।
 धर्मवृत्ति अर्थालंकृति धामलक्षणा बोधसुसोसफल
 काव्यकल्पद्रुमनाम ॥ १५ ॥

अथ वाचक यथा सेसो सेसी सेसा सामान इत्यादि वाचक
 है पुनः सो सगन गो एक युक्त ९९९९ ताको तीरार्ण चन्द कही है
 अथ उपमेय यथा पादजाघतुचा कटिनाभी कुच हाथ ग्रीव मुख
 कान भौंह नेत्र पीव प्यारी इत्यादि उपमेय है पुनः री कहे एक र-
 गन ९९ की प्रिया चन्द है १० अथ उपमान यथा हंसहाथी कद-
 ली सिंह जु कहे एक जगन। ९९ की मृगेंदु चन्द है ११ कुंवालता १
 अथ रत्न के राखा पत्र अंशु पञ्चव फूल सौराव रंग फल परवत

भकहे भगन ॥ एककी मन्दर छन्द है १२ कपोत अलिती पीन-
यादारव दीपक शुक् अहि इच्छु सीन तड़ितहीरा बीना हेमलता-
वान शशि इत्यादि उपमान है या कहे एक यगन की ॥ ११ शर्गां-
द है १३ अथनायका यथा जटा व्याही अचूठा अनव्याही इति पर-
किया पंचालिकहे गनिका पुनः जोबन बिना जाने अज्ञात जोबन
जाने ज्ञात इति सुग्धा लज्जा मदन समान ते मध्या कास कला प्र-
वीन ते प्रौढा १४ यामें नायका भेद सो काम फल है छन्द जानहो
धर्म फल है अरु अलंकार भेद सो अर्थ फल है लक्षणा व्यञ्जना-
दि वा सबके लक्षणा को ज्ञान सो मोवा फल है अर्थात् अलंकार
नायका भेद छन्द लक्षणा व्यञ्जना रसादि सांग सब उदाहरणा
नाम छन्दही में है ताते या ग्रन्थ को नाम काव्यकल्पद्रुम है १५ ॥

अथलुप्त पूरार्णोपमा यथा कलिकासनराचं पशुभ-
पदमंदमंदहारी ऐसी दोऊ तापै गुरुतानितं वलेखि ।
सिंह कटि निकट गभीर कुंड वीचिका सी फैली श्याम
सुक्ष्म सी उदरन समपेखि कुच्च उच्चथी फल कपोत ।
की सी ग्रीव सित कुंद सी कटाक्ष अक्षतिक्षरा सुकीयं व-
ख वैजनाथ वाल सुख सेत विधु पूरणा सो फैली फूलि
प्रीति पीपरन दंड कंज देखि ॥ १६ ॥

अथ पूरार्णोपमालुप्तोपमादि षोडश भेद यथा सनख अंगुरी-
सहित नरा चम्या की कली है यामें केवल उपमान वरान धर्म
वाचक उपमेय लोप १ शुभपद या केवल उपमेय वरान धर्म ।
वाचक उपमान लोप २ मन्द मन्द गति है यामें केवल धर्म-
वरान उपमान उपमेय वाचक लोप ३ हारी ऐसी दोऊ जंघ-
यामें केवल वाचक वरान उपमान उपमेय धर्म लोप ४ गुरु-
तानितं यामें धर्म उपमेय वरान वाचक उपमान लोप ५ सिं-
ह कटि यामें उपमान उपमेय वरान वाचक धर्म लोप ६ गभीर

दंडनाभी है यामें धर्म उपमान वररान बाचक उपमेय लोप ७ बीचि-
 कासी त्रिबली है यामें बाचक उपमान वररान उपमेय धर्मलोप ८
 फैली श्याम सुक्ष्म सी रोमराजी है यामें धर्म बाचक वररान उपमा-
 न उपमेय लोप ९ उद्ग्नसमया में उपमेय बाचक वररान उपमा-
 न धर्मलोप है १० कुच्च उच्च श्रीफल यामें उपमेय धर्म उपमान वररान
 केवल बाचक लोप है ११ कपोतकीसी जीव यामें उपमान बाचक
 उपमेय वररान धर्म लोप १२ सितकुंदशीश दन्त सुसक्यानि है यामें
 धर्म उपमान बाचक वररान उपमेय लोप १३ कटाक्ष अक्षतीक्ष्णसेकि-
 ये चेष्य यामें उपमेय धर्म बाचक वररान उपमान लोप १४ बालमुखसेत
 विधु पूरगा सो यामें उपमान उपमेय बाचक धर्म चारिहू वररान लोप न-
 हीं ताते पूरगापमा है १५ बालमुख सेत विधु पूरगा सो फैली चाद-
 नी यामें उपमान उपमेय धर्म बाचक चारिहू लोप इति षोडश भेद
 १६ ता चाँदनी में प्रति की प्रीति कुमुदिनी सम प्रफुल्लित है अथ
 पुरुष कंज सम सस्युरित होत तिनको चाँदनी दंड हाता तैसे
 सुकिया पर पुरुष सो बिमुख याते सुकिया नायका है सुकीयके
 ठ पद में सुकिया को नाम है दंडकंज पद में दंडकचन्द को नाम है
 यामें पन्द्रह भेद लुप्तोपमा के एक पूरगापमा सहित षोडश भेद सु-
 किया नायका दंडकचन्द इत्यादि १६ ॥

रसनोपमा कैसे दीपक सो दीप जैसे दीपक सो दीप
 जैसे जैसे तर्क दुब्धाको दुब्धाको तर्क कैसे सानिक को
 माल जैसे मारिाक को माल कैसे जैसे काम लुब्धा को
 लुब्धाको काम कैसे सुजनन को नाम जैसे सुजनन को
 नाम कैसे जैसे बक्ष दुग्धाको दुग्धाको बक्ष कैसे चन्द्र में
 चकोर जैसे चन्द्र में चकोर कैसे जैसे पीव सुग्धाको १७ ॥

अथ सुधारसनोपमा को लक्षणा कौनी भाँति यथा दीपक सो
 दीप बारिबां तैसे उपमा को उपमेय होत जाय याते यामें रसनोपमा-

है यथा चन्द्रमा को चकोर यकटक निहारत तैसे नायका को पीव निहारत याते स्वाधीन पतिका सुगधा है १७ ॥

नदी जल विन शशि विन निशि जसरवि विन कमल बच्छरु विन दुग्धा जीवै विन तन वसुलगा विन नर रगा विन सुभटरस विर सलु बुधा सात्तरभवतिति-
मि परुषित पति विन सलज सजल दगा दुख सुगुधा मा-
लोपमहंतहं जहं बह्नु उपमहं यक उपस्यद्द वरगात वह-
धा ॥ १८ ॥

यथा जल विन नदी शशि विन रैन रवि विन कमल इध विन वच्छ जीव विन तन धन विन नर सुभट विन रगा रस विन रसलो-
भी इत्यादि मलीन हैं तथा पतिहीन नारी के उर में माल झोतत दुःख ते नेत्रन में जल भरा लाज ते बोलत नारी याते प्रोषिन पति-
का सुगधा है जहाँ बहती उपमादय एक उपमय वरान कर ता-
को मालोपमा कही तन वसुलगा एक तयन आट नगन गकल-
यु एक सुरु ॥ १९ ॥

भाल भले भय भाग जुजति निजगे भय सो न दंते सतावन आवत प्रेमपगे मन आलस में तन चितेरि नि-
चातुरि लिखे रगा जावत वक्त उद्योत तजे पलकै दग-
निहारि अघात नहीं सुधाधर टावत सुसुपसा जयसंग-
लिये विषय सा विषई सुगधा सुखंडित भावत ॥ २० ॥

रात्री को हसारी भली भाँति रही जो आसु अनत जागे अब भोर भये हमें सतावन आये हो मन प्रेम में रगा तन में आलस अरु आवत रंग अंग में है ताको चातुरि चितेरिनि ने लिखे दारे तुम्हारी सुख उद्योत ताको हमारे नेत्र पलक रहित निहायत में अघात नहीं है सुधा में अधर के दौर चिह्न रुचित कर्तव्य में ॥

सुग्धा खंडिता नायका है इहाँ सुग्धा में बचन रचना को अभाव
 है तहाँ चितेरिनि शब्द में श्लेष है चितेरिनि चातुरि सरषी लिख
 नो सिखावन है जहाँ विषय सा विषई होइ अर्थात् उपमा उप-
 मेय में लक्ष होइ ताको सुक्षोपमा कही इहाँ सुख चन्द्रमा को ल-
 क्ष्मद्ग चकोर को साक्षता को सुक्षोपमा अलंकार कही भालभ-
 ले भय भाग्य इति चारि भगन है जुजाभिनि इति दुइ जगनभ-
 य भोर दुइ भगन ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ यह सुधाधरचंद्र
 है सुधाधर ठावत पद में चन्द्र को नाम है १६ ॥

सजाव गौरवरा योइशो सद्दादशौ लंगे सुभाय यो
 बरवानि जातनाजसी सरषी प्रसोधिबोधदै चली ल-
 वायकै सुखै प्रभानिहारि चन्द्रकी नितै हसी गईतहाँ
 मिलो ननाह सून कुंज में उदास तुंड देखि कै तबै हँसै श-
 शी विरोधऊपमा कहे महीधरा सुदंडका निकेत सून
 सुग्धविप्रलब्धी ॥ २० ॥

गौरवरां तन में योइश अंगार बारहो सूवरा को सजाव सुधा
 अवस्था पाय संसा प्रोभायमान लागत जैसा बरवाना तनहीं वन-
 त रोधदै सम्भवाय प्रबोधि फुसलाय सरषी जन नाह पासको
 लै चली ता समय सुख की प्रभा निहारे चन्द्रमा की हँसी होत
 तुच्छ लागत तहाँ गई नाह नामिलो अल कुंजते उदास उपमेय
 ताको देखि चन्द्रमा हँसै लागो इहाँ उपमा उपमेय में विरोधनाते
 विरोधोपमा है सून कुंजजावे ते विप्र लब्धा सुग्धा है योइशो सद्दा-
 दशौ लंगे सोरह बागह अद्दाइस लंगे कहे लघुगुरु जमते अद्दाइस
 दरसा ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ यह लक्ष्मी भगदंडक
 चन्द्र है ॥ २० ॥

अल सखिन निधिचली शशिभय सुग्धक मली

पति सुदश्रुभिसरती नवभगत मुगाधती हउप्रियनि
 तपतिका चहत प्रथसरतिका मिलियुगलसुइक
 मा कहत लक्षणा उपमा ॥ २१ ॥

सरिबन के छल ते रति को चलती भई यथा चन्द्र देखि कम-
 ल तथा पति मय ते सुख कमल तस्फुरित भयो तिया अभिमार-
 कहे आवत ताते पति के मन में मोद है काहे ते नवीन भक्त मुग्धा
 नारी ये दोऊ पति को प्यारे हैं प्रथम रति को दोऊ चाहत रक्त
 की प्रथम प्रीति सुग्धा की रति सुरप उपमेय कमल उपमा मु-
 ग्धा उपमेय भक्त उपमा दोऊ के लक्षणा एक ते लक्षणा उपमा
 अलंकार है सुग्धागि सारिका नायका है ननिसि काहे नगन
 दुइ सगन एक ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ यह कमली छन्द है सुख कमली पद
 में छन्द को नाम है ॥ २१ ॥

सुकुमारि सकोच समै लघु जोवन जानि सचै सग
 की सुसुभावन घेरत वसुधाधरजरक्षयावत नारिदि-
 चारु सभारि सवै निज नाथ विदेरत सजिवासकमे-
 नहि माँति भली सुसुखी सस प्रौढ़न वैहि को मनं पत
 सुसुधासजि भूषणा सो उपमा तजि दूषणा वैरि सनंद
 लला भग हेरत ॥ २२ ॥

सुकुमारि सलज्ज नवीन जोवन ते समै जानि संग सखी तसु-
 भावन हेतु घेरती भई किं कृष्ठी पाताल स्वर्गादि में यावत नारी
 हैं तिनको विचारि देखु सब आपने पतिन में रत है यह कवि म-
 खिन नवोढ़ा के मनको डेरणा करि प्रौढ़ा की समान दृढ़कां-
 देती भई ताते वा ल्यान की तेज साजि दूषणा जो पति की भयता-
 को तजि भूषणा सजि आनन्द ते लला के आवन की भग हेरत
 लगी ताते बासक सज्जा सुग्धा है दूषणा को त्यागता ते भूषणा उप-
 मा है सनन्दललास कहे सगन चन्द कहे नवलला कहे दुइ लघु

॥५॥५॥५॥५॥५॥५॥५॥५॥५॥ यह वसुधाधर छन्द है सुग्धाको प्रमाणा रसमंजरी यथा हारसुंफति तारकांति रुंचिरं ग्रंथाति कांचीलतां दीपंन्यास्यति किन्तु तत्र बङ्गलं स्नेहं न धत्ते पुनः आलीना मिति वासकस्य रजनौ कामानुरूप्यां क्रियं साचिस्मेरसुखी न बोद सुसुखी दूरात्सुखी क्षते ॥ २२ ॥

सोवत अकेले भललागत वदपि मोहिं तो पि विशेषेण सुख होत नाह अंक भरन अशन पट भूषणा सुपास वास रसा को दूसरो न देखिये सदैव मान मोद करन पी नी सुप्रेम पीय नाही तो सूनि नारि ग्रीषम की सरिता उडात रेरा गुजल हरन उपमा सों दूषणा कलहं तरित सुग्धा के द्विलघु अन्त सह भायत बती सवरन ॥ २३ ॥

यद्यपि अकेले सैव में मोको भलों लागत तथापि नाहके अंक में विशेष सुख होत भोजन पट भूषणा सुपास हेतु वास स्थानादि रसा को एक पति सिवाय दूसरा नहीं देखियत हे मान देनहारो आनन्द करनहारो पीव के प्रेम ते नारि सुख रहत नाही तो कैसी नारि सूनी लागत यथा ग्रीषम में जल सूखी नदी में सुखा उडात या विधि पद्धितवे ते कलहं तरितां सुग्धा नायका है यति का न्याय सुग्धा को भूषणा है तामें दूषणा माने याते दूषणा उपमा अलंकार है वति स वरगा अन्त द्वेलघु जलहरगा छन्द है ॥ २३ ॥

न आयोपति आलिशोचै सगी कपोलालकै पानि तिया लगी भुजंगी विद्याये शरी कंजसा सुसुग्धोत्कंठा अभूतोपसा ॥ २४ ॥

यति न आये ते संग की सखी शोच करन लगी ताते नायका भी उदास है सङ्गित अलक कपोल पर हाय दे बैठी यथा कर कमल में अलक भुजंगी विद्याय सुखचन्द्र पोंडो मेसां है नहीं सकत ताते अभूतोपसा है सुग्धा उत्कंठा है तिया लगी तीनि यगन लघु सुख-

है यथा चन्द्रमा को चकोर यकटक निहारत तैसे नायका को पीव निहारत याते स्वाधीन पतिका सुग्धा है १७ ॥

नदीजल विन शशि विन निशि जस रवि विन कमल बच्छरु विन दुग्धा जीवै विन तन वसुलग विन नर रसा विन सुभट रस विर सलु बुधा साल्द रभवति ति- सि पसुधित पति विन सलज सजल ह्यगदुख सुग्धा सां- लोपमहै तहँ जहँ बहू उपमहँ यक उपम्यद्द वग्गात बहू- धा ॥ १८ ॥

यथा जल विन नदी शशि विन रैन रवि विन कमल वृध विन वच्छ जीव विन तन धन विन नर सुभट विन रसा रस विन सल्लो- भी इत्यादि मलीन हैं तथा पतिहीन नारी के उर में साल्न होतता दुःख ते नेत्रन में जल भरा लाज ते बोलत नहीं याते प्रोथित पति का सुग्धा है जहाँ बहूती उपमादय एक उपमेय वरानि करे ता- को मालोपमा कही तन वसुलग एक तगन आठ नगम एक त- पु एक गुरु ॥ १९ ॥

शाल भले भय भाग जुलामि निजगे कल भोर नरीं सतावल आवत प्रेसयगे मन आलस में तल चिते नि- नि चातुरि लिखे रगजावत वक्ता उदोत तजे पलके देहग- निहारि अघात नहीं सुधा धर टावत सुदुग्धा उपमेय- लिये विषय सा विषय सुग्धा सुखे इति शाब्द ॥ २० ॥

रात्री को हसारी भली भांगि रही जो आपु अनात जाये यत भोर भये हमें सतावत आवे तो मन प्रेम में एसा तग में आनन असु आवत रंग अंग में है ताको चातुरि चिते गिनि न निवधि सुहारी सुख उदोत ताको हसारी नेत्र पलक रजित गिनात न अघात नहीं है सुधा में अधर के दौर चिह्न सचित करत यो में ॥

मुग्धा खंडिता नायका है इहाँ सुग्धा में बचन रचना को अभाव-
है तहाँ चितेरिनि शब्द में श्लेष है चितेरिनि चातुरि सरखी लिख
नो सिखावन है जहाँ विषय सा विषई होइ अर्थात् उपमा उप-
मेय में लक्ष होइ ताको गुक्षोपमा कही इहाँ सुख चन्द्रमा को ल-
सद्ग चकोर को लसता को गुक्षोपमा अलंकार कही भालभ-
ले भय भाग्य इति चारि भगन है जुजाभिनि इति दुइ जगनभ-
य भोर दुइ भगन ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ यह सुधाधरखंड
है सुधाधर ठावत पद में चन्द की नाम है १६ ॥

सजाव गौरवरा योइशो सहादशो लगे सुभाय यो
बरवानि जातनाजसी सरखी प्रमोधि बोधदै चली ल-
घाय कै सुखै प्रभानिहारि चन्दकी नितै हसी गई तहाँ
मिलो ननाह खन कुंज में उदास तुंड देखि कै तबै हँसै श-
शी विरोध ऊपमा कहे महीधरा सुदंड का निकेत खन
सुग्ध विप्रलब्धसी ॥ २० ॥

गौरवरा तन में योइश शृंगार बारहो भूषणा को सजाव सुधा
अयस्या पाय रेसा शोभायमान लागत जैसा बखानत नही धन-
त बोधदै सखुभाय प्रमोधि कुसलाय सरखी जन नाह पासको
ली चली ता समय सुख की प्रभा निहारे चन्द्रमा की हँसी होत
तुच्छ लागत तहाँ गई नाह ना मिलो खन कुंजते उदास सुख भयो
ताको देखि चन्द्रमा तँसै लागो इहाँ उपमा उपमेय में विरोधताते-
विरोधोपमा है खन कुंजजावे ते विप्र लब्धा सुग्धा है योइशो सहा-
दशो लगे सोइह बारह अहाइस लगे कहे लघु गुरु क्रमते अहाइस
वरसा ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ यह महीधरादंडक
चन्द है ॥ २० ॥

अलसचिन्निशिचली शशिभयसुखकमली

प्रतिमुदत्रभिसरती नवभगत सुगधती दृउप्रियनि
तपतिका चहत प्रथसरतिका मिलियुगलस्रडक
सा कहत लक्षरा उपमा ॥ २१ ॥

सखिन के छल ते राति को चलती भई यथा चन्द देखि कमल
तथा पति भय ते मुख कमल तस्परित भयो तिया अभिमार-
कहे आचत ताते पति के सन में मोद हे काहे ते नवीन भक्त मुग्धा
नारी ये दोऊ पति को प्यारे हैं प्रथम रति को दोऊ चाहत भक्त
की प्रथम प्रीति सुग्धा की रति मुख उपमेय कमल उपमा सु-
ग्धा उपमेय भक्त उपमा दोऊ के लक्षरा शक ते नदारागोपाता
अलंकार है सुग्धाभिसरिका नायका है ननिनि कहें नगन
दुइ सगन सक ॥॥॥॥॥॥ यह कमली छन्द है मुख काली पद
में छन्द को नाम है ॥ २१ ॥

सुकुमारि सकोच सभै लघु जोवन जानि सवै सग
की ससुभावन घेरत वसुधाधरजरधग्रावत नारिवि-
चारुसभारि सवै निजनाथ विघेरत सजिबानकसे-
जहि भौंति भली सुसुरवी सम प्रौढ़नवंहि को मनघेरत
सुग्धासजि भूषरा सो उपमा तजि दूषरा बैटि सनन्द
ललासग हेरत ॥ २२ ॥

सुकुमारि सलज्ज नवीन जोवन ते सभै जानि संग सखी सम-
भावन हेतु घेरती भईकिं पृथ्वी पाताल स्वर्गादि में यावत नारी
हैं तिनको विचारि देखु सब आपने यतिन में रत है यह कवि स-
खिन नबोड़ा के मनको घेरणा करि प्रौढ़ा की समान दृकनि
देती भई ताते बास्थान की सेज साजि दूषरा जो पति की भयत-
को तजि भूषरा सजि आनन्दते लला के आवन की सग हेरत।
लगी ताते बासक सज्जा सुग्धा है दूषरा को त्यागता ते भूषगोप-
मा है सनन्दललास कहे सगन चन्द कहे नवलला कहे दृउ नप

॥५॥५॥५॥५॥५॥५॥५॥५॥५॥ यह वसुधाधर चन्द है सुग्धाको
 प्रमाणा रसमंजरी यथा हारसुंफति तारकांति रुंचिरं ग्रंथाति कां-
 चीलतां दीपंन्यास्यतिकिन्तु तत्र बहूलं स्नेहं न धत्ते पुनः आलोना
 मिति वासकस्य रजनौ कामानुरूपान्कियं साचिस्मेरसुखी न बोद्ध
 सुसुखी दूरात्सुखी क्षते ॥ २२ ॥

सोवत अकेले भललागत घदपि मोहिं तो पि विशेष-
 पं सुख होत नाह अंक भरन अशन पट भूषणा सुपास
 वास रक्षा को दूसरो न देखिये सदैव मान मोद करन पी
 नी सुप्रेम पीय नाही तो स्तूनि नारि ग्रीधम की सरिता उ-
 डात रेरा गुजल हरन उपमा सों दूयरा कलहं तरित सुग्धा
 के द्विलघु अन्त सह भाघत बतीस वरन ॥ २३ ॥

यद्यपि अकेले सैन में मोको भलो लागत तथापि नाहके
 अंक में विशेष सुख होत भोजन पट भूषणा सुपास हेतु वास-
 स्थानादि रक्षा को सक पति सिवाय दूसरा नहीं देखियत है मान
 देनहारो आनन्द करनहारो पीव के प्रेम ते नारि सुख रहत नाही
 तो कैसी नारि स्तूनी लागत यथा ग्रीधम में जल सूखी नदी में
 उडान या विधि पद्धितावे ते कलहं तरिता सुग्धा नायका द्वै पति
 को त्याग सुग्धा को भूषणा द्वै तामें दूयरा माने याते दूयरा उपमा
 अलंकार द्वै वतिस वरगा अन्त द्वै लघु जलहरगा चन्द है ॥ २३ ॥

न आयो पति आलिणो चै सगी कपोलालकै पानि
 तिया लगी भुजंगी विद्याये शरीकं जसा सुसुग्धोत्कं-
 ठा अभतापसा ॥ २४ ॥

पतिन आये त संग को सबी शोच करने लगी तात नायका भी
 उदाम द्वै सद्रित अलक कपोल पर हाय दे बैटी यथा कर कयल में
 अनक भुजंगी विद्याय सुखचन्द पोंदा मेसो है नहीं सकत ताते अ-
 भतापसा द्वै सुग्धा उत्कंठा द्वै तीया लगी तीनि यगन लघु सुख-

घरी में औंशुरा जानि कोय प्रिय सती त्यागि पुनः बिवाहे याते शं-
 भु शर नायक है दक्षिणा यथा उर प्रीति लज्जा काम सब सों स-
 नान राखि सहृद नारिन सों रमे याते कथा दक्षिणा नायक है
 अचुकूल यथा सत्य शौच तप दान सदा निबाहे धिरता धीरज
 प्रीति दया इन्द्रिन को रोकादि उर में है कोमल सुकती द्विद मन
 रिदु नाराक अवतारन में अंसु है ऐसा राहित अंगन वेद गावत
 है गेते श्रीजानकी करै एक अचुकूल नायक है इनकी समान
 येई हैं आननहीं है यह उपमेई उपमान है ताते अनन्वय अलंकार
 है सगवेदपुरांतवतारक चारि सगनता अन्त एकग्रह ॥१॥१॥१॥१॥
 तारक छन्द है ॥ २६ ॥

पति प्रिया प्रिय नाह प्रिया भरी प्रणाय आनसना
 यन सुन्दरी नभ भरा उपमे उपमान की जनक जा सम
 राम सो जानकी ॥ २७ ॥

पति के उर में प्रिया की प्यास प्रिया के उर में पति की प्या-
 स ऐसी परस्पर प्रीति नाथ सहित और सुन्दरी नारी नहीं है देव
 लोक देव देविन सों भरा परल्लु या उपमेय की उपमा योग्यको
 आननहीं है श्रीजानकी मम श्रीराम श्रीराम सो श्री जानकी प्राते उप-
 मानोपमे या लंकार है नभ भरा नगन है संगन रगन ॥१॥१॥१॥१॥
 यह सुन्दरी छन्द है अचुकूल नायक स्वकिया नायका ॥ २७ ॥

नौगति सो गजराज बखानत तूरति जोगन जो ब-
 न मानत लाजत ॥ २८ ॥ वानन बीक्षन मन्दमनोज सरी-
 क्षरा ताक्षन मोदक कोक बिचारिके भागन चम्पक
 सुगध लता दुरिवागन तोसी यथान दया उपमारत ना-
 ह कहें परती यन आरत ॥ २८ ॥

तरीनबीनी गति समान में गजगति बखानत हों यामें उलटी

उपमा याते प्रथम प्रतीपालंकार है नौ गति कहिबे ते नौ बधू सु-
 ग्धा है प्रति दिन दूनी इति दरशावै नवल बधू सुग्धा कवि गावै
 तूरति की योग्य नहीं यामें उपमेय को निरादर उपमा ते याते
 दूसरी प्रतीपतु आयनो जोवन रति करिबे के योग्य नहीं मान्नी
 भाव बाल अवस्था निसरि गई जोवन प्रवेश भयो याते नवबो-
 चन भूषित सुग्धा है जोवन प्रविशिकादि भिंभुपन सो सुग्धा नव
 भूषित जीवन सो तुम्हारे सुख देखे चन्द्रमा लजात है इहाँ उपमे-
 य ते उपमा को निरादर याते तीसरी प्रतीप है तौ सुख में बिकह
 दोज इक्षरा लजात है याते लज्जा प्रिय सुग्धा है लाज भरी रति
 पिय सुखदाई लज्जा प्रिय रति सुग्धा गाई काम के बान मन्द है
 तुम्हारे नेत्र तीक्ष्ण है इहाँ समिता लायक उपमान ही है याते
 चतुर्थ प्रतीप है नेत्रन की चंचलता ते नवल अनंगा सुग्धा है
 नवल अनंगा सुग्धा नारी बोलि खेलि हँसि छल रति दारी तेरे
 कुचन को देखि अपना को लघु बिचारि मोदक अरु चकवाक
 भागि गये चम्पा की नवीन लता बागन में लुकी इनको ब्या
 उपमा कोज देइ तोसी यथा रय नहीं है इहाँ उपमा ब्याते पंच-
 म प्रतीपालंकार है तेरो नाह परतिया सो आगत नहीं ताते मंग्रह
 करु सुगलता सुग्धा को नाम प्रतीपालंकार को नाम मोदक
 को कविचारिक भागन चारि भगन ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ यह मोदक
 छन्द है ॥ २८ ॥

कहूँ हीन मंदि उचो चंचलारूप मयो काह शोचे
 लता हेम तद्रूप नवारी भई न्यून है फूल मंडेन जु अजा-
 त कंदाय वेदांत दंडेन ॥ २९ ॥

कंदाय वेदांत दंडेन यगन चारि अन्त दराड कहे मकनपु
 ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ यह कन्दा छन्द है अरु कह हीन अर्थात् कटि-
 कहूँ मंदि अर्थात् गति कहूँ ऊँचो अर्थात् कुच कहूँ चंचलता ।

अर्यात् नेत्र इत्यादि मेरे रूप में यह काह इरा॥ भई ऐसा शोचकरती
जोवन नहीं जानती याते अज्ञानसुग्धा है नारीरूप हेमलतापरंतु
फुलवागी में नहीं भई अरु फुल सहित नहीं है याते न्यून तद्रूपरू-
पक अलंकार है ॥ २८ ॥

बिलोकि पयोधर सुक्त कदाम बिलोकि रहै भुकि
मन्दजगाम तद्रूपरती यह राजत बाम सुजात गिरी
लारिकाइ कि ठाम ॥ ३० ॥

सुक्तमाल देखिवे वहाने भुकि बरोजन को निहारि रहत ।
अरु मन्द मन्द चलत यह जोवन जाने ते जात जोवना सुग्धा है
लारिकाइ कहौ गिरी गई यह जानत ताते रति तद्रूप यह बामरा-
जत याते सम तद्रूप रूपक अलंकार है चारि पयोधर चारिकला
मध्य सुक्त पयोधर कही ॥ ३० ॥ यह सुक्त कदाम मन्द है ३०

रतितदन रूप तिया रति उच्च सदा नवलोकपती
बदसीदति नावकदा भ्रमरावलिकंज करौ सरसेज
तदा विसरोधन बोदन को गत सीतजदा ॥ ३१ ॥

रति के तद्वत् रूप परन्तु तिया की रति उच्च है लघु वैम ते पति
के अंक में नवला दुःस्वित है यह कहत की अबकवौन ऐहौ इहौ
सेज तड़ाग पति कर कमल रति निशा में नारी भ्रमर सम बन्द भयेदुः-
ख पुनः दृष्ट भूलि गई यथा सीतकाल गये बोदन भूलि जात तथा
रति दुःख पीछे कहु चाह याते विषधनबोदा है तियरति उच्चता-
ते अधिक तद्रूप रूपक अलंकार है सरसे पांच सगन ॥ ३१ ॥ यह
यह भ्रमरावली मन्द है ॥ ३१ ॥

भास्ववपादौ नृपुट दुन्माचम्यन् मालावाल बधु-
त्वा रूपात् सज्जा भेद भौलागी देखन पाना बोदन
न्यागी ॥ ३२ ॥

भूषणाकरि कानन में शोभा बोज पावन में नूपुर बधुन में बाला चम्पा की माला है ताने देख्यो सज्जा को रूप भेद मोलागी संकेत में ताकी भयमानि अन्न खावो पानी पीवो बोड़नादि न्यागे याते नबोड़ा नायका है चम्पकमाला बाल याते सम अभेद रूपक भाभगन सब करन द्वियरुपादौ नूपुर दुम्पापाद् चौकल आदि युरुनूपुर दुइयुरु यथा ॥ ३३ ॥ ३३ यह चम्पकमाला चन्द्र है ३३

फूलति भाकरनाधरबन्धु सुगधलतासुमनान सुगन्ध रूपकजननुबेधनठाने भाघ भेद पियकार हेराने ॥ ३३ ॥

पीवभास्कर देखि बन्धु अधर प्रफुलित नहीं भाव सुस्ख्यात नहीं नबीनि लतासुगंधा है परल्लुसुमन सुगंध नहीं अमन्न मन बोलत नहीं याते मानिनी सुगंधा जानि पीव उदास रूप करि भूमि में डूडनलगा ताको देखि तिया कहत है पीव काहेरानो बन्धु अधर झूले नहीं याते न्यून अभेद रूपक तिभाकरना तीनि भगन तापे करन कहे द्वियुरु ॥ ३३ ॥ ३३ यह बंधु चन्द्र है ॥ ३३ ॥

इति सुगंधा अथ मध्या रहो धीरा धीगनदिनहम नासिंसक यथा यमैनासो भाघै लघुनगुरु मध्यानिशिकया लजारूवालाभेदधिक सुनित्रीडाभेनसारहीयेनीनेनी शिखरतीचे करि सुमनसा ॥ ३४ ॥

इति सुगंधा अथ मध्या यथा छोटे बड़ेन के आंग नायका को देखि मैना रात्रि के चरित्र भावने लगे यथा रहो रहो धीरा धीरा। हम नाहीं तिसनादि ताको सुनि सुन्दर मनवाली नगनेनी लजारू है बाल शीरा मुक्काइ लियो याते अधिक लज्जा मध्या है लजारू सुये लजात यह सुने लजानी याते अधिक अभेद रूपक बलंकार है यमैना सो भाघै लघुनगुरु यगत्र भगन नान भान भगन लघुगुरु यथा ॥ ३३ ॥ ३३ यह शिखरती चन्द्र है ३४

द्वयाद्यालाजचलान भरे सनमथ चंकुश मध्य धरे
 समरसदीपरिनास विसा रतिगज ही सुमुखी रतिसाश
 द्यारूपी पावन में लाजरुपी जंजीर भरे उर मध्य मन रूपी म-
 हा उत्तमनमय रूपी चंकुश लिहिये रोज रस सम है परिणाम।
 अन्त में पतिनेह तिसरो जाने गति गज सो सुमुखी रति करत उहाँ
 गज उपमान तेरति किया करिखो ताते परिणामालंकार है म-
 ध्यारति है रसही लघु वैचि सातीनि तगन ॥१५॥१५॥ यह सु-
 मुखी चन्द है ॥ १५ ॥

ताते जु करीं अलुखै राधा माते सुभागी लघुने
 चमाया नाथैरती गौर समान लज्जा सापत्नि सीलेख
 ति उंडू बज्रा ॥ १६ ॥

पिता को शुभ करणी है लघु भाइन को राधा है माता जान-
 त सुन्दर भाग्य है लघुजन जानत समा है पति जानत की रति
 है गुरुजन जानत लाज है सपत्नी जानत इन्द्र बज्र है बड़त ब-
 डतीतना सजुभात ताते प्रथम उल्लेखालंकार है लज्जा मदन
 समान मध्या है ताते जु करीं तगन है जगन एक करसा है गुरु
 १५॥१५॥१५॥ यह इन्द्र बज्रा चन्द है ॥ १६ ॥

गुराी गिरा में रति रूप माला विलास मध्यापति
 को कसां लालजात जा करीं सनोज धन्या उपेन्द्र ब-
 जो लखते सपत्न्या ॥ १७ ॥

गिरा ममगुराी रति सम रूप की माला विलास में पति।
 को कांक की माला सम सापत्नि को उपेन्द्र बज्र सम एकको
 बड़ भौति बरसान ताते दूसरी उल्लेखालंकार लज्जा तजेसनोज
 करने में अन्य याते सनोज अधिक मध्या है जात जा करीं जगन
 तगन जगन करसा १५॥१५॥१५॥ यह उपेन्द्र बज्र चन्द है ॥ १७ ॥

कमलश्रमल नैनी चंपकी वैस्य मध्या नवलतन
 जुवाद्या भै न ब्रीडा समंध्या नगनगमयया केन्दोति
 जागे सुलाला सुभिरसा करिकाको मालिनी सक
 बाला ॥ ३८ ॥

फूलन को देखि सुधि श्राई कमल सम श्रमल नेत्र चस्पामे
 वरणा मध्य वैस नवलतन जुवा श्रवस्था बिराजमान भैम लला
 की सुधि भूयगा के नगनग प्रतिलालन की ज्योति जागत यह
 सुनि प्रह्वती हे हरि काको सुभिरसा करत हो हे मालिनि एक
 बाला की श्राहूइ योवनमध्या सुभिरसा अलंकार नगनग
 मयया हे नगन गगन हे यगन ॥ ३८ ॥ यह मालि-
 नी चन्द्र है ॥ ३८ ॥

मनहंस सी कर मौक्तकी सज जो रतै सुखचन्द्र
 कंजचकोर भंग भ्रमं फिरै भ्रमि श्राबुले दृगलाज
 की उरभौनमे मनुजात प्रादुर भूत मध्यहि सैनमे ३९

सम सी करनको हंस मन में मुक्ता जानत चकोर सुखको
 चन्द्र मानत प्रमर कमल मानि भ्रमे फिरत याते भ्रमालंकार
 मनोज बश मनसेजे में लागलाज की उरभानि ते नेत्र श्राकुलता
 ते मनुजात प्रादुर भूत मध्या है सज जो भै सगन है जगन भा-
 नरगन ॥ ३९ ॥ यह मनहंस चन्द्र है ॥ ३९ ॥

फटी कंचुकी की शिवे कामल्टी नखांकेलसे
 की कला इन्दु बुटी दुटे हार राजै किधौ तार पांती लजे
 नैन घूसे किधौ मन माती दुटे वार भीने सुरें चंद्र चीनी
 भुजंग प्रियाताय चौबोरलीन्हो कंगालि मन्त्र पांगो
 भीनी रतीदान वैचित्र मध्या नवीनी ॥ ४० ॥

कंठकी फटी किधौं कामने शिव को लटि लई जख सत है किच-
 न्द्र की कला चूटि परी इदेहार है कि न सचन की पाति है लान
 वरा तेनै न घूमत की मै न आती है सुगन्ध भीने वार चूटे सुख
 पै की चन्मा जानि भुजंगन की प्रिया चारुहृत्पौर ते तापली-
 ली आली सन्देह ना करौ याते सन्देहालंकार है रति दानलै भी
 के रंग में भीनी ताते रति विचित्रा मध्या नायका है यबौ चारि।
 यगन ॥५१॥५१॥५१॥५१॥ यह भुजंगप्रयात छन्द है ॥ ४१ ॥

सुझायनौ तीन पारखंड वै चित्र प्रागल्भवे नान सा-
 रंग चारित्र मध्यांग फूलै न ॥ ५१ ॥ (५१) ॥ सापत्ति
 पेरिय है तापनौ ज्वाल ॥ ४१ ॥

सुझायन नहीं है यह विचित्र पारखंड है चातुरे बचन नहीं है
 यं रति के चरित्र आइत प्रकट होते है तन में मिंदूर कजल के
 चिन्ह देखि कहत की मध्य अंग में चरु बेकाल पलाण नहीं फू-
 लत ऐसो तिनके पढाये तापन के ज्वाला है इत्यादि उरहन दे
 ने ते प्रागल्भवचना मध्या है सुझायन को धर्म दुराय पारखंड
 में आरोप चातुरे बचन धर्म दुराय रति के चरित्र में आरोपताते
 सुझायत्तति अलंकार है बेकाल पलाण नहीं फूलत ये ताप के
 ज्वाला है इत्यादि युक्ति सों चिन्ह वस्तु को दुरायो याते है ताप-
 न्द्रति अलंकार है चारित्र चारि तगन की ५१॥५१॥५१॥५१॥ यह
 मारंग छन्द है ॥ ४२ ॥

धीर उर मध्य नम भागनहि भालतो भागजस-
 नारि जलाल निशि पासुतो प्रीति परजासु अपनी-
 तिनित वात मे वागनि वसंत नवसंत तव गात में ४२

इमार भान में भाग्य नहीं है याते इबारे उर में धीरज नहीं
 है भाग्य यरा बाही नारिको है जहाँ लाल रति बसे जाकी प्राति

परहरि बात में अनीति नित करत हो इत्यादि रिस अनारते अधी-
रा नायका मध्या है बाग में बसन्त नहीं तुम्हारे गात में बसन्त है
बाग को गुरा तन में आरोपते पर्यस्तापन्दुति अलंकार है भाग्य
यश नारि भगन जगन सगन नगन रगन ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ यह
निशिपाल चन्द है ॥ ४२ ॥

मधिधीरधारु प्रफुलाकुमुदै मनकोकत्रासदृग
कंजमुदै मुखच्छेकपानडतिनापियसी प्रमिताक्षरा
कयुतसाजशशी ॥ ४३ ॥

हे मन धीरज धरु कुमुद को प्रफुलित करनेवाला भाव दु-
ख को मंरूपी कोक को त्रासदाता रगरूपी कमल को समु-
दित करता पानते मुख च्चेका पिया नहीं है अमित अंकनसहि-
त साज चन्द्रमा है इत्यादि बात परारे सो दुरायो याते च्चेका प-
न्दुति अलंकार व्यंग कोप जनाववेते धीरा मध्या नायका है ।
साज शशी सगन जगन है सगन ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ यह प्रमिताक्षरा
चन्द है ॥ ४३ ॥

छवि आजुलालनमंजुता सजजोहरा गुगा सं-
जुता मुखपीकपीमिससौतिया केतापनोतिय
सोहिया ॥ ४४ ॥

हे लाल आज छवि मंजुल कहे सुन्दरि है अगुगा कहे बिना
गुगा सहित हार सजत है पीके मुख पे पीक के बहाने सौती
मेरे उर में ताप करती है विलंबाय को यजना वते धीरा धीरा
नायका है पीक बहाने ताप बर्गानते के तवापन्दुति अलंकार
है सजजोहरा सगन है जगन हरा एकगुरु ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ संजुता-
चन्द है ॥ ४४ ॥

मधिधीरधीरगाहेंतना असुवासुकोकचुसोकन

स्वहि भ्रांत तात्पर्यहो गेया गृहिकौन वेगुरा मोतिया
 मन में धीर तन में धीर नहीं ताते नेत्र भरि आये सबी पूंजी आ-
 सु क्यों कहत कृच्छ्र शोक नहीं मेरे यह भ्रांतापन है कि बिना गुरा
 का भान्ना काने सुहारो य कोय जनाववेते मध्या धीरा धीरा है दुः-
 ख का भ्रम मिटाय सरती सों बिन गुरा भाल को कहे याते भ्रान्ता
 यन्त्रति अलंकार नायका अरु चन्द्र पूर्व ही की है ॥४४॥

कलसिंगार पर भूयरा उत्तम हरि पद तहकरा
 सो हो छाड़ि रसो रुचि जैसी ॥ ४५ ॥ कलसिंगार परा
 विषे असिद्ध वात कहि इत उत प्रक्षालत सुख पीको ।
 मनहं कमल निशि प्रफुल सफल हित धोय कलंक श-
 रों को विषय सिद्धि अनुकूल सफल पति पोक्षत पी-
 क सुहायो लखि परतिय अनुराग प्रगट जनु चाहत
 बाल मिटायो धोय असिद्ध विषय अंजन जोलागिक
 छुकर आयो शशिसकलंक कुसंग हेतु जनु कमल का-
 लिमापायो पोछि मनंद वदन बिहसत तिय सिद्धि वि-
 षय यहि असे असल चंद लखि हेतु चन्द्रिका विपुल
 कला जनु भासे छवि तिय गौर श्याम सुन्दर पिय मिल
 तद्वरधि इमि राजे सदन व्योम बिच उक्त वस्तु सोइ जनु
 धनतडित विगजे नैट जाइ सदन ऊपर इउ वस्तु अनुक्ति
 द्विसोइ मानइ सुभग ॥ ४५ ॥ गिारे ऊपर युग शशि प्र-
 कट उयो है ॥ ४५ ॥

सिंगार पर भूयरा सोरइ बारह अहाइस मात्रा २८ अन्तकर
 गा अन्त में है यह यह हरि पद चन्द है सुन्दर गंगार तापे उत्तम भू-
 बरा भारे हे हरि अस्तु के याद हृदय में भार ऐसी इमे छाड़ि अन्ते

रमत तौरमौ जैसी आयुकी रुचिहांड परन्तु सचिन्ह आयुको र-
 खि लाजन मरियत है यह विषय अमिह है यह बात कश्चिंसी
 पति को सुख धोवन लगी तहाँ कर कमल सचिन्ह मुखचन्द्र धो-
 इबो संभाव्य मान पदकी उत्प्रेक्षा मानो कमल रायी फूल बगफन
 ता हेतु चन्द्र को कलंक धोबत है ऐसी है नहीं सकत ताते अमिह
 विषया फलोत्प्रेक्षा लंकार है पति की अनुकूलता विषय सिद्धि
 सफल होवे हेतु पीक पोबत मानो परतिया को अनुयाग प्रकट
 पकरि पायो ताको बाल सिटाय देन चाहत है यह बात है सकत
 ताते सिद्ध विषया फलोत्प्रेक्षा लंकार है अंजन धोवत में कन्दुकर
 में लागि आयो मानो कलंकित चन्द्रमा के कुसंग हेतु ते कमलो
 में स्याही लगी ऐसी है नहीं सकत ताते अमिह विषया हेतु उत्प्रे-
 क्षा पोबि मुख निरमल देखि आनन्द सों तिया हसत मानो मुख-
 चन्द्र निरमल देखि हसनिचंदिका अनेक कला सों प्रकाश करत
 यह है सकत ताते सिद्धि विषया हेतु उत्प्रेक्षा है तिय की चन्दि
 गौर पिय की सुन्दरता श्याम रोज हरयि मिलत मानइ सदनरूपी
 व्योम के बीच में मेघ रामिनि बिराजत यह है सकत ताते उक्त-
 वस्तु उत्प्रेक्षा सुन्दर धाम के जपर रोज जाइ बैठ ताकी उत्प्रेक्षा मं-
 दिर मानो धवलगिरि है ताके जपर रोज जनके मुख मानो है च-
 न्द्रमा प्रकट ज्ये है ऐसी होना अयोग्य ताते अनुक्ति वस्तु उत्प्रेक्षा-
 उत्तमा मध्या नायका ॥ ४५ ॥

ती सुनेन पिय के मुख बरारि स्वागतार्थ सर-
 लौनभ करारि मान मध्य नहिं धोलत तासों है नग-
 म्य उत प्रक्षत जासों ॥ ४६ ॥

पति के मुख के बरारि तिया नहीं सुनती बचन कान में
 कैसे हया जात यथा आकाश में बान हया जात बूझी सखी
 कहत कि नायका मान मध्य में है तासों धोलत नहीं उत जासों

प्रकृत हो नाको गम्य नहीं वह नहीं जानत इहाँ वचन कान की
उभेक्षा आकाशवान की है जानौ मानौ वाचक नहीं ताते ग-
म्यां त्वेक्षा लंकार मध्या मधिमा नायका है रनभकराँ रानन-
गन भगन करसा ऽऽऽ॥१॥१॥१॥ यह स्वागता छन्द ॥ ४६ ॥

लघुगुराष्ट्र जामही जरै सबै सुधामही अतीश-
योक्ति रूपिका धमानगस्वरूपिका ॥ ४७ ॥

छांटे बड़े आठहू याम धाम में जरते हैं ताते अधमानायका
सरपिनी है केवल उपमान ते अतिशयोक्ति रूपक अलंकार
है लघु गुराष्ट्र लघुगुरु क्रम ते आठ जामें होइ ऽऽऽऽऽ यहना
स्वरूपिका छन्द है ॥ ४७ ॥

नसयनहियेस्त्रिभौं दृगरसगविचधौं बलय
सञ्जला अंगुली चपलयतबाहुभूली ॥ ४८ ॥

राति सैन में गई भरता को नहीं देखी सूनी सेज ते प्रोषित
पतिका अधरन को रस नेत्रन में गयो बोट सूस्त्रि गयो नेत्र
आँसु भरि आयां अरु अंगुरी को चलाबलय मम है बाहु मूल-
में त्रिबिले लगी कारसा प्रसंग कार्य्य भयो याते चपलातिशयो-
क्ति अलंकार है नसयनगन सगन यगन ॥१॥१॥१॥ यह बिम्ब-
चन्द है ॥ ४८ ॥

तृतातगजेन्द्रबंशोपजीहितै अत्यंत स्वाधीन
कीनेपनीहितै सज्जादिहीमध्यतृचाहती जवै रा-
सैपतीसाजिके आगही तबै ॥ ४९ ॥

तेरो पिता राजन में इन्द्र है ताबंरा में तू उपजी है अरु पति
को अत्यन्त आपने आधीन कि है यात स्वाधीन पति कामध्या
मज्जा आदि पावत कर्तव्यता तेरे मन में आवतही पनि प्रयोगी

साजि राखत पूर्वा परक्रम नहीं याते अत्यांतिस्योक्ति अलं-
कार है त्वतातरा तगन नीनि रगन ॥१॥११॥११॥११॥ यह इन्द्र-
वंशा छन्द है ॥ ४६ ॥

रैनसोहलमुखशशी भेदकांतिस्वयनयशी हो-
तकंठवचनभिने औरसीगतिपतिविने ॥ ५० ॥

प्रथम रात्री में चन्द्रमा सम मुख सोहत रहे अब भेद देखात-
जैवी पूर्व रहे सो अब नहीं है कंठ में वचन और भाँति निमरतना
वननीं चायो ता बिना देह की गति और भाँति है गर्भ नाष्ट की
राह इखत राति बीति गर्भ ताते उत्कराठा नायका और भाँति म-
नि वरगान ताते भेद कांतिस्योक्ति अलंकार रैन सो रगन तग-
न सगन ॥१॥११११॥११॥ यह इन्द्रमुख छन्द है ॥ ५० ॥

बास सेजै सवंधै तिया रातिनी की महालक्ष्मि-
या धामगंधेजगौ जांतियो लोकछाई प्रभाहोतियो
॥ ५१ ॥

बास में सेज को प्रबन्ध तिया करत याते वारुक्त सखा ना-
यका राति महालीकी ता चागे लक्ष्मी नहीं नीकी इगौ लक्ष्मी
योग्य का राति में अयोग्यता देनेते अमंबंधातिरयोक्ति अलं-
कार धाम मध्ये दीपादिकी ज्योतिज्गात् ताकी समी प्रभा जांतियो
लोक में छाई है यह अयोग्य को योग्यता देवे ताते सम्बंधाति
स्योक्ति रातिनी की रगन नीनि की ॥१॥११॥११॥ यह महा लक्ष्मी
छन्द है ॥ ५१ ॥

वापल...तिरैन का सो निहार जोस्त
गमैन का वान अलकुंज चा सायंही शोकमध्य
जात नाद सा कही ॥ ५२ ॥

विनायीव मिले हेज अकल एहे उदाह भई ताको निहारत हीमैनेको
 धाराजोर सों लागी ताको अलकुंज का आइबो साथही भयो।
 ता शोक में ऐसी दशा भई जो कही नहीं जान कारणा कारण संगही
 भयी नाते आकमातिशयोक्ति अलंकार कुंज गई पति ना मिलो
 उदास ताते विप्र लब्धा सध्यानायका स्मोर लाग रामन जनराम
 लण एह ॥ ५१ ॥ यह मनका छन्द है ॥ ५२ ॥

सायन्न वारुप कारी प्रभात में बिजाति तो रैचवा
 सस्यलीरमं सफलजो खंडित है बसन्त में अनेवारं
 शेल फुले लुकांत में ॥ ५३ ॥

प्रभात में 'पिय' का नवासारुप ताकी कान्ति ऐसी देखात-
 की रैन तं बिजाति निया की नाम अस्यली में रमे सहित मूला-
 न्तरांत दो कहिये सो खंडित है हमारे कन्त में अनेक रंग करिने
 गुल फुले है प्रभात आयो पति नाते खंडिता नायका बसंतको
 सुशाभति में दह्रायो ताते सायन्नवातिसंयोक्ति अलंकारजाति
 लीरजगन बिनरगन ॥ ५३ ॥ यह चंशस्थ छन्द है ॥ ५३ ॥

मनकासदापति है सुखदा तिस सर्वरिता ति-
 लकल्पलता असबंधति से क्रियवादिरी से लीरकेय
 चिता कालहंतरिता ॥ ५४ ॥

मनकासना को सदा सुखदातापति है ताकी समिता में
 कल्पलता तिल मन है तासों हों बिहार काि वादिही निमकरी
 अर्थात् सकांचते इत्यादि कलह करि पद्धितात ताते कलहंत-
 रिता मध्या नायका कल्प लता योंग्य का अयोग्य ताते असंब-
 धातिरायोजि अलंकार सह है संगत ॥ ५ ॥ यह तिलकाछंद है

प्रसाशसेतवालचक्र भा शशी क तुल्यता मनो

जवोजचैमनैलजातजातस्वल्पता विभूयरा सपुं-
जमंजुलैनिचोलधारिका हृदेमुदी प्रकाश कोमुदी
निशा भिसारिका ॥ १ ॥

तीनि अभिसारिका नायका तीनि भेद तुल्य योग्यता लंका-
र नाराच छंद में कहत यया बालक सुरष की प्रकाश चन्द्रमाकी
प्रकारा श्रेज की प्रकाशता धर्म सकही ताते प्रथम तुल्य योग्य-
ता लंकार मनोज को बूत मन में समूह लजा घंरी याते उजिया-
री गति में ज्ञान विभूयरा समूह बसन श्वेतग्री धारणा किं ब्रह्म
में आनन्द प्रकाश उजियारी गति में ज्ञान ताते चन्द्राभिसारिका
मध्या नायका है ॥ १ ॥

सुभैनकातिलोत्तमा उमा गिरालजोधिता प्रार्चा
रलीरसा भतिं दुती सतुल्य योग्यता निचोल भूयिनी-
लनीलमालजालधारिका पती निलै चली भली अस्तानि
शाभिसारिका ॥ २ ॥

सैनका तिलोत्तमा पार्वती सरस्वती लज्जाधिताक्षी उजु-
शी रति रसा इंदुमती आदि सगुल्य सुन्दरता जाकी उन्वारिन-
इतन के गुरान की समिता देवेने दूसरी तुल्य योग्यता लंकार ब-
सन भूषणा समूह मालन के जाल नील नील धारणा करि गति
के मन्दि को चली लज्जा अधिक त असावस की रात्री में ताते
क्षणाभिसारिका मध्या नायका है ॥ २ ॥

चली सुतुल्य योग तोय भैनलाज को दिये लंगो
नराच सो शिंगार सोति नाह के हिये पटांजरी जरे जुमा-
ल भूषणादि धारिका गली निलै मिले पती प्रभादि
वा भिसारिका ३ ॥ ५५ ॥

त्रेन साज रोज को बराबर सन्तोषदिने पति को मिलये हेतु मं-
 रिर की गली में बली जात ताके तन का शृंगार सौति नाह रोज
 के उर में नराच कहे बारासम सारात सौति के ईर्ष्या भाव तेपति
 के नेह भावते इहाँ एक शृंगार शब्दहित चरित को बोध ताते
 तीसरी तुल्य योग्यता जरी के पटजराज भूषणा मालादि धारणा
 करि रुपहर के घाम में जात ताते दिवाभिसारिका मध्या नायक
 हे लगे नराच सो तिगार लघु शुकमते सोरह ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥
 यह नराच छन्द है ३।५५ ॥

**नेह वाम दीपकोहि मानवान छूट सोहि मल्लिका
 सरोज दोइ फूलि मध्य भीर सोइ ॥ ५६ ॥**

वाम चक्र दीपक नेह भरे शोभा हेत मान चक्रवान छूटे शो-
 भांदत चमेली चक्र कमल फूले देखि भ्रमर बास लेत सोयकहे
 तैसेही तू पति चक्रकूल हो याते मानिनी मध्या है है को धर्म
 क ताते रीमका संकार सरोज दोय यटकल में सातो भेदताको
 दून ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ यह मल्लिका छन्द है ५ ५६ ॥

**राजमाल रीपपादावृती ममानिका नेत्रवाम फ-
 र्कनोर्चाम फर्कियानिका आनदापरासरवी वाममोद
 स्वार्थका मंगलाक्ष सूचना दीपका वृत्तार्थका दीपका
 वृती परार्थाः प्रागभाषतां हर्यती महेलिके हर्यिना-
 म लाजती ॥ ५७ ॥**

रीपन की माला शबन तिनते दुर्भा साहति नाही सुम मगिा-
 म की होत नाही समय नेत्र कर वाम फरकि उडे वाम करकव है
 बार इति परा इति रीपका संकार मंगल लक्ष सूचन देखिवाकहे
 मोर भयो पति चावन स्वार्थ मानि ताते अपर सूस्विन के चानंद
 भयो चानन मोर बकही ताते चर्चाहत रीपका संकार पति चामल

जानि सहेली हर्षत प्रकट हरष बं में बाम लाजत ताते आगमप-
 तिका मध्या नायका हरष द्वै वार ताते पदार्थाव्रत दीपक गम
 माल रगन जगन माल एक गुरु ॥११॥११॥ इति रोहरो पर पै तुकां-
 त समानिका छन्द है ॥ ५७ ॥

भौरलसतजसपंकजबागहि नारिलसततसपी
 गरलागहि भागन द्विज शुभभोनित भागत प्रत्य-
 वसलुउपमापति आगत ॥ ५८ ॥

जस कमल बन में भौर शोभत तैमे पतिके गरे लागे नारि
 शोभत उपमा उपमेय को धर्म वाक्य एकल सब ताते प्रतिव-
 स्तूपमा लंकार जो नित मागत रही सो द्विजन की भाग्यने शु-
 भ भयो ताते आगत पतिका भागन द्विज शुभभो भगन द्विज
 सुचारि लघु द्वै भगन ॥११११॥११॥ यह पंकजगरिका बंदरे भ

ज्यो बहू भौति न माल गुहै चातुरतातिमिबिन
 पुहै पीक्षनता दृशदांत पला सारवती गुणा गर्व
 बला ॥ ५९ ॥

ज्यों बहूत तरह सो माला गुहै त्यों चातुरी के बिन पोहती पी-
 रूपी नेत्र को नारी की दृशान्त पलाकी है भाव आठ पर रक्त
 ताते गुणा गर्विता बिन प्रतिबिम्ब ताते दृशान्त बलंकार भौति-
 न माल भगन तीनि माल एक गुरु ॥११११॥११॥ यह सारवती-
 छन्द है ॥ ५९ ॥

हंसपैजसोपिमोपरोजरोजरासना लंचकोर
 चालनैनआनतीनिदर्शना आनुकूलतासिखैत
 मोलफेकिचर्बिता चामरजुदारिपीदिदावप्रेम
 गर्विता ॥ ६० ॥

यथा हंसधै पान करत तथा हंस सम प्रति सोकोपैसममानिरो-
जभंज गमना करे आनन्द कर चाहत इहाँ उपमा वाक्य हंस उप-
मेय शब्द यौव होऊ वाक्यार्थ एक ताते प्रथम निर्दर्शना अलं-
कार चकोर की चाल नेत्रन मेंलें आनतियन को नहीं देखत सेरे
सुरब चन्द्रही को निहारत उपमान चकोर को धर्म उपमेय नेत्र में
आरोप ताते दूसरी निर्दर्शनात मोल को शेष मेंर-सुरबते आयने
करमेंलें फेकि अपरपतिन को अनुकूलता उद्देशात अरु मेरेऊ-
पर चामर दारत तासों प्रेम गर्व मेंर हड़ करत इत्यादि क्रियादेखा
य आनका उद्देशात ताते तीसरी निर्दर्शना प्रेम गर्विता नायका
रोजरोजरा ॥ ११ ॥ यत्त चामरचन्द्रने ॥ ६० ॥

कल अंगार शिरपादकुलेका रूपवन्त्य अतिग-
र्वीतरेका कंज सोक्षवर सरस कटाक्ष भाष्यससब
स्वहि लागन अल्हा ॥ ६१ ॥

कोऊ मेंर अंगार की प्रशंसा करत कोऊ शीश कोऊ यौव
कोऊ कुलिअंग कोऊ रूपवन्ती कहत कोऊ अति गर्विता कहत
कोऊ नेत्रन का कमल सम कहि कटाक्ष अधिक कहत ऐसा
तत्र कहत मोको अच्चा नहीं लागत याते रूप गर्विता नायका
कमल उपमान तनेत्र उपमेय में कटाक्ष गुणा अधिक ताते अति-
रेकालंकार कल अंगार सोलह कला की पादकुलकन्दहे ६१

कराँकरद्वैकराँकरिकै जानो सुनिकै शोचै
भरिँकै होंमाथ गये भीजे दुखमा पी प्रावसहोकी
की सुरबमा ॥ ६२ ॥

पति को जान सुनि शोच भी करुणा के बराहाचपै कान
धीर गीर्ग गर्व पति को परेश जावो तिय की शोभा जावो साथ-
ही ३:३ में भीजे गये ताते शोचतपतिका नायका सहोक्तिअलं

कार करार्णकर रै करार्ण करके कर्ण द्वि गुरु कर चारि कलशुरांत
 पुनः करार्ण कर ११ ॥ ११११ ॥ ११ यह सुरवमा चन्द है ॥ ६२ ॥

तकै नइ कबाला कोरे कज सभाला चहे पति सुनेष्ट
 विनोक्ति पि कनेष्टा अंगार रस भीनी मयापि विनही
 नी।वेनेक ३३ ॥ ३३ कुमारिललितार्इ ॥ ६३ ॥

एक की ओरतकत महीं यद्यपि अंगार सो भरीये पतिम-
 याकी उक्ति एक विमाहीनी याते प्रथम विनोक्तिपरि एक र्इया
 नहीं है ताते कुमारि की बड़ाई याते दूसरी विनोक्ति बिना पीव
 चाहेकनेष्टा नायका जाको गरे को माला करि पति चाहन सो
 ज्येष्ठानायका जस माला जगन सगन गुरु ११ ॥ ११११ ॥ ११ कुमारसन्धि
 चन्द ॥ ६३ ॥

सोती तीके करार्ण लौं सालनीके दुःखान्या सं-
 भोग के चिन्ह पीके बोली तीवेना समासोक्ति यामी
 साधो पाये आजु कैली सुभागी ॥ ६४ ॥

तिय के मोतिन के दग काने तक कपोलन में नीकी भौति
 बने है पति के अंग में अत्रन तिया से भोग के चिन्ह पति में र-
 खि दुःखित भई ताते अन्य संभोग दुःखिता नायका हे साधव
 को पाय के आजु कैली संभागी भई ऐसे समास उक्ति के पागे
 वचन तिया बोली साधव कैली बरान प्रस्तुत तामें अम्य नाय-
 का संभोग जा या अप्रस्तुत को जानताते समासोक्ति अलंकार
 सोती तीके करार्ण सगन है तगन करार्ण ११ ११ ११ ११ यह सा-
 लिनी चन्द है ॥ ६४ ॥

तनलंजत उचरित वयन रति परि कर तरलन्य
 ने शशिसुख अमृत रस धरत मदन तपन पिय किहरत ६५

तन में लाज ताते वचन नहीं बोलि सकत अरु रतिमें परैनयन
चंचल करत अंगार स्वरूपी अमृत धारणा अधर सो मदनकी
ताप पति को हरि लेत याते मध्या रति चन्द्रमुखी ताप हरणा
में विशययति को सुखदाता यह विशय्य आशयते परिकर
अलंकार है नतपन तोनि नगन ॥॥॥॥॥ यहतरलनयनचंद्रहै ६५

संगस्वहिले चल प्रवस प्रियासक पतिप्रिय प्रा-
राहितनति सुवासक दुखफलनामहिं निजुलहिवा
सुर विगहबडीत रूपरिकर अंकुर ॥६६॥ इति मध्या ॥

परदेश प्रियासी को सोको संगही ले चलिये प्रिया प्रारामति
तेनारी तन सुवासिक है नाहीं बिन प्रारा सी देह कुवासिक है ताते
वियोग रूप अंकुर परतही बिरहरूप तरु बढि जायगो उर में ताको
फलदुःख हमारे नामही में है अर्थात् वाम कुटिल सचदुःखपात्र
है विशय्य नामही में अभिप्राय ते परिकर अंकुरालंकार प्रवस प्रेय-
सी नायका निजुल नगन जगन लुष ॥॥॥॥॥ स्वामक चन्द्रदूनों
पद ॥ ६६॥ इति मध्या ॥

अथ प्रौढ़ा । अंगन बिभूषि पद सोहद समूह रही
सोहत सुमन धन जगत ललाम है भवति विलासगति
सुखद सभीत आदि कारणा निवास हेतु सुन्दर सुटाम
है सफल सगजरूप वासनीच नाम नाम सयति मुचाह
वजनाय बहु पास है सोगी औ वियोगी गंगी भागी यो-
गी श्रेय लब्ध आवति को चाम वास धाम काम राम है ६७

अथ प्रौढ़ा । पाँच अर्थ की लक्षानंकार सोभ कहत वाम कहे
शिव है वियोगी कहत वाम कहे अनिता है सोगी कहत धाम है
भोगी कहत काम है योगी कहत राम है प्रथम शिव पक्ष अंग में
नाम बिभूषित पद शोभा समूह है रही सुमन पावित्र मजुरगिन-
क धन साहस जगत के भूयसा है भय महादेव रति के विलास ।

काम तांके अरि संधीत रति के सुखदाता जग आदि कारणा-
निवास हेतु सुन्दर सुदाम कैलास हे रज धूरि सन्धित रूप सत्र फ-
ल दायक बाम सुन्दर हृदय के बीच बास संपति नाम सहित य-
नाथ राम नाम तिनही की चाण्ड आठ धाम है इति सोगी कहत
शिव है १ पुनः बनितापसे विभूयित पद सो अंगन में समूह गो-
भाह्ये रही सुन्दर मन सोहत ताते धना जग की भूयरा है जासो
भयंरी घूमत ता संगरति बिलास की सुखदाता आदि रति में
संधीत जग उत्पत्ति की कारणा बास के हेतु सुन्दर है पर जिनके
सरज सधिर सन्धित रूप सफल बाम बनिता के बीच उर में गर्भ
बास सपति सहित पति सो भागिनी नाम आठो धाम चरत इति
बियांगी कहत बनिता है नायक की मन प्रवृत्ता त लब्धावति ।
प्रीटा नायका है २ धामपसे सुन्दर आवाज विभूयित लपाटन
सो समूह शोभा है रही सुन्दर अनवन ते भय शोभित जगत् में
धरारा है भव अरि काम को बिलास रति करिने सो सुखद सहित
भीति शोभित जग में आदि कारणा है निवास के हेतु सुन्दर दाम
है सरज सहित रतिका रूप सफल है राम रतिजन को शोचक
म है, सपति नाम फलाने को धाम है यह चाण्ड आठो धाम है इ-
ति सोगी कहत की धाम है ३ कामपसे वेष्ट भूयित अंग रत्नित
समूह शोभा की जग में प्रशंसा सुसन को धनुष शोभित जगत् को
सूखगा है भव को अरि काम आदि रति को विनास में पति को सु-
खनारी को भय शोक को दाता जग को कारणा है निवास हेतु सु-
न्दर दाम देखि कामोदीपन होत सरज सधिर सन्धित तावो रूप-
सफल है बाम के उर बीच बास गर्भ धरारा तांक नाम की चाण्ड स-
न्धित पति नारिन को रहत भाव हमारे उग्र होत इति भागी कह-
त काम है ४ रामपसे विनायक भूयित अंग में समूह शोभा है रही
सुन्दर मन जिनका शोभित सन्तजन तिनसे धनुषक रामरी है
जगत् के सूखरा है भवसागर के लज्जा नदति निवासन मति

करते जे सभित शरणा आवत तिनके सुखदाता लोकन के आदि
कारणा हे निवास हेतु गोलोक आदि सुन्दर दाम है सरज सहित
प्राक्रम रूप सफल है नाम शिव के उर बीच बास है ऐसे जगन्के
पति रघुनाथ जी सहित तिनके नामकी चाह बैजनाथ को आरु
याम है इति जागीजन कहत की या कवित्त में रघुनाथ जी को
वर्गान है ॥ ६७ ॥

चंचलांग चातुरी सराज बद्ध भावतंस भासमै सुहा
ग धन्य और को करै प्रशंस प्रस्तुता क्रमाति प्रौढ़ता इत
समूह पाइ याहि हेतु नाह हाथ चाहती लगाइ पाइ १
पाव माँगलौं शिंगार चित्त बिभ्रमैन थाह प्रीति बेलि-
का बदाव प्रस्तुतां कुरोरनाह सोन आनती चहे कटास-
चंचलानिहारि कंज संजु छाड़ि भोर मोद कौन कंटकारि ॥ ६८ ॥

अंग अंग चंचल चातुरी को भरो मुख कमल की शोभा उत्तम
भार्य मयी सुहाग धन्य है और की प्रशंसा को करे इत्यादि का-
रजते नायका कारणा की प्रशंसा ताते प्रस्तुत प्रशंसालंकारत्व
समूह प्रौढ़ताइ पाई है ता हेतु नाह के हाथ पाव लगावा चाहती
हे उन्वदि कारणा ते पति स्वार्थीनत्व की प्रशंसा ताते अप्रस्तुत-
प्रशंसालंकार मनबचन पति को आपनी आधीन कि हे ताते ।
आक्रमाति प्रौढ़ नायका है १ पायते माँगतक शिंगार में नाह
को चित्त बिशेष भ्रमा फिरत थाह नहीं पावत तेरी चित्तबनि अ-
रुपर नाह के उर में प्रीति बेली बड़ाइ दू जब ते चंचल कटास
निहारै तबते नाह आन तिया को नहीं चाहते हैं तनाइय कमल-
चाड़ि भोर की कंटकारि में कौन मोद है कमल कंटकारि अव-
लति नायका अन्यतिया प्रस्तुतता में नायका की शोभा अन्यतिया-
की कुरूपता प्रस्तावनि करो ताते प्रस्तुतां कुरालंकार नायका के तन
की इति इतिका है नायक को राहि लियो याते विस्वनिभ्रमान्तर्यप्रोद्य

है गले शिंगार गुरु लघु क्रमंत मोरह ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ यह चंच-
ला छन्द है ॥ ६८ ॥

शब्दभहारति प्रीति प्रजोक्ति त्वनील गहा रैनम-
शीतल गौ सुह खोलत भोर कहा कस्य भरी थिर होत-
नमो मन धीर चहो चैल दके इमि पौ दिपती उर लागि
रहो ॥ ६९ ॥

नील गाई चरि जाती है ता हेतु यह शब्द हार में जोती है-
अति प्रीति ने खेत ख्यावते हैं उक्ति प्रजा लोगन की है रैनमें
सुख खोलत शीतलागी अबही भोर कहा है इति रचना सो
बात कहत ताते प्रथम पर्यायोक्त्यालंकार शीत कमो भरी इन्द्र-
र नहीं होत जो धीरज चहो मेरे मन को तौ ने पती बसन छोड़े या-
ही भाँति पौड़े उर में लागि रहो इति बहाने ते कार्य्य माधिवं तंत्र
दूसरी पर्यायोक्त्यालंकार भोर हो बो नहीं जाइत ताते रति शीला
शब्द भाहार पाँच भगन एक गुरु ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ यह नील गहा
छन्द है ॥ ६९ ॥

शयन चह्नि पी सदा कह ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ निदत सुत
तोजनी सुतत लघु रोजनी नवलतन पी चहै नवल कि-
नती चहै कमल धनि पील है सकल निशिलो गहै व-
स फुलन व्याजितै भ्रमर सुत निदिंते ॥ ७० ॥

जास की चाह मोई सुख है पीके संग सदा शयन कर चाहती
है ताते संसस्त रस को विदा तोको का कहो पीके शोपुरान को न-
हीं कान करती सोवत नई में तां को जानि पीके संग नयु उगे ज-
नवाली शयन करत घाते निन्दा व्याजस्तुति अतंकार नवीम मन पी-
व है तो क्यों नबीनी तिया की चाह कर यामं स्तुति व्याज निन्दा
कमल धन्य है जो पति पाइ राजी भरि प्रदरा करत में कमल की
स्तुति सेनायका की स्तुति ताते स्तुति व्याजस्तुति मबी न पुन मतो

७८

स्वत तद्द्वारं वास लेत धामे प्रसर की निन्दा ते नायक की निंदा
ताते निन्दायाज निन्दा निशिलोग नगन मगन लघुगुरु ॥११॥
यह काल चन्द ॥७०॥

मेना माधो प्यारे हाला हीना छे पा विद्युन्माला भा
लें फूलाटे खरुरा किम्बा है तीको सिन्दूर प्रोढ़ा
बिना बोली धीरा जैयो भावै ताके तीरा पै एका मालो
को बिद्यायाको गौरा कै नै विद्या ॥७१॥

हे प्यारे तुम्हारे हाल में नहीं भासत हों बिलुगन को माल
उर प्रव भक्तकत सो नहीं छपा है यामें निषेधा भास अच्चेप चल
कार तुम्हारे माल में देख फूला है छयवा परतिया को सिन्दूर है
वात कहि फेर ताते विवेकाच्छेपालंकार है प्रोढ़ानायका धीरा
बचन बोली की जाके तीर भावै तांके तीर जाउ पै ये कामलोक
गति ते उबीधे है याको गुरुजव निबिड करतें हैं या विधि सोच
त करि निबिड दुगयो याते गोपनाच्छेपालंकार छेपा विद्युन्मा
ला चापे बुड माला आटगुरु ::::: यह विद्युन्माला चन्द ७१

विनरंग गौर गिनेन तब वाधिप विमृदुवैन वरजो
तऊ उत जात गतिकारा बोलत चात रवि भावनाह
सुरवेन्दु छत सज्ज तोसर सेन्दु दरिजाउ नोत छपर क
हि प्रोढ़ बाल अधीर ॥७२॥

विना रंग तुम्हारे नेत्र रंगि गये यामें प्रथम विभावना विना का
रुणो कारम भयो तुम्हारे काल ल चन्दन बद्र से हसैं बाधा करे इहाँ
बेनु अचरेगाते कार्य प्ररसा भयो ताते दूखी विभावना तुमको वर
जित ताड पर उहाँ जात हो इहाँ नायका प्रतिबन्धकता को बर्षि
शे बन बाधा करि अन्य तिया रिग आने कार्य भयो ताते तीसर
विभावना चाल कार दक्षिणा मी कदन चातक अनुकूल से इहाँ

अकारणा वस्तु ते कारज भयो ताते चतुर्थ विभांवना नाइको मु-
खचंद्र रवि भावतापकारक भयो इहां कारणा ते काकार्यविकृद् भ-
यो ताते पञ्चम विभांवना नायका के भ्रूषणा गड़ि गये ताके चत-
रोज कपोलन परते हमें मारने को तोमर माजमे हैं इहां कार्य
सो कारणा रूप भयो ताते यद्यम विभांवना लंकार मञ्ज मगन
है जगन ॥ १११ ॥ १११ ॥ यह तोमरचंद्र कपोलचंद्र भावनासे लगे इमारे
उर में पीर है ताते इहां ते ररिजाउ ऐसे कठोर वचन कहत ताते-
प्रौढ़ा अधीरा ॥ ७२ ॥

माला सुन्दरि अंगै माला सुन्दरि नांगै हौ शोभा
सप्रबोधा हौ शोभा सचिरोधा धीरा धीरहि देखा
धोये सामद लेखा ॥ ७३ ॥

बिन सुरा माला सुन्दरि नहीं है कोज सुन्दरी गरं में माला
भई है ताकी शोभा सो प्रबोधित हौ मेरी शोभा सो विंगधित-
हौ धीरजकारि सन्तोय करे अधीर है ताइन करे मुम्हारा लेखा
यथा गज को धोइये फेरि धूरि लपेट तो इहां विरोध मादर मात
अरु है नहीं ताते विरोधा भास अलंकार है मन में प्रीति सुरव
ते कठोर ताते धीरा धीरा नायका मालासुन मगन लघु पंख-
लादि लघु ॥ १११ ॥ १११ ॥ यह मद लेखा छन्द है ॥ ७३ ॥

गेल चारि रैन धारि कै विशेष उक्ति हारि प्रौढ़
चाप भौंह तान छूटतौ नमान बान ॥ ७४ ॥

चारि घरी राति वीति गई विशेष उक्ति करि मनावत में
हारि गई प्रौढ़ चाप सो भौंह ताने मान बाणानां छूट इहां
कारणा सो कार्य नहीं भयो याते विशेषोक्ति अलंकार मति
नी प्रौढ़ा गेल चारि ॥ १११ ॥ यद् घरी छंद है ॥ ७४ ॥

आसंभवा से जै पीकी है माचारी दीड़ा कीपी का।

पौदा कीड़ा राधारी पी अन्ये संभोगे जाने दुःखे भारी
को जाने या मूर्खा को के विद्याधारी ॥ ७५ ॥

पीकी मेज विंये असम्भव मचाहे जो होनहार नहीं रहे सो रेखा-
तबीरा की पीक परी है ताते काहू चावुरि संग क्रीड़ा रचो गयो ताते
यीव आनमंग भोग करे यह जानि भारी दुःख भयो ताते अन्य
संभोग दुःखिता प्रोढ़ानायका कहत की को जानत रहे कि यह
मूर्खादासी को कहार विद्याधारणा करी इहाँ मूर्खा में कोक-
विद्या अगम्भव सो सिद्धि भयो ताते असंभावना लंकार माचारी मान
चारि ॥५५५५५५५५५५५ यह विद्याधारी छन्द है ॥ ७५ ॥

निशि यशय लागि मालधर भायुनो आजसे नय-
नन सिंदूरलागव दनांजनो भाजसे तुम उत जगेदिगा
नममलालिसामंडिता पउइ असंगता यहि हमै कहे
खंडिता ॥ ७६ ॥

विन युगा को माला प्रति में धारणा करे यशके हेतु तामें
अयश भयो भाज सुख में कज्जल लगी तैसेही नेत्र में सिंदूर
की शोभा है जागे इहाँ रात्री को तुम अरु हमारे नेत्रन में लाली
विराजमान है आयुनो धाम तजि असंगति तियन की तुम यौद-
त भाव खंडित है हमारे दिगते तुम जात खंडित है सब हम को
कहत यामें और कारणा तें और कार्य्य भयो ताते प्रथम असंगति
मृग्य में पान तें लाली चाही तहाँ काजरसो रयास नेत्र अञ्जन
चाहिये तहाँ सिंदूर तें लाली इहाँ और और के कार्य्य और और ता-
ते इमंग असंगति यश हेतु माला धारे तासो विरुद्ध कार्य्य अय-
श भयो याते तातरी असंगति अलंकार निशि यशय लागि
॥५५५५५५५५५५५ यद मालाधर छन्द है ॥ ७६ ॥

शीतलो वियमरे नरी लगे पौढ़ि शोचहि स्थोद्ध

तामगौ ती कहा हूँ प्रवास पी अहे र्यासह बिरह
देह पीत है ॥७७॥

नाहके चलत में ऊँचा रजस में दूर तक देखा कि ये ताली
सुधिकरि पीदी शोच करत ताते शीतलो रैन विद्यस लागत शरी-
उत्तम उद्दिशते विद्यस फल प्राप्ति ताते तीसरी विद्यस अलंकार
कहा तिया कोमल कहा प्रवास में पति ताकी विरह कथोर जह
अनभिल साथ ते प्रथम विद्यस अलंकार बिरह र्यास त देह पी-
त भई इहाँ और रंग कारणा ते और रंगकार्य भयो ताते दूसरी
विद्यसालंकार रैनरी लगे रजन नगन रजन लघु गुरु ॥१॥१॥१॥१॥
रथोद्धता बन्द है ॥७७॥

तन लुहरसम घट धरी जननिन लगतु गुरा गरी
पति बश करि बल गुरा का गरव कसन सुद मन-
का ॥७८॥

तन की अघुहारि सम जानि घट धारणा कि हे इहाँ यथा यो-
ग्य संग ताते प्रथम समालंकार तेरी माता गुरा गरीता नग
रहे तोह गुरा गरि भई इहाँ कारणा में कार्य को संग ताते
दूसरी समालंकार गुरा बल ते पति बश कि हे इहाँ अमन्त्रि
कार्य भयो याते तीसरी समालंकार गुरा ते मन को मोद प्राप्त
भयो तौ कसन गुरा को गरव होइ याते गुरा गरीता प्रोदाना-
यका ननिन लगत नगन लघु गुरु ॥१॥१॥१॥१॥ १ यह रमनक
बन्द है ॥७८॥

मानत जी मे मान लही है भागरती पी हंस-
गही है प्रेम सगर्वाही समदीने केलि विचित्रे अनं
दभीने ॥७९॥

अभिमान तजी ताते पति सनमान पाई इहाँ फल विपरीतकी

उच्चा ताने विचित्रा लंकार है भाग्य वशा प्रति हँसकरि पाई प्रेमस-
 न्त में गरजाही दिये आनन्द भरे विचित्र केलि करते हैं पाते-
 प्रेम गर्वित भाग्य सगन द्विष्ट ॥५५॥ यह हंस बंद रोहा
 पद है ॥ ७१ ॥

**रूपतन अधिकारि नागलिनय समारि तुंगुरज-
 गरवाही शंतकिनरन अघाही ॥ ८० ॥**

तरे तनमें रूप की अधिकारि है जो गलिन में नहीं अंवातग-
 ली आधार ते रूप अवेय अधिकताते प्रथम अधिका लंकार उ-
 च्चत उरोज गरवा है आदि की शोभा मेरीतकिनर नहीं अघाते
 हैं इहाँ आवेयते आधार अधिकताते दूसरी अधिका लंकाररू-
 प गर्वित प्रीड़ा नायका गलिनय एरु लघु नगन यगन ॥५५॥ ५५
 यह तुंग चन्द ॥ ८० ॥

**प्राक्सै पीय मंलै दिशोहा मनो नाहित वशोगमो
 भो अल्प सोभातनो आंगुरी राजहो देखिये नाथमो
 सोसला सील है आइगोहाथ मो ॥ ८१ ॥**

हे पीव मंगो मन विशेषि सोह वरा भयो ताते प्रवास को मो
 को मंगली जिये नाहो तुम्हारे प्रोक में मेरी तन अत्यन्त अल्प
 भयो हे नाथ जां चला मंग आंगुरी में रजत रहा सोई चला
 नाथ में सील है की आइ गयो इहाँ चला अवेय है आंगुरी आ-
 धार अत्यन्त है ते अल्प इगरी आधार मुजा भयो ताते अल्पा-
 लंकार है प्राक्सै चहाने तंग कियो ताते प्राक्स प्रेयमी नायका
 प्रीड़ा है गरइ रान ॥५५॥ यह विलोहा चन्द कोक जोहा कइ
 रोहा पद ॥ ८१ ॥

सुर्वासांगारामनय पीलो प्यारे छायो तन मन

ताही में द्ये जाने अन्योन्यालंकार स्वाधीनपतिका नायका सा भासे
मगन भगन सगन ॥५५॥ यह यइता छन्द है ॥ ८५ ॥

विचारते जगै क्षमा क्षमालकारनोत्तमा करोत्त-
मा सुनागरी जसादि पीहितै भरी ॥ ८५ ॥

उर में विचार भयो ताते क्षमा जागी क्षमा लैके उत्तम कार-
णा भयो उत्तम कर्मन ते उत्तमा नागरी भई चाचुरी ते पीव को
हितकारता उर में भरो ताते जसादि की प्रशंसा इहाँ कारणा-
कार्य की परस्परा ताते कारणा माला कोऊ अंफालंकार कहत
जगै जगन गुरु ॥५५॥ यह नागरी छन्द दोहरो षट् है ॥ ८५ ॥

बिननग शुननी एक अवलिबनी पियदृगनलहे
दृगमनहि कहे मन गरबवती सगरबसुमती सुम-
तिकुमति सा तिय गति मधिमा ॥ ८६ ॥

बिना शुनन गन की एक अवली बनी उरपै ता सहित पीको
दृगन देखे दृगमन सो कहे मन गरब बश भयो गरब सुमति में मि-
लो सुमति कुमति में मिली कुमति तें नायका मध्यसा भई इहाँ
सुक्त पद ग्रहरा ताते येकावली अलंकार कुमति बश मध्यसा-
नायका प्रोदाननग है नगन गुरु ॥५५॥ यह बद्धमती छन्द है ८६ ॥

सोती नै सो भासे वासे वासे सो राजी से जा भासे मे-
जे भासे भारूपी माला माला दीपों भासे पी बाला ॥५५॥

सोनिन सो वास म्यान सोमि वास स्थान ते सेज शोभित से
न ते फूल माला शोभा में जो बिछाये है ते शोभित फूल शायरि
न गनते पीद अरु बाला शोभायमान इहाँ सुक्त पद ग्रहरा ते-
काव की भाव क्रिया गकर्ती ते दीपक दोष मिलि माला दीपक
काविकार वासक गव्या प्रोदा नायका सोती है सगन हीनि

५५५५५५५५ रूप माला बन्द है ॥ ८७ ॥

तन सकल सार पतित नहिं प्यार करि कलह
तासु लइ सुकर हासु ॥ ८८ ॥

संसार में तन सार ताको प्रारा पतिसार तापति सों कलह
करि अपने हाथ हँसी कराई याते कलहन्तरिता प्रौढ़ानायका
सारंगश ग्रहरा ते सार अलंकार न सकल नगन सगन लख
॥१११॥ यह करहंस बन्द है ॥ ८८ ॥

शशिनय सारंग करी सित अभिसारै निसरी
नगरात पीसोति सुखे सुखद यथा संख्या दुखे ॥ १ ॥

भूषणा बसन सों शशिन ऐसा रंग अंग में करी सेत राति
में अभिसार को निसरी मग जात में सुख देखि पीको सुखद
सोति को दुखद इहाँ असते बस्तु बरसान ताते यथा संख्यालं
कार चन्दाभिसारिका प्रौढ़ा नायका नयसा नगन सगन सगन
॥११५॥ यह सारंग बन्द में तीनिउँ अभिसारिका हैं ॥ १ ॥

असित भिसारै रजनी तमनय सारंग बनी च-
लगनते पादवसी कमलस्य पर्याय शशी ॥ २ ॥

अंधेरी राति में अभिसारको चली भूषणा बसन सों तम
ऐसा रंग बनि मन की चंचलता पाद में आनि बसी ताते शीघ्र
चली इहाँ चंचलता एक की मन पदादि अनेक आश्रै ताते प्रथम
पर्याय कमल से सुखचन्द्र से भयो ताते प्रकाशित भयो इहाँ
कमल चन्द्रमा अनेक बस्तुको सुख एकही आश्रै ताते दूसरी
पर्याय लक्षाभिसारिका बन्द सारंग पूर्वही की ॥ २ ॥

दिन अभिसारंग करी परिघतही भाहि धरी ।

चलितन पीको देहों तनमन सारो लेहों ३ ॥ ८६ ॥

दिनको अभिसार अंग में करिके हृदय में यह व्रति धरी कि
चलिके चलिके तन पीब को देहों तनमन सर्वस पीको लेउगी
इहाँ घोरोरेबडत को लेनो याते परव्रत अलंकार रिहाभिसा-
रिका छन्द सारंग पूर्वही की ३ ॥ ८६ ॥

अशनन डासक नजल सुवासक अगतपिअं-
कहि सुखपरिसंख्यहि ॥ ८७ ॥

भोजन जल वास स्थान सुन्दरी सेज में सुख नहीं आयेपर
पति के अंक में सुख भयो याते आगत पतिका प्रौढ़ा नायका
एक टेकाने बरजि इसरे दौर सुख बरसान ताते परि संख्यालंकार
नजल नगन जगन लघु ॥ १११॥ यह सुवासक छन्द है ॥ ८७ ॥

रमो धामसूरी कि आसंख्यनारी यद्वेनाधमा-
री निःश्याता कारी ॥ ८८ ॥

या हमारे धाम में रमों या सखइ तियन में रमों ये दोऊ न
बनिहें मेरे पैर कहि पति को बिकल करत ताते अधमा प्रौढ़ा
नायका इह सम बलको बिरोधताते बिकल्पालंकार ये द्वैय-
गन है ॥ १११॥ यह संखनारी छन्द है ॥ ८८ ॥

रचिरति प्रौढ़ा कटिपग ड्योढ़ा पतिनय मन्सा
मिलिचतुरंसा जघनदुकुचै अधरससुचै उरल-
परावै सुख उपजावै ॥ ८९ ॥

पति की कटि पीचे चापने पग ड्योढ़ाय पति की मन्साजनि
चारड कंधा मिलाइ या भाँति प्रौढ़ा रति रची इहाँ एक साथ
बडत भाव उपज ताते प्रथम समुच्चै जंपन करिके कुचन करि-
के अधरन करिके उर में लपराय के इहाँ बडते अंगन ले एक-

मुख उपजाडवो ताते दूसरी ममुच्चै अलंकार नय नगन य गन
 ॥११३३ चतुरंसा छन्द है ॥ ६२ ॥

दिस्याय उरोजनुमालतिकादि सिरैभुक्तिभूमि
 रैरतिवादि अनन्द समूह छकी मदगात सकारकरी-
 पप्रतीहसकात ॥ ६३ ॥

माला कादि उरोजन को दिस्वाइ मदन मद भों गात भयो
 समूह अनन्द सों छकी ताते प्रतिको शिखा दे दे अकुनि भूमि
 भूमि रति में वड़ी रमत आशु परिश्रम ज्यादा करत मकार होद
 की शंकादीय की भूमिजर्द ते करत ताते अनन्द मयूहा नाय-
 का अनेके क्रिया एक में ताते कारकरीयक अलंकार जगु है
 जगन ॥११३३ यह मालतिका छन्द शंकरोपद ॥ ६३ ॥

रात्रीसंमोहै गैसगैजोहै कासिहीवाही तारीसा
 माधी उत्कंठाजाही दूतीशंताही भाव्याती भायों-
 द्वारेपी आयो ॥ ६४ ॥

राह निहारत समूह रात्री व्यतीत गर्द तव कागन राधाकृति
 ताते पीव की सरति में समाधि दिख के तारी प्रांगे न कगया
 प्रोडा नायका ताही समय दूती शब्दों से तियाहो सन भायों
 भयो पीव द्वारे ये आयो इहाँ द्वार आइयो इजंततु मरुज सुगत
 ताते समाधि अलंकार गैसगै युक्त भगन पुन ॥११३३ संसास
 छन्द ॥ ६४ ॥

सेजेनिहारी मूनी गती सो दैवदर्श कल्पवृक्ष
 तीमो योविप्रलब्धानिलज्ज रतिरि मरुत की रति
 गें काहती की ॥ ६५ ॥

सजिके गर्ड तहाँ मूनी सेह देखी ताके कें ...

दृष्टान्नालाये जो पीकी निर्लज्जता गुरुजनन में है तो गरीतिया
की कौन बात है यांत काव्यर्थापत्यालंकार संकेत में गर्दपीव
नहीं मिलो तब उदास भई याते विप्रलब्धा प्रौढ़ा नायका है गो
रागे गुरु गान गुरु ॥१॥११॥ यह शरी छंद दोहरो यह है ॥ ६५ ॥

मनजनगोपति विनती शिवकविलिंगहि लिख
ती पवनहि अमृत गति का अहितमप्रोथित पति-
का ॥ ६६ ॥ इति स्वकीया ॥

पीव विनतिया को मनोज नहीं गयो ताके हेतु विशेष्य के
शिव के लिंग को लिखत पवन के हेतु अहि लिखत चन्द्रमा-
के हेतु तम कहे राइ लिखत ताते प्रोथित पतिका नायकायक्ति
में दृष्टा को सामर्थ्य ताते काव्य लिंग अलंकार नजनगोनगन
जगन नगन गुरु ॥१॥११॥११॥ यह अमृत गति छन्द है ॥ ६६ ॥

अथ परकीया जसा जस यलागनो न डरजा-
हि पृथ्वी विधे सुमित्र नित प्रत्यनी कहि चहै छले
को सिधे पतीवरजिता सुधेन चलती कछू रिसे सु-
तै परकीया जु दराड लखि अंश है या तिसै ॥ ६७ ॥

अथ परकीया जाको यश अयश लागिवे को डरभूमि
पै नहीं है अनेक छल सिखे नित प्रति नवीन सुन्दर मित्रकी
चाइ राखत ताते पति बरजत तापै रिस नहीं चलत तब छत्र
पर दराड करत की याहू वाही को अंश है ताते प्रत्यनीका
लंकार परकीया नायका जसाजस यलाग जगन सःजःसः
यः लघु गुरु ॥१॥११॥११॥११॥११॥ पृथ्वी छन्द ॥ ६७ ॥

में नौयासं गोदिव अर्थान्तर न्यासे नेकोमाया
नाहि पुरेई किमि अमि कैदाया मोहेरि हरेंगे दुख-

जीको सामर्थ्योके कानहरी से तुलसीको ॥ ६८ ॥

मेंतो याके संग जड़ाहैं चुकी ये मेरे आपन बीच रयाही-
अन्तर स्थापित करते हैं मेरे एकहु माया नहीं मेरी आराकेसे
पूरा होइगी आपही दया करि देरि मेरे जीको दुःख हरि ले-
इंगे हरि तुलसीको माय पैरावत सामर्थ्य का नहीं के सकत
विशेष की क्रिया देखाय सामान्य को दृढ़ करी याते अर्थान्त
रन्यामालंकार चोरी सों पर पुरुष सों प्रीति करा चाहत ताते
जड़ा परकीया नायका मेंतो या संगो मगन तगन यगन मगन
ग्रह ॥ ५५५५५ ॥ ५५ ॥ ५५ यह माया चन्द है ॥ ६८ ॥

छबिकसरमनु नितदरत हरिपदमनकरमवत-
त पति सहित सतितन रहत तरुगिनिजपति
गवरिसत ॥ ६९ ॥

उनकी छबिके सागर में मन दरकि जात ताते मन कर्म
बचन ते हरि पदको बिवाह चाहत हो भावपति के संगमती
तन दाह करि देती है ताते सामान्य तरुगी अपनेही पति सों
रति चाहत यथा गवरि पतिजत ते पति के अर्थांग संगदन
प्रथम विशेष फिर सामान्य फिर विशेष ताते बिकस्वगलं-
कार बिवाहो चाहत ताते अमृदानायका निर्निहंगन ॥ ॥ ॥
यह रसनक चन्द दोहरों पर ॥ ६९ ॥

श्रीदोक्तितीनारमन्यानधावैजु मेरे गुरों सीत
गर्वाहिदावैजु ॥ १०० ॥

तीकी चावुरता नहीं है जोर मन कर ताके स्थान को जात
मेरे गुराते मित्र तथा गर्वाही दिसे रहत याने गुरा गर्बिता
परकीया अहेतु ते उत्कर्ष ताते श्रीदोक्ति अलंकारही तीहंगन
॥ १०० ॥ मंथान चन्द दोहरों पर ॥ १०० ॥

संभावनाहीं गर्वाहो स्वीया रूपा काही जोपी
रागें मीतो पागें तो लागें सो माही ॥ १०१ ॥

गरवाड शीखादि मेरे रूप समिता भाव को और तिया नहीं
है जो पतिउ में रागें मीतह का पागें तो मी में समिता लागें यात
संभावना लंकार रूप गर्विता परकीया मे सोसा गुरुहै मगन
॥ १०१ ॥ यह शीखा रूपक छन्द दोहरा पद ॥ १०१ ॥

वाको मिथ्या ध्यावै या शीखा मो मानो पानी
ज्वागी लागें परती त्यागें मानो ॥ १०२ ॥

मेरी सिखावन मानो वाको वृथा ध्यावत है जो पानीमें
आगि लागें तो परतिया मान त्यागें याते सानिनी परकीया
मिथ्या कल्पना ताते मिथ्या ध्यावसित अलंकार मोसा बे-
मगन ॥ १०२ ॥ यह शिखा छन्द ॥ १०२ ॥

मीतहि प्रेमी गरवा मानव कीड़ा जियको लालि-
त या भांति लगे भूलि न चाही पिय को ॥ १०३ ॥

प्रेमी मीत का गरु मानत है ताको कीड़ा जीव को यहि
भांति ललित लागत जैसा भूलिह के पति को नहीं चाहतहो
याते प्रेम गर्विता परकीया प्रतिबिम्बवत कहवृति ताते ललित
अलंकार भांति लगे मगनतगनलघुगुरु ॥ १०३ ॥ मानव की-
ड़ा छन्द ॥ १०३ ॥

जो चाहें मंगलनयतिया आनु भायो तिहागे चा-
ह्यो जाही समय तबही आनु अस्तै निहागे जैचो चाह्य
मिलन तबही मीत आयो सुदारे मेमंदा कांति प्रहरण
भातायपत्यागतारे ॥ १०४ ॥

हेतिया जा मंगलन को चाहत रही सो आनु तिहागे स

भायो भयो हियाँ बिना यतन वाञ्छित भयो ताते प्रथम प्रहर्षणा
लंकार समय को चाहना करतेही भावु अस्त भये उहाँ वाञ्छित
ते अधकी फल ताते दूसरी प्रहर्षणा मिलन हेतु जावो चाह्यो
ता समय मीत द्वार पै आइ गयो इहाँ यतन करतेही लाभता
ते तीसर प्रहर्षणा उपपत्ति के आयें कांति की मन्दता जाती मी
हरषहीय में नहीं अँवात ताते परकिया आगतपत्तिका मंग-
लनय तिया मगन गुरु लघु नगन यगन तीनि :::::॥॥॥॥॥॥॥॥॥
यह मंदा कान्ता छन्द है ॥ २०४ ॥

ही सदा पंचमेइजे चातुरी लघु मत्तसो सो वियादा-
दि बोले क्यों भोगान्यो सु पच्छत्तसो ॥ २०५ ॥

पञ्चनमें सोको सदा लज्जा इसरे चातुरी अरु सत्तमें लघुता
सो को यह विषाद है कि आदि सोको क्यों न्वाये अरु अन्य
संग भोग किये बोतपै सततुम्हारे देखात है याते परकिया अन्य सं-
भोग दुःखिता इच्छामें विरोधताते विषादालंकार पंचबौलघु चारि उचर-
णामेंइजे चोयो चरणामें सतबौलघु आरु चरणायद तु सुपच्छन्द है २०५

चलि मिलन उल्लासो कै मीतना मिलिते रागी-
छहरिनिशि मारे शीलागी हिये सुदंगे खसी जुपति
संग सोवै सुखे कूरहो फल प्रीति के तिमिर घनवंधी-
लब्धा होत सो कह रीति के ॥ २०६ ॥

घानन्द सो मिलन हेतु चली तहाँ मित्र नदीं मिलो तद च-
न्द्रमा की चाँदनी छहरी राति सो मारन सी लागि ताते स्वयंते
सोद जात रहा चाँदनी गुरा ते दोय ते प्रथमांक्षासालंकार जो-
पति संग सोबती ती सुखी इहाँ पति संग गुरा ते मुन्बाहो बो-
गुरा दूसरी उल्लास में कूरहो प्रीति के फल पाई परपति सो-
प्रीति रोषतामें दुःख होवो इसरो दोष ताते तीसरी उल्लासविना

अधियारी अब इसको हमारे पति कैसे मिले उनियारे में कैसे
जाऊँ इहाँ तस दोय ते गुरा चतुर्थ्याज्ञासालंकार विप्रलब्धा पर
किया निशि मारै मी लागी नः मः सः रः सः लः युः ॥११॥११११११११॥
हरिणीबन्ध ॥ १०६ ॥

प्रावसतोपपत्ती सुनि सजा पी सुख दोधिक मा-
नि अबज्ञा तापति भाकरना मग ठाड़ी सुंदतही वि-
रहानल बाड़ी ॥ १०७ ॥

उपपत्ति प्रवास जानो सुनि जानि के सुखद पीध को धि-
क मानि ताकी अबज्ञा करि घर ते चली आई इहाँ पीव सुखगुता
को गुरानहीं मानी ताते प्रथम अबज्ञालंकार गह में ठाड़ि-
निहारत रवि की तापकी तपनि नहीं मानत रवि ताप दोय को
दोय नहीं मानत ताते दूसरी अबज्ञालंकार उरको सुख सुंदिग-
यो विरहानल बाड़ी याते प्रवस्यति पतिका परकिया तिभां क-
रना तीनि भगन द्वै गुरु ॥११॥११॥११॥ यद्द दोषक बन्ध ॥ १०७ ॥

निशि खंडित भोरनुज्ञा घरको चतुरी संगतोद-
कलाश्वको असजोगति मोहिं बियोग भलो मनध्या-
न सनेह द्वियो असलो ॥ १०८ ॥

गति अलगरहं भार मेरे घरको आये इहाँ बातें ना करी-
यद्द चतुरी हैं तारी सो तुम तक लगाइ के बको जाइ जो अस-
गति तो इसको बियोगही भलो तुम्हरो ध्यान लगाय हियो
सनेह ना निरमल बनाइहाँ बियोग दाय को गुरा माने याते-
अनुज्ञा लंकार प्रभात मित्र आयां याते खंडिता परकिया चतुरी
मगारि भगन ॥११॥११॥११॥ यद्द तोटक बन्ध ॥ १०८ ॥

आगे म्वाधीन सति कोनेतु बाले सापंगी सोई

जंजालाहालातेरेपंचोंमेंवेदंगी जेदेहैकामेजारै
मारैकाहसेनाहोसी धामेमेंबेटीअंठीबातें भाषेतेंदें
खासी ॥ १०६ ॥

बाले अबस्था ते प्रीति मेंरगिभीत को स्वाधीन पत्रिलेदी
केलीने ताते तोको छाड़त नहीं सोई जंजाल भये तेरे हाल
खुनि पंचन में निउनताहै इहाँ स्वाधीन करबो गुरातामें दोष क-
ल्पना ताते लेखालंकार जे काम मारि देह जावती हैं काहू सो
हास भाष नहीं करत आपने धाम में बेटी सब सो देकी बातें क-
रती ते खासी हैं इहाँ देह जाव आदि दोषतामें गुरा कल्पना
ताते दूसरी लेखालंकार परकिया स्वाधीन पतिका पंचों में
पाँच भगन SSSSSSSSSSSSSSSSS यह सारंगी चन्द है ॥ १०६ ॥

हारीसभीत घर छाड़ि प्रवासजाने प्रेमोपयोगि-
तपतीभजियोगज्ञाने सासुद्र छापतनमासुहिध्या-
नमेंहै हैसर्वसंततिलकानन दर्शदिहै ॥ ११० ॥

हरिसेसे मित्र घर छाड़ि प्रवास गये ताते हमारो ज्ञान योग
भागि गयो उपपत्ति को प्रेम सुख परा ताते सागुड सी छापतन
में आशुन की बड़ी ध्यान सदा उनही को रहत जा समय बसंत
कानन में दसि है ताशूल के आगे चाएन को शूल हमकोति-
लसम है दर्शित शब्द ते दूसरा अर्थ ताते सुदालंकार परकिया
प्रोथित पतिका तिभजियोगज्ञानतगन भगन हैं जगन हैं गुरु
SSSSSSSSSSSSSSSS यह बसंत तिलक चन्द है ॥ ११० ॥

चातुरशीलवानवारगुरा रतनावलि मोहिय ।
धारी पालक प्रीति रीति प्रति क्षरा क्षरा मोवचना
नहिंदारी भीतनरेन्द्रसंगहअनहकभई कलद्रंतगि

तारी भोरननाजुजाय जलमुखमम वेगि निलै सुख-
कारी ॥ १११ ॥

चतुरशीलवान येष्ट गुण रत्नन की पाँति सी उरमें धारे प्री-
ति की शक्ति क्षरा क्षरा ये प्रतिपालक मेरे वचन कबहूँ नहीं-
टाँरे सेमे नरेन्द्र मित्र के संग में नहक कलह करी भोरही ते अन्न
जल मेरे मुख को नहीं गयो यह शोच है की सुखकारी मित्र-
कष मिलि है याते कलहंतरिता परकिया नायका प्राक्त शब्द
न सो पद चातुरी आदि गुणान के क्रम ते नाम ताते रत्नावली
अलंकार भोरननाजुजाय मःरःनःनःजःजःयः॥११॥१॥१॥१॥१॥
॥१॥१॥१॥ यह नरिन्द्र छन्द है ॥ १११ ॥

गौरागोतहुनो शिंगारो माला सो चंपा साभा चे-
लादी भूया आपे साजे ब्रह्मा रूपा काभा धामे में बैठी-
बाँदेहीमें उत्कंठा माती सीतीना आयोशोचै छायो
गे बीती सारी राती ॥ ११२ ॥

गुरुजन उदिगये तब अंगार की नोचम्या को माला धारी-
नानी तहुरा चम्या सी तनज्योति भई ताते संगति को गुण
लागो ताते तहुरा अलंकार जाके रूपकी शोभा ब्रह्मा आप-
सी संचारो तामें भूयरा बसन साजि धाम में बैठी मनमें लगन
बढ़ी ताते भीत की राह हेत सो नही आयोसब रति वीतिगई
ताते शोचत याते उत्कंठा परकिया अंगारो माला सोरह गुरु
॥१११॥१११॥१११॥१११॥१११॥ ब्रह्म रूपक छन्द ॥ ११२ ॥

बैठी धामा सो भासा सूनया मंजीर खसी सासू पा-
ही हर्या सी तागंता जु पुना लजा करि पूर्व रूपा हाथे
सांगेना भई जमुहाती ह मुख सगि हाँपे लारवो योज-
नैं कीने तबहूँ सादानहि छुप्री ताँपे ॥ ११३ ॥

सासु के पास धाम में बैठी तामसय भामा की मंजीरानीने
सगुन मानि हिये में हरथी कि ह्कारे मीग आवते हैं पुनः लान
सो चर्य चोराइ प्रथही सासुए तारि लिये इहाँ संगति का गु
रा लै फिरि आपनो सुरा लियो याते प्रथम पूर्व रूपानेगा
हाथन सो नेत्र मूँदे जमुहात मुख को सारी सोंभापत रोनी
लाखी यत्न करत परन्तु मनको सोद नहीं छपत इहाँ मिये
हेतु उपाइ करे सुराना मिठो ताते इमगे पूर्व रूप प्रकिया क
रम पतिका सामोभामा सम ५५५५५५५ ॥ ५५५ ॥ ५५५५ या स
जीर छन्द ॥ ११३ ॥

वारो सिंदूर ओठो लक्षित वियम गतिन इत गसन
सी गौराठो जामें वारो बार करसां दे सुनि मुनि करि हैं
सी सासु बजै नाहो तजै गुरु जन सिखवन तुलसिन ला
गा कै चाती को संगो आत हुरारह अमल कबइ नडिं का
गा ॥ ११४ ॥

बार छूटे सिंदूर बिगरो ओठन परछत लक्षित विकर गनि
न में इत आवत हो तुम्हारे चरित कान दे दे सुनि मुनि गुरु जन
आठपहर हाँसी तेरी करत सासु बरजत पति ताइना करत पु
जन सिखावत सो तुम्हारे सकह नहीं लागत चातकह मंगनी
ताको सुरा नहीं लागत यथा काग सदा मलीन रगत चर्यो सं
गति सुरा नहीं लागताते अतइरा अलंकार लक्षिताना
का गौराठो जामें वारो बार करन आठ गुरु वाग नयु नै गुन
५५५५५५५ ॥ ५५५ ॥ यह हैसी छन्द है ॥ ११४ ॥

रजनिन मरिांनीलाई सुवसन अतिता पाई भुजा
शिशु मृता दाई विअनगन अभिलादाई ॥ ११५ ॥
नीलमणि नीलवसन धारशा करि रयाम गरी नम है

कड़ी धाम ते जो जरे भूयसो चैल धारें जरी सो प्रभा
भानु उन्मीलितामें खुलें केश की श्यामताये दिना
धे अकेली गली में चली जात दीवाभिभारी ॥ ११८ ॥

मनो को बल मन मों ताते वे भर्म मित्र को निलो लो-पयति
यह चाह मन में भरी धाम ते निकरी बसन भूयसा जरी के धो
ताते भासु की प्रभा में मिली तामें वारन की श्यामतात नारी
प्रकट होत ताते उन्मीलितालंकार दुपहर समय में अकेली-
गली में चली जात ताते दिवाभिसारिका क्रीड़ा चन्द्र कन्द प्रयास
की है ॥ ११८ ॥

वास सेजरि साज जो भरि आजु साजि विरोधि के
फूलमालन दीप साशाक मीत आगम लेखि के भो-
न भामिलि भूयसो तिय बोल चाल दिते खुलें चंचरी-
क भंगे लगे पल नैन पंकज की तुलै ॥ ११९ ॥

शूलन के माला साशाक दीपादि यावत् साज वास सेज
के हैं ते मित्र को आगम जानि आजु विरोधि के सामे याते-
परकिया वासक सज्जानायिका भवन की शोभा तिया के भू-
यसान की शोभा एकही समान बोल चाल ते तिया विरोध्य
नेत्र कमल एकही सम पलक लागे पर भीर भागत तामें मंत्र
विशेष्य प्रकट ते विशेषालंकार रिमाज जो भरि रः मः ब्रः जः
भः रः ऽ। ऽ। ऽ। ऽ। ऽ। ऽ। ऽ। ऽ। ऽ। ऽ। यह चंचरीक छन्द है ॥ ११९ ॥

गोतै जो भय रारि ग्राम हिं बने शार्दूल विक्रीडिता
प्राची मारग छाहै वारि रहि ताति सौ न किं ब्रीडिता ।
छाया कुंज जला स्वयादि इत में जै यो चले सति के ते-
पदोतर पांथ चित्त गहती नारी स्वयं दूति के ॥ १२० ॥

बन्धु भये ते चक्षुसा प्रकाश तजि हीनें जल बर्षन लगोरा-
 ति अंधिगारी में सून चर सेरे लग दूसरी तिया नहीं ताह परग्रह
 पवन मरनाइ के बहन लगो इत्यादि बहू बातें कहि सीत को
 उदरे रो और कोऊ नाही जानो ताते गुहोक्त्यालंकार पचनन
 में चावुरी करी ताते बचन विदग्धा नायका शशि भासत जो-
 जो लगी है सराच भगन सगन तगन है जगन लघु गुरु-
 ॥९॥९९॥॥९९९॥९९९॥९९९॥९९९॥९९९॥ यह सुन्दरि बन्द ॥ १२४ ॥

जननिननिसर भवन दुःख तुम हीं तुम मल क्षिति
 परनिधरक घुमही पिहित चरुत तुम तहँ नहिं रहती
 नव मृगनयनि चपल कहँ चहती ॥ १२५ ॥

माना आपही परते निसरि तुमको इंदत तुम भली निश्रांक
 पूकी पर घुमती हो पति अत्यन्त हित चहत तुम तहँ नही रहत
 हेनबीन मृगनयनि तुम काह चाहत फिरत हो इहाँ नव मृगनय-
 नी चंचल नत्र ते पर पुरुष अशुराग जनायो ताते लक्षितानायका
 परशि छिपी बात जानि ताको भाव प्रकट करी याते पिहित चरु-
 कारनिन निसि चारि गगन सगन ॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥ यह सरभ
 बन्द ॥ १२५ ॥

कर्मरेभेनयेयेयहि विधिसुनु री जो कहो जातना-
 हीं चागीको हो गड़ फूल निज कर रची स्वधरा ग्रीवसा
 हीं धायो सोपैत हाँ ईकपियक नख हूदांतह नोचिडो
 व्याजांकी भूत गुप्ता अवरनि मडुरे साचु आकार का-
 रे ॥ १२६ ॥

ये नये कर्म मेरे भये ताको री सखी सुनु जो कहो नहीं जात
 में बाग को गर्व फूल तोरि चायने नाय माला गुन्नि गारे में पत्रिरी
 कही मलय एक बन्द हीरि मांको हाँतन नखन नोचिडारे कीरे
 इरान मोची बात पुराबत ताते व्याजोक्ति अलंकार प्रथम की

नृकर्मन को छपावति ताते भूतयुग्मा नायका मंगेभेनयेयेय मगन
रान भगन नगोन तीनि यगन ॥३३३३३३॥॥३३३३३३॥ यह स्रग्ध-
रा छन्द याही में तीनिउं गोपना है ॥ १२६ ॥

बैठी सूनने निकुंजै हित मिलि विलसै मैन के रंग माती
देखेताही चवाई तिनहिं लखि कहे शोध सों सोंह गवाती
न्यागीरैहों नजैहों सहनन नंद की क्रोध मै शूल वानी की
नृकर्मै छियावै जुयुति करि लखौ गोपनावर्त मानी २ ॥

मैन के रंग माती मित्र सहित बैठी सूनने कुंज में बिलास करि-
रही तहां चवाई आरि परे तिनको देखि क्रोधित है सोंगंद स्वाम्य
स्वाय कहन लगी कि न्यागी रहिहो क्रोध की भयंशूल सी वाणी
न नंद की सहै घरे नजैहों इहां कीन्हं कर्मन को युक्ति सों गोपन
करत याते युक्ति अलंकार वर्तमान युग्मा नायका ॥ २ ॥

में तो जाती नहाने यहि भगनि तहीं काइ सों काज
नाही ये बेटे राह घरे सुरतिय करती नाक कां चीं कतरी
याही लोका पवाद है डर स्वहिं काहनं चाहती कूर नारी
ऐसी बातें बखानै भविष्य नवल लोकोक्ति लोकोपनारी
॥ ३ ॥ १२७ ॥

में नितहीं यहि मार्ग नहाने को जाती काइ सों प्रयोगन
नहीं ये राह घरे बेटे हैं डरकी तिया चीं क तं नाक काइती हैं यह
लोका पवाद को डर की कूर नारी सोको कलंक लगावने आ-
हती हैं ऐसी नवीनी बातें यहिलेही करत ताते भविष्य गोप-
ना नायका लोकापवाद वर्तान ते लोकोक्ति अलंकार छन्द
स्रग्धरा श्रवण की है ॥ ३ ॥ १२७ ॥

सुरत कीड़ा में जल पक्षी चातक प्यासी या डुरव-

पावै गतिजाने सिंधु बसे तेई मेहु की कृपाकै सेगा-
वै सकरन्दी धामर संभोगै रस सोचम्या कैसे पाई ।
कुलटा छेकोक्ति सगर्वाते अस तीयाभामामैगाई १२८

अपर पक्षी जल में कीड़ाकरि सुखी है यह चातक प्यास
तेहु रित रहत समुद्रको सुखतेई जानत जेवामें रहत कृप
की मेहुकी का जानिकहै कमल भमरन संगभोगत तासुख
को चल्या कहा पावै इत्यादि सगर्वित वातन में यकरंगिनकी
निन्दाकरी ताते कुलटा नायका अर्थ में लोकापवाद ताते छेको
क्ति अलंकार सतीया भामामैगा सगन तगन यगन भगन भ-
गन गुरु ॥ ११११ ॥ ११११ ॥ ११११११११ यद्ग शंभू छन्द है ॥ १२८ ॥

धरिये तिया भस वात सो उरवै दूँदूँदूँ जाइके रस
लाभगीस जिले रि भूयगा भूख प्यासन खाइके बरवैन
बोलइ छन्दको हसनाहिं जानत क्यों कहै प्रतिवात
जावलगीति कादन चक्रउक्ति हि गर्व है ॥ १२९ ॥

हे तिया हलारी वात उरमें भरी जो तुम्हारे उरमें वात है तो
कोऊ बंदको हँसोतो कोरुलाभ होइ ताते भूयगा सजिले मेरे
खाने पाने की भूख प्यास कुछु नहीं है ये बयन कैसे बोलत हो
वाभयन बोलइ बरवै छन्द वसनहीं जानती कैसे कहें इत्यादि
प्रश्नरी में उत्तरत ताते चकोक्ति अलंकार चकोक्ति गर्विता
नायका ॥ १२९ ॥

आपुगजि गंज रंज मोदिगंड कार आव चाहिगो-
रमैति मै कि जानि अत्रने कहू न छोट पाव लाजत्या-
गिनाहकै करे जु गर्म भाम आपने सुजाहि श्रेय मोदि-
प कहें जु वित्र उक्ति नायका सुराकितादि ॥ १३० ॥

आश्रय यहि राह में रोजही विराजन अरु मेरे नेत्रन में तुम्हारे देवन की भूयगाही है जो गोरम की चाह करते हो ताकी नि-
क चीटह नहीं पाइ सके हो यह जानि लीजं लाज तजि नाइक
परिग्रह करते हो ताते आयने घर को जाइ गोरस अधि गोरस
इन्दी रस इत्यादि ज्ञेय शब्दन सो छिपी बात कथत ताते चित्रो-
क्ति अलंकार नायक को देखि शंका करी ताते शंकिता नाय-
का गजि रोज रोज गैल रःजःरःजःरःजः गुरुलय ३।३।३।३।३।
३।३।३।३।३। यह गंडका छन्द ॥ १२० ॥

शीश गंगाधरे आठ यामें रहै व्याल बाघां बरौं गौ-
रि तौ ईश है पन्न गारी चढ़े चक्र है हाथ में चारि बाहें ।
धरे लोक के शीश है पीव वे जोबना देखि नौ नायक प्री-
तिलागी सदानारि स्वभाव है जाति रीती सुभावोक्त प-
पीव में प्रेम सो सानुरागी तिया गाव है ॥ १२१ ॥

आठ याम शिर पै गंगा धरे व्याल बाघां बरगौरि सुत तंगिब
हैं गरुड़ चढ़े चारि बाह चक्र लिहे तौ बिणु है बिना पीव जाव-
ना तिया नवीन नायक देखि प्रीति लगाइ तौ नारि स्वभाव ही है
इत्यादि जाति स्वभाव वर्णन ताते स्वभावोक्ति अलंकार पर-
पति में प्रेम ताते सानुरागवती नायका आठ यामें रहें गान या-
में आठ ३।३।३।३।३।३।३।३।३।३।३।३।३।३।३।३। गंगाधर छन्द ॥ १२१ ॥

महि सुंदर कंचन भैरगिा सो बड़ कुंजन क्यारि वर्ना
चड़ घाही फल फूलि रहे दल भारलता भलि चंतरम-
जै दल की परिछाही जनि काटइ पीव फली कदली
बसु यामहि संग बिहारइ ताही अधिकार उदातु प-
लसद सो धन सैन संकत बिनासिन जाही ॥ १२२ ॥

कंचन सो सचह भगिान सो भूमितामें कुंज क्यारी चारिइ

झोरसोंदनी तामें दलभार सहित लता फलिफूलि रहे घोंरि
सहित दलकी छाहीं बडत मजत ताते हेनाह फली कदली
जनि काटहु यहाँ आदहु यास विहार करते हो यह अधिकार
उपलब्ध हैं कुंज को मोधन बड़ाई देनो याते उदारता लंकार
संकेत विनाशन होइ यह शंका ताते पहिली अनुसैना वसु
यामहि संग आठ सः गुरु ॥ १३१ ॥ यह सुन्दर
उन्द है ॥ १३२ ॥

गवने कर श्रेय रहे दिन आठ सहेलिनि संग गई
तिवने विहरै वन कुंजन कुंजन में फल फूल भृगास्वग
वारिजने हुसलागि धने कछु यामि रहे उत होहि कि
चाइमिशोचि मनै नसि भूत सुचाह भविष्य सकेतहि
भाविक है अनुसैना भनै ॥ १३३ ॥

आठ दिन गौने के वाकी रहे सखिन साथ तिया उपवन
को गई तावन की समूह कुंजन में फल फूल स्वग स्वग कम-
लाई की शोका तामें विहार करती है तहाँ सघन हसलागि-
रहे कछु जासि रहे ताको देखि शोच करती कि यह संकेत मेरो
अब बूटि जायगो ऐसा संकेत उहाँ होइ वन होइ संकेत नाश
होत भूत वर्तमान आगे न होबै को शोच भविष्य तीनि हैं काल स-
क में वर्गान तें भाविक अलंकार भविष्य संकेत चाहते हैं
सरी अनुसैना आठ स आठ सान ॥ १३३ ॥ यह सुन्दर
न इतिला उन्द ॥ १३३ ॥

कुंजीलतिका दल फूलि फली सहि चाँदनि दाय
मुहान्न नैला सजेनव सातहि जायलरवी तहें चिन्ह
गयाँ चलि कीतु मुहैना जरे वन वासकि आह कड़ी अँ
गी तारि चाँगु भँभागि संकेना बड़ा अधिकार कहै अति

उक्ति सकेतहि स्तनवतीअनुसेना१३४॥ इति परकीया ॥

सदलहली फलीलता कुँकी सुन्दरी राति में चोंदनी भूमि में छाया रही है अंगारसजि गर्दतहाँमिष आवन के चिह्न बनेमित्रनहीं है तासमय वामकी आहकड़ी तासों वनजरि गयोअंशु संभारि नासकीताते नदीबहीइत्यादि बड़ाअधिकार ताते अत्युक्ति अलंकार भीतहैं आयोआपुना गर्यातेतासो अनुसेना सातहि जाय सात जन पर्यगन ॥११॥११॥११॥११॥११॥ ११॥ यह वामछन्द है ॥ १३४ ॥ इति परकीया ॥

अथ गणिका गानिका गान में जो प्रवीनी करे पंचकीनायका चाहलक्ष्मीधरे योगते कल्पनाये निरुक्ती भनैहाव भावे रचारी मनै मोहनै ॥ १३५ ॥

अथ गणिका गानमें जो प्रवीगाता करेताको गणिका कही लक्ष्मीवान् की चाहताते पंचनकीनायका है भावभाव रचि मन मोहि लेत इहाँ गणिका नामहीमें अर्थ कल्पना ताते निरुक्ति अलंकार लक्ष्मीधर चाहते गणिका रचारी गान चारि ॥१११॥१११॥१११॥ यह लक्ष्मीधर छन्द है ॥ १३५ ॥

वीति निशातहि भागजहाँ वसिभोर सुमन्दिर आगमने आलसगात कुचांक हृदै मिलिसेज रमेकि तबैनसनै नायकनाहि कठोर हिये रस जानत नाम् ख प्रीति अने सोप्रतियेध नियेध करे निशि रंबडत बारबधू बरनै ॥ १३६ ॥

वाकी बड़ी भाग्य जहाँवासकरि राति विताय मेरे मन्दिर को भोर चाये हो आलस्य तन में कुचनके राग उर में काह मंग मिलिसेज में रमे अबधीरा क्यों बोलत नायक रमिकनहीं हो कठोर हृदय में अनीति सुखमें प्रीति नायक अर्थ में नियेध अर्थ

करोर अर्थ करी ताते प्रतिवेवा अलंकार वाकी भाग्य ते चायने
 धनकी इनि ताते गरिाका खसिडिता सातहिभाग सात भगन
 गुरु ॥१॥१॥१॥१॥१॥१॥१॥१॥ यह मंदिरा चन्द ॥ २३६ ॥

लैधन धाम तनो मनको गहि मै न सरोरन चाह न
 चाव भासत गोल कपोल कटाक्षन मारत वारा ननेन
 नघाव चन्द सुखी तव चन्द सुखी जब नायक नैन च-
 कोर बनाव सेविधि सिद्धिहि साधत अर्थ स्वधीन पती
 गरिाका सुगनाव ॥ २३७ ॥

मैन की सरोरन ते नायक की चाह को न चाय धन धाम त-
 न मन सब गहिलेइ शोभायमान गोल कपोलन पर कटाक्षकी
 करि नयन वारा मारि मारि उर में घाव करि देत चन्द सुखी तव-
 हीं चन्द सुखी है जब नायक के नेत्रन को चकोर बनाइ लेइ
 इहाँ चन्द सुखी सिद्धिपद को पुनः साधी ताते विधि अलं करि
 नायक नयन चकोर बनाई याते स्वाधीन पतिका गरिाका भा-
 यका भासत गोल भगन सात गुरु लघु ॥१॥१॥१॥१॥१॥१॥
 यह चकोर चन्द है ॥ २३७ ॥

सजे घट भूषणा श्वेत मगी सुसुखी मुख दर्पणाले दूरसी
 लखे छवि मोद बढो हिय चाह धनो मन भीत गहै नि-
 कसी चली मग जात जगै नगलागि निशासित चंच-
 मिले सरसी मिलै मग कारणा कारण हेतु भनै गरिाका
 अभिसार प्रसी ॥ २३८ ॥

अंत मगानके भूषणा श्वेत मसम धारणा करि सुन्दर मुख
 दर्पणा में देखि चायनी छवि मन में मोद बढो मीतके धन मन ले-
 ने की चाह करि घरते निकसी मगी जात में नगजग मगाइला
 गि चन्द्रमा के चाँदनी राति मिले शोभा सरसाइ गई इहाँ छवि

नायका माव मुआट भगनः ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ यह किरीट छंद है २४० ॥

वरवधु सखिहि पठय नायकदिग कह जब अपन
 प्रसित है शशि माल लय कहत तव शशि मुखिनय-
 ननलिन भानु न उदय अवहि सिधिसधकहिलय अम-
 ता पररति दुखितहि ॥ १४१ ॥

अपत्ती सरदी को बुलावन हेतु नायक के पास पठाई तहाँ-
 आपही भोग करि चन्द्रहारलाइ कही हे कमल नयनि अबहीं
 भानु नदीं उदय होत नायक नहीं आवत ताकी दशा देखि दुखि-
 त भई ताते अन्य संभोग दुखिता गनिका सिद्धिकाज साधक
 भोगी ताते अमता अलंकार ननलिन भानु नगन लघु नगन
 भगन है नगन ॥ ११ ॥ ११ ॥ यह चन्द्रमाला छन्द है ॥ १४१ ॥

अथाई सम निशि सेज गई जु सीदती बकने को-
 ध सभारि लागिती तजि सुंदरि मैलिकाच है सुअ-
 युक्ता उत्कंठिता कहै ॥ १४२ ॥

गति नीती नायक ना आयो दुखित है जाय सेज पर बकने
 लगी याते उत्कंठिता सुन्दरी को छाड़ि मैली को चाहत याते
 अयुक्तालंकार सिंगे जैग है सगन जगन गुरु ॥ ११ ॥ ११ ॥ पहिले
 तीजे चरगा में सभारि लागि सगन भग न रगन लघु गुरु दूसरे
 चोयं चरगा में ॥ ११ ॥ ११ ॥ यह सुन्दर छन्द अर्द्ध सम है ॥ १४२ ॥

सिलन नरयना फिरी दुस्वारी निजजरिगै सहि
 पुष्यिताग्रवानी सुखहि सिलन सो गताहि सव्धा सु-
 भ अनुयुक्त अयुक्त विप्रलब्धा ॥ १४३ ॥

जैनें गार्द नायक नाहीं मिलीं दुखिन फिरी ता विरह ते स-
 व्धागन अर्द्ध जरी याते विप्रलब्धा सुख के स्थान दुःख ताते

समुद्र नयन्त सुख मृदु सुखक्यानि सुख भानन म-
 गृह जाल आवृगी मिलीतनै नैनकासि नैनमदसा-
 नी तिलो समुद्र सुद महा मंजुल दसुखर मजीरने भूरि
 सुख संन साल मांतात मलिन साल मोल लेत मन लाल
 लानि साल जौवने समुखर एक अचैवार जो धनी-
 कहत उपनागरी करति गनिका भनै ॥ १४६ ॥

आपना जौवन साल सानिताके मोल पै लाल को मन
 रंत तांतें गणिका की रति बरान इहाँ सकार एकही बरणा
 की आरति पदकी आदि में ताते आदि पद चतानुप्रास माधुर्य
 युगाकी आशैलें समुद्र शब्जते बरान ताते उपनागरी का
 रति ॥ १४६ ॥

कोट पद चटकील चोटी लटलटकील कुदिल
 कदास कीलरबनि भौंति भौंति नै भृकुटी विकट तट
 ललित ललित पट दीका देदि पाटी घट सुभदत दंकिनै
 छटा शाल छटक सुलटिकदिलटक पटक पदकी भमा-
 कस्यती धनै भनै संविलो समास लूप ओज साटवर्ग
 लूप रति परुषा सरूप गर्व गनिका भनै ॥ १४७ ॥

जरी आदिसों चटकील पट माई अगम कोट में वास चोटी
 की लदश कदास के तकनि अनेक भौंति वेदी भृकुटी तटल-
 नाट पर सुन्दर दीका देदी पाटी तट तारकादि सब सुभद है तन
 की चतक भानन की छिटकनि लीन कदि की लटक नूपुरसु-
 त पंजकी भनाकते नायक का धन मन लटत यातें रूपगर्वि-
 ता गनिका इहाँ वर्ग एकही की आरति पद अन्त में ताते
 परान्तर चतानुप्रास ओज युगा की आशैलेंक सन्धि समास-
 वर्ग वर्गान तांत परुषारति हैं ॥ १४७ ॥

रमत अनतनत हित नित इत रत समतन चित व-
 तलरवतन आन है सुदित करत बात बनित गहत जा-
 त बुमित भरत गात उरन अधान है रहत कपोत गति
 त्रिधित तदपि अति निरत सुमति गति रति अधिकान
 है सरल वरणा हित विनहि समास वत कोमला प्रसा-
 द प्रेम गर्व गनिका कहै ॥ १४८ ॥

कपोत गति रहत ताहू पर प्यासनहीं जातयाते प्रेमगार्भि-
 तातकार एकही वरणाकी अनेकावृत्ति पद अन्त में ताते परां-
 त वृत्तानुप्रास सरल वरणा प्रसादशुभा की आसै लै वरग्नन
 ताते कोमलावृत्ति ॥ १४८ ॥

जमकजमक ललनग निकतकत मनचुरग नि-
 त विनवित विनवित मिलन मिलन हित हित १४९

मन अचुराग के बरा ताते जमक जमक कहे बार बार ललन-
 न को गणिका तकत है विनवित कहे विना दीर्घ नहीं मिनि-
 सकत सोई हित के मिलने हेतु नितही नितही विनवित कहे
 विनती कीन करत ताते अचुरागवती एक शब्द डे बार ताते जमक
 अलंकार ललन है लघु नगन ॥ १४९ ॥ जमक छन्द दोहरा पद ॥ १४९ ॥

जग कीरति कीरति कीरति जागहि जागहि जा-
 गहि जागहि तामग मग जावत जावत जावत नाम-
 हि नामहि नामहि नामहि ताठग मग त्यागहि त्या-
 गहि त्यागहि रेगहि रेगहि रेगहि रेगहि रेगहि रेमग मगना
 ठललाटहि आहत पाद्यथा सुखदा सुखदा सुखदा
 जग ॥ १५० ॥

जग में है जिनकी कीरति सेसे जो भगवान् तिनकी गति।
 कहे प्रीति सहित कीरतिआ जो राधिका जी तिनको उरमेग

जागहि जिनको गहि कैं जागते हैं जागहिता सुनेश्वरलोग तिनकी
 मग चलनरकादि जावत भगै है तिनकी तजावत कहे बुड़ा देत जि-
 न भगवान को एक नामही नामहि नहीं तो भूमि विषय नामहिं
 तुम्हारे नाम को नामहिं नवाइ देंइरो ताके टग कामादि तिनको
 त्यागाहि रे मन टग त्याग बैराग्य सोई त्यागाहि रे तरवारि गहि कैं रेग-
 हि चलहि रे गहि रे गहि रे संग साधुन के सग नाट सहित अंग आठ
 सायांग दराउं वत करि आपने ललाट को तिनके पादन में आचति
 कैं बार बार नबाउ यथा आपने सुखदाता को चाही यथा उनको सेवा
 करि सुखदाता हो तब तो को सब जग सुखदाता होइहि पदकी आच-
 तिताते लाटालु प्रास अलंकार सग नाट ललासगन आठ है लघु ॥ ५
 ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ यह सुखदा चन्द है ॥ १५० ॥

वनजलमधिरिषु गहत विकल अति गत क्षरा
 सायुग नाम लय भो काजै गजराजै सकल सुखसद-
 न जिहि अवध सरिस घर सरिता सरयू विमल सुता
 के तट राजै दरश परस जल विचरत विहरत थल हरि
 पाप हृताप हृत्रि भंगै चौ फल साजै चरित विशद जिन
 कर सुनि सुद भल तन समना पुनरोक्ति वत आभासे र-
 घुराजै ॥ १५१ ॥

वन में जल मधि पैंटे ग्राह्य पकरि लिये तब ऐसे विकल भये जो एक
 क्षरायुग सम रायो ता समय जाको नाम एकही द्वारले गजराज को काज
 निहि भयो संगो नाम है मत्र सुख को सदन अयोध्या में मा धाम तातट
 निरमल सरयू नदी जा थल वाम मंजनादि पाप इति त्रयताप नासि
 चारिउ फल साजि देत तिनको सुन्दर चरित सुनि तन हृ मन में आनन्द
 होत भोगे जा ग्युगज तिनके रूपकी आभास पुनरोक्त वत है जाके देखने
 की चच्छा बागम्बार रानी रत्न तट हौ वन शब्द जल शब्द घर सदन सुख सु-
 विमल विशद भनादि शब्दन में पुनरोक्त असभासत अरु है नहीं तने
 पुनरोक्त वदा भास अलंकार छन सा युग नाम लय छानगन हैं

सगननगन मगन लघु यगन ॥ १५१ ॥ इति नायका नंकार ॥
 यह त्रिभंग छन्द है ॥ १५१ ॥ इति नायका नंकार ॥

अथ काव्यलक्षणा हाव भाव मय सुंदरि सकल
 गुरान भरी अवगाह भूषणा पूर्या लक्षणा निरखि
 मोहि रहयक विनाह ॥ १ ॥

अथ काव्य लक्षणा गुरायुत दोषरहित शब्द अर्थ सुंदर
 इति चारि अरु प्रसिद्ध चित्र अवगा स्वप्न इति चारि दर्शन चारि
 छन्दन में चरणान है यथा हाव भाव मय अवगाह गुरा सुन्दर
 पूर्या भरी काव्यलक्षणा देखत ही कवि मोहित होइ सो गुरा
 युत काव्य अरु हाव भाव मय अवगाह भूषणा सम्पूर्या भारी
 ऐसी सुंदरी नायका को देखत ही नायक मोहित होत या में
 प्रसिद्ध दर्शन है भूषणा १२ पूर्या १५ बारह पन्द्र सत्ताइस मा
 त्रा की गाह छन्द है ॥ १ ॥

द्वादश विषम दश आठ सम दोषरहित लक्षणा
 अवगाहा काव्यरमणिलिखि चित्रहि देखत मो-
 हिरहत मन कवि नाहा ॥ २ ॥

विषम सम आदि जो दोष ताते रहित अवगाह लक्षणा युत
 विचित्र काव्य देखत ही कवि जन मोहि गहत याते शेष रहित
 लक्षणा पुनः दोष रहित अवगाह लक्षणा युत नायका को बिच
 ह देखि नायक मोहित होत याते चित्र दर्शन विषम कहे इद
 म तीसरे चरण में बारह मात्रा सम कहे दूसरे चौथे चरण में
 अठारह मात्रा बारह अठारह तीस मात्रा की उगाह छन्द है ॥ २ ॥

कविनायक सुरवशब्द सुलक्षणा सुनिगाहारी मनक
 वीसा देखन चाह काव्य सुमती सकल पद परमत ईसा ३॥

मुन्दरशब्द सुलक्षणा कविनायक के सुखते उच्चारणा होत-
 ती अपरकविन द्वारि भामिलियो ता काव्यके देखबेकी चाह
 करि सुमति जन ईश्वर के पदपरमत की ऐसी काव्य देखबे-
 का मिलेयाते शब्द मुन्दर लक्षणा काव्य को है पुनः नायका-
 के मुन्दरलक्षणा अपरके सुखते सुनतेही नायक को मनद्वारि
 देखबेकी चाह करि सुमतिते अनेक उक्ति करि ईश्वर के पदपर-
 मत ताते अबरा इरशान ती सकल पद परमत ईश प्रथम प-
 द १ कला दूसर २ कल यह गहा छन्द ॥ ३ ॥

मत सत ईस सुमती सकल लक्षणा अर्थ विगाहा
 सपनेह काव्य नायका देखत मोहिरहत मन कविनाह
 नामें सत मत होइ ईश्वर चरित्र होइ अर्थ में सुमति के लक्ष-
 णा होइ ऐसी काव्य सपनेह में देखे कवि नायक मोहित होत
 याते अर्थ मुन्दर लक्षणा काव्य को है पुनः सत मत सकल सुम-
 तिबारी नायका को सपनेह में देखि नायक को मन मोहित
 होत याते स्वप्रदशान मत ईस सुमती सकल प्रथम पद सता-
 ईस कल हूजे ती सकल यह विगाहा छन्द ॥ ४ ॥

दीन्ही शक्ति सुप्रीति चित होय नायक का बीस-
 बि सुधि गाय गुरा रावरे न चेटा विस्वा बीस न चेटा
 विस्वा बीस चतुरता चित वनि लीन्ही चित पति लाग
 मुकयन बुद्धि इउ गुरा गरा भीनी सतत नेह अभ्या-
 म बड़त चेटा हरि लीन्ही करि दोहारे लाग चित कुंड
 लका दीन्ही ॥ ५ ॥

अथ काव्य को कारण चितताके कारण तीनि सक्ति १ वि-
 तपति २ अभ्यास ३ अरु प्रीति लागे हंसिवा राइबो आदि अनेक
 चेटा होत सोया छन्द में यथाहे ईश्वर जाका आपुने शक्ति दी-

न्ही सो आपही कवीश्वर है गयो चित्तमें प्रीति रीझी ताते लोक की चेष्टा नारही विशुद्ध है आपु को गुणागान करन लगो प्रेम शक्ति की चितवनि आपु में लगी ताते लोक की चतुरता जाती रही ईश्वरार्थान ते शक्ति कारणा है लाग कहें चित्तमें चोप भयो औ बुद्धि रोज मिलि गुणागारा काव्यादिकान में मगन भयो ते काव्य करवे की गति भई ताको वितपत्ति कर्मी औ सदैव न ह लगाइ पढ़न पढ़त विद्या बड़ी ताको अभ्यास कर्मी पुनः प्रीति की शक्ति ते नायक कवीश्वर है हे नायका रावरो गुणागारत में विशुद्धि भयो ताते पूर्व की चेष्टा जात रही गक टक चितवनि लागी ताते चतुरता जात गही लाग कहें चोपते वितपत्तिकहे गुणाकथन बाढ़ि गयो ताते रोज की बुद्धि गुणागारा में भीजि गई सदैव नेह के अभ्यास ते नायका की चेष्टा हरि ने लीन्ही रोज लाग करि हारे ताते चित्त कुण्डल में लागि गया पुनः दोहारोला मिलि कुण्डलिका चन् है ॥ ५ ॥

मान प्रयोजन यशहि जगत निज काव्य विभावत भूषणा सम्पति प्यास काव्य हरिनाथनुभावत प्रमानंद जयदेव गाय जस सात्विक धारी विचरत जगद्वा करन काव्य के सब संचारी बसि सदा राम पद कमल मन तुलसि भक्ति धाई लही चौचतुरविंशत्सु बिंदा है त्रैजनाथ घटपद सही ॥ ६ ॥

यश सम्पति आनन्द जगत राम बसि होवो इति काव्य प्रयोजन औ विभाव अनुभाव सात्विक संचारी म्पार्थ इति भाव राम के संग है यथा मानसिंहारि कवि है जगत् में काव्य विभाव उदीपन करत तिनको यशही को प्रयोजन है भूषणा हरिनाथ एक एक कवित्त पैलाख लाख रुपैया पाये ते काव्य अनुभावन कविन के मनमें आनन्द बढ़ावत तिनको सम्पति को प्रयोजन

इं जय देवजी हरियश गावत प्रेमानन्द संगेसांचादि सान्त्विकहो
 तत्तिनको आनन्दही कां प्रयोजन हैकैसो दासआपनी काव्य
 में अनेक बातें बरसानकरे जो संचारी भावसी जगमें बिचरत-
 याको देखतही सबको मन बसिहोत यथा खानखानाबीरबत्
 रन्दर्जात जन्मभरि बश रहेताते इनको जगबसि हांवां प्रयोजन
 है मुलमीदाम भक्ति स्थाई करि प्रभुपद में मनलगाय इनको
 रामबसि होवो प्रयोजन है चौबीस कला के चारि चरणा अष्टा-
 रसभावा के इयह छपेछन्द है ॥ ६ ॥

प्रभुसंमित शब्द जु वेद सर सरस लहत अचगाहि
 न जाहि सहृदसंसति अस्ततादिषा बहू भावन कह-
 वतीस दिनताहि ॥ ७ ॥

चारि भाँति कहियो प्रभुसंसत यथावेद चारणी सर्वोपर।
 गुरुता तथा रसको रूपजे अचगाह न करत ते लहत दूसरो सु-
 हृदसंसत यथा स्वतादिहितोपदेश तथा भावनकरि कविती-
 सहृदिनकहन वेद सरस रसचारि छाक चौबिस छतीस भावा
 प्रभुचदल चर्त्तामभावा इमेदलगाहिनिछन्द है ॥ ७ ॥

कांतासमित काव्य पुराणो युवति सकल यकरमि
 क राजर्हार बालमीक आदिक कवि सिंहनि कहितीस
 दिन भावनरस भरि ॥ ८ ॥

तासरो कांता संसत प्रिय चारणी काव्य पुराणादि तथा-
 अनेक नायका रमिक गज हरि सकनायक चतुर्थ सर्वापकारक
 आगम बालमीकादि कवि सिंह भविष्य वक्ता तथा भावनभी
 भरि कविजन रसचरणा प्रयमदल कला ३२ इमेदलकला ३१
 सिंहनि छन्द ॥ ८ ॥

शब्द तन गुरां गुरा भूयरां भूयिता नारिश्चालंब

पीरासमाही कोकिला मोरपिक शोरको अर्थ तन-
सूक्ष्म उद्दीपन फूलजाही दिशादिशिदशौ शतबा-
सकादम्बकी भूलिये भूलजातासपाही व्यंगजिमि
जीवरस मूलवी भावतै होत अंगार मृदुहासमाही ६

शब्दकाव्य को स्थूल तन है गुणा प्रसादोज माधुर्य मंडरु-
गा है देशकालादिसंभारि काव्यकरिबो भूयगा है श्री पति
संग रामादिनारि को आलंबन विभाव है श्री अर्थ काव्य को
सूक्ष्म तन है श्री कोकिल मोर कोयल आदि को शब्दयुतवन
फूलादि उद्दीपन विभाव है दक्षिणा नायक प्रति नायकाकहत
की कदम्ब कहें ममूहनारी दशौ दिशा में है तिनकी वासना-
शै करी भाँति की तुम्हारे है तिनपास भूलना भूलिये मनदोग-
इये इत्यादि व्यंग काव्यको जीव है तयारस को मूल विभाव है
दिशा दिशि दशौ शत सैंतिस मात्रा को भूलना छन्द ॥ ६ ॥

आयेपरिशर्मलाल पूस निशासेद जाल उत्तमक-
विव्यंगहाल सात्विक यहगाई व्यंगवाचमध्यममा-
मानसमधि मोद बसा बारबारबारदशा चंचरीकताई
नेन बैन चैन मित्रलखनन खन कर चरित्र काव्य और
शब्द चित्रसानुभाव काई सतुतन मन अहाज्य मध्यमो
तसो चतुर्ज्यजान और कवि मधुर्य अर्थ चित्रभाई २०॥

उत्तम मध्यम अधमतीनि भाँतिकव्य श्री सात्विक मानसि-
क काइक अहाज्यचारि भाँति अनुभाव यथा बड़ी परिश्रमकरि
आये ताते पूस कीर्ति में पसीना आयो यह व्यंग उत्तमकाव्य
श्रीसेदादि सात्विक अनुभाव है चंचरीकताई दशा तुम्हारी बार
बार यथा भौर अनेक फूल चाहत तथा तुम अनेक नायकाका
हत यह व्यंग बारबारबार यह वाचक व्यंग चंगरि ताते मध्यम

साव्यमनमें मोदवमायह मानसिक अनुभाव है नयनन की ल-
खनि में चंचलता बयनन में विह्वलता तनमें नस्वारि चिह्न।
यह काव्यक अनुभाव है तनमें सात्विक मनमें आनन्द बचनमें
चातुरी यह अहाज्य अनुभाव है नयनबयनचयन नखनलखना
दि शब्दचित्र है तनमें सात्विक मनमें आनन्द बचनमें चातुरी
यह अर्थचित्र है ये दोऊ चित्र अधमकाव्य है ३१२ बार १२
बार १२ दशा १० मात्रा ४६ चंचरीक छन्द है ॥ २० ॥

स्तंभयकेयुसेदयसेयुप्रसयनसेयुसुनिवीनाधु-
न्यात्मकरा रोमांचतनापैवेपयुकापैरागसुनापै
कानजबैवरणात्मपरा बोलैसुरभंगा विबरणाअंग
आशुनगंगाधार बहैमनअर्थधरा भवसात्यदशाठ
ठरससिधिरामठ धुनिवरणाथ्यठ तियमनहरिबनि
मदनहरा ॥ २१ ॥

सुनाय सो शब्द सुभायसो अर्थसोशब्द है भाँति वरगा-
त्मक सुस्वतेध्वन्यात्मक बाजाते स्तंभादि सात्विक भावयथा
यकित्त दोबो स्तंभ १ पसीना होवो सेदशनसा सोहोवो प्रगाय
३ बीणाको शब्द जोध्वन्यात्मक ताकेरुयतेही वरगात्मक श-
ब्द सुरतेराग उच्चार सुनतेही तनपै रोमांच भयेवेपयु कन्न-
तनकापि उदीताको अर्थमनमें धरतेहीस्वरभंग भयोबोली-
नसकी विबरणा भयो अंग चेष्टा जातीरही आशु भयो नेत्रमें
जलधार रहीध्वन्यात्मक जो बीणाको शब्द वरगात्मक जो
गातशब्द ताको अर्थ सुभाइमदन ने द्वाररूप है तियकोमन
वर्गिनियों तातेबाठह दशासात्विक भावकीभउं सोसात्विक
गतिदि करताके माँत्रेयया यदससो रामठहीग दशा १०४
४४मई मिति ८ बालिम मात्रा की मदनहरा छन्द है ॥ २१ ॥

धृतिगर्वमतिहर्षमदआसुयाभयं चपलतानिरखत

अमउग्रतामाहि तिहिवासउन्माद आवेगविवाद
 जड़तास्मृहीनअपस्मारचिंताहि मरनौत्सुकशंकङ्गी-
 ग्रानिवीतर्कवसि व्याधिवीबोध सुति मोहनीदाहि ।
 अलमावही थंगवचलस्य काव्यंगतितशब्दमंचारि
 निशिदीपमालाहि ॥ १२ ॥

वाचक व्यंजक लक्षक तीनि भौति शब्द चो तेंतीस सं-
 चारी भाव के नाम यथा धृति १ गर्व २ मति ३ हर्ष ४ मर ५ अ-
 स्मृया ६ अमर्ष ७ चपलता ८ निरवेद ९ अम १० उग्रता ११ ज्ञा-
 म १२ उन्माद १३ आवेग १४ विवाद १५ जड़ता १६ अस्मृत-
 १७ दीनता १८ अपस्मार १९ चिंता २० मरणा २१ औत्सुक २२
 शंका २३ व्रीडा २४ गलानि २५ वितर्क २६ व्याधि २७ विमो-
 ध २८ सुप्ति २९ मोह ३० निद्रा ३१ आलस्य ३२ अवहित्या ३३
 इति तेंतीस संचारी भाव उग्रता कर्म करिअम भईताचिन्ता तें
 अपस्मार मूर्च्छित हे आलस्य बहाने अवहित्या कहे विषा-
 उती है तुम्हारे वचनही में व्यंगलक्षित होत ऐसे शब्द विषा-
 तासोकहि कहतकी निशा भई दीपन की माला संचारु श-
 ब्द संचारि दश मात्रा चारि बार चालिस मात्रा की दीपमाला-
 चल् है ॥ १२ ॥

तर्क छवि आचर्य्यी रतिमाधुर्य्यी सियइच्छाधिय
 प्राराकही नहिंरुधिरगलानी उत्सवजानीजातिना-
 मसुनि रश्चरही भयद्राडुकलागी करिकंधारीसुल-
 दलि किष्का स्वरारि सही हंसिशोक विभीषणा रागा
 राविंशुला इत्याम पुराने भुषन मही ॥ १३ ॥

यदिह्य १ जाति २ क्रिया ३ गुण ४ इति चारि भेद वाचक
 में रति १ हंसी २ शोक ३ जोध ४ उत्सव ५ आचर्य्य ६ भय ७

गन्तानि च इतिस्थार्थ आठो रसन की यथास्थनाथ की अडु-
 त अविदेखि साधुरी अवलोकन में रति कहे प्रीति बड़ी ताते
 जानकीजी स्वप्ना ते प्राणाप्रिय नाम कहे यत्तरणा रक्त बधे-
 हस्त्रि देखि गलानि न भई वीरताते उत्सव बनो रहो ताते वि-
 श्वामित्र जातिनाम रघुवीर कहे द्वादकवन में राक्षसों की।
 भय देखि क्रोधाग्नि सों खलनको दले ताते क्रिया को नाम
 खरारि कहाये हांसी को शोक विभीषणा को देखि शरणा में
 गांवे श्याम रंग गुराते श्यामनाम पुरारान सो भुवन में अस्त्र
 तहे परारों १८ भुवन १५ कतीस माशा की दंडकला छन्द है १२

शृंगारसयोगी करुणा वियोगी हास वियम गुरा
 कादंगा अडुत उच्चैः शब्दादि रसमर्था समय भया-
 नक प्रासंगा करि रौद्र विरोधिन विभस देश घिन बहु
 शब्दार्थ कादंगा योगाद्यभिधा दश बसु बसु रस्य-
 ग चहि पदुमावत सारंगा ॥ १५ ॥

शृंगारादि आठो रस यथा नायक नायका को संयोग को शृ-
 गार कही जहां बुद्ध विबोग तहां करुणा कही वियम गुरासंग
 तेहासी मोड़ ताको हास कही आचर्य्य उचितार्थ तहां अडुत क-
 री युद्धका समर्थताको वीर कही भयप्रसंग को समय तहां भ-
 यानक कही विरोधत कांध तहां रौद्र कही घिन देश देखाय तहां
 विभस कही पुनः बहु अर्थी शब्द में योगादि ते एक अर्थ की प्र-
 तीत होइ ताको अविधाशक्ति कही सो संयोग वियोगासंग उक्ति अर्थ
 समर्थ समय प्रसंग विरोध देशादिकरि प्रतीत होतते अविधा
 शक्ति अरु त्रियन के शृंगारि जो भाव प्रकार होत तिनको हास
 कहीते बिलासादि हास संयोगादि अविधाशक्ति जो नाचक
 में निन्द्य शब्द है ते आगे की चन्दन में वर्णन करवदा १० व-
 नु ८ वनु ८ रस ६ वर्तमान माशा की पदुमावती चन्द है ॥ १५ ॥

संचारिविभावा सात्वतुभावा प्रहोत अस्थेया
 मनस्थ स्वपने गोपनायका काव्य अलौकिकगे-
 या लौकिकतन भोग योग वियोगा दशा शृंगारहिं।
 चैया सगहावन अविधा शब्द विदग्धा अस्थेयानेरा
 चवपेया ॥ १५ ॥

संचारी विभाव सात्विक अतुभाव अस्थायी करिरत को
 रूप प्ररगा होत सोरस है भाँति एक अलौकिक यथा मनोर-
 थिक स्वपनिक नायका को गोप इत्यादि काव्य अलौकिकता
 है चोतन भोग योग वियोग शृंगार की सङ्ग्रह दशा ते लौकिक
 रस है अगहावन के साथ अविधा शक्ति विदग्ध शब्द में यो-
 गादि ते अर्थको निश्चय पात्रय सो आगे वर्णन है दशा १० शृ-
 गारहि १६ चैया ४ तीस मात्रा की चौपे अन्ध है ॥ १५ ॥

दृगभरिता मरसास्य विलासा निजजयमाल
 योगमनबासा सुमनबागविच हरिसुखचन्द्रा भु-
 यसयोग ससुक्ति रघुनन्दा ॥ १६ ॥

विलास हाव संयोग ते अविधा यथा फूल बाग बीच कन्-
 सो सुख इहरि है हरि अनेक अर्थ तहाँ भुय संयोग ते रघुनन्दन
 की प्रतीत भई पुनः बोलन हैंसन चलनं चितवनारि बिनामहा-
 व यथा ते रघुनन्दन के कमल सुख की अविधा विलास रसि
 आपने जयमाल यहिराद्वे योगरूप मन में बसा ताते नेत्रन
 भरिनिहारती है याते विलास हाव निज जय नगन है जगन दग-
 न ॥ १६ ॥ यह तावरस अन्ध है ॥ १६ ॥

घोड़श हिं दशा साहेरिसुख हरिगीतगा मधि मे-
 थिली गुरुजन समाज सकोच मोटाइ तत्र ग्वा दगा

चञ्चली भय सन्निहित इत उतजात आवत नजरि चक-
ई सीयकी कुललाज निशा वियोगते यह जानिये
चक्रवावकी ॥ १७ ॥

सोकर अंगार बारह भूयगा युत हरि को मुख देखि गीत
गाबनेवाली जो मरपी तिनके मध्य जानकी जी के गुरुजन की
मलाज को संकोच बड़ा भारी है इत देखन की प्यास ताते नेव
संचल है इहाँ लाजते देखन की हर्ष छपावत ताते मोटाइतहा-
वहै भय रूपी सतिता के ई पार उड पार आवत जात में नजरि
नकरै सी थकि गई तहाँ चकई अनेक अर्थ इहाँ कुल लाज नि-
शा वियोग ते चक्रवावकी है षोडश १६ दिश अहाइस माथा
की मोरसोतिका छन्द है ॥ १७ ॥

नारि पिय विभूयि जात लीला तिय पति सुरात
जेनी युहि निरखि लोभि शिरसंग भलि सांग शोभि र

नारि पिय को भूयगा धारणा के गई पति तियको भूयगा
गात में धारणांत लीला हाव पियके वंनो एही देखि लोभि
जाइये तहाँ बेनी अनेक अर्थ शिरके संग भली सांहत तांत-
सांग है भूयि जात बारह मावा अंत जगन लीला छन्द है ॥ १८ ॥

राति में जाँ चूचि वाँका आइ फेरि जाइ भाथी धा-
म चाँद लंघि घेरि जाइये जु केहरा मंदि लंघाहि शत्रु-
ता अंतक पैया मिह आहि ॥ १९ ॥

राति में सोको चूचिने हेतु जो फेरि आइ हों तो जाइ भाथि
हों परबाने लुम्हे पोरि लेहें इहाँ गर्व अभिमान ते नारि नायक
को अज्ञान काल ताते विनोका हाव है आइ जाइये अंतक
नायक के शत्रुता साधत है ताते मेरो जनके हरि जानिये केहरि

अनेक अर्थ अनेकप कहं हाथी ते रावता ताते सिंह जानिये
राति में जो रागन तगन भगन जगन ॥३३॥॥३३॥३॥ यह केदरि
बन् है ॥ १६ ॥

सोवत वोपलवंग मई दिशि चो भरी पी भरि अंक
सशंक चकी भभकी डरी क्रोध भयो मन में किल किं
चित हर्ष ही चिन्ह तहाथ पयोधर अर्थ उरोजहि २० ॥

नायका सोवत ताको वोपलवंग मय सुगंध चागई दिशि
भरी है ताही समय नायक ने अंक भरि लियो तारांका डर तं
चकित है भभकि उदीकिल कहे निच्यय करि क्रोध भयो मन
में पुनः किंचित हर्ष की हाथ में पति को है यह चीन्हे तं
इहां अम अभिलाय हर्ष शोक गर्व भय मकही माय ताते कि
ल किंचित हाव है तहां पयोधर अनेक अर्थ तहां हाथ में कहे अर्थ
में उरोज भयो चो भरी चारि भगन रागन ॥३३॥॥३३॥३३ यह प-
लवंगम बन् है ॥ २० ॥

सहजै मोहनि शोभातय सी भूषणाना दुतिगो
री च्चि सिम्हार्गजलिघातनना तजि माले धरु नाचै
लसुरबै देखन देडु पिया सुनुरी वाम शिंगार प्रसंगे जानि
तिया ॥ २१ ॥

दूती बचन नायका सो तुम्हारे तन में मइजही शोभा सो
हती है जैसी तैसी भूषण करिके नहीं है गोरी च्चि चिपी जाती
है ताते अराजा लेपन नाकरु तन में माता उरते उतारि उरुप
सो माँ पन खुला सुरब देखन दे पीब कां हं वाम बचन सुनुवाम
अनेक अर्थ अंगार प्रसंगे तिया जानिये भूषणान सो निराहर ता-
ते विक्षिप्त हाव शोभातयसी रागन भगव तगव यगव भगन ॥३३॥
॥३३॥॥३३ यह मोहनी बन् है ॥ २१ ॥

यथा चन्द्रकरि राति सोदृत तथा भीत के अंक में त गोभिर्
काहे को लजाती त् भली बाल है उहाँ मुर फिरे ते भली बाल
शुव है लाजते बोलन नहीं ताते बिहित हाव है राति गरगनत
नि गुरु एक ११११११११११ बाला चन्द्र है ॥ २४ ॥

रूखरेलेन्द्रप्रभातजिसियाहि मीले चोदक
चूड़ासशि है हरि प्रिया कपीले गोप क्रिया लिंगम-
तो समुक्त तो समर्थ रामरमा रामसिया कहत है द्वि-
अर्थ ॥ २५ ॥

प्रभायास तजि सुद्रिका लय आइ जानकी जी को मिले-
तैसे हरि प्रिया चूड़ासशि दियो उहाँ क्रिया गोप है ताते बो-
ध हाव है पुनः लिंग मत ते अर्थ समर्थ समुक्त है राम गध पु-
लिंग ते रघुनाथ रमा स्त्री लिंग ते जानकी भातजिसिया ॥
११११११११११ यह हरिप्रिया चन्द्र है ॥ २५ ॥

मन चातुरि विषवैन सैन नहिं करि परज के बाँ-
ह पकरि तब नाँह भरोलै वरवश अंके कूटा मित मुख
करै सुखि गातन का रूहा मन कदंब सुख शब्द सहि-
त कहि अर्थ समूहा ॥ २६ ॥

मन सो चातुरि सुख सो बचन विय ऐसे बोलत पर्यंक
पर सैन नहीं करत बाँह पकरि नाँह वरवश अंक भगिनियों
तब तन की रूहा सुखि गई सुखते अनेकन कूटि करत मन
में कदम्ब सुख है कदम्ब अनेक अर्थ सुख गध समीपते अ-
र्थ में समूह जानिये सुख में सुःख की अंश ताते कूटा मित
हाव चातुरि वीस चौबीस मात्रा की गला चन्द्र है ॥ २६ ॥

पीतल्ये जाब सुनि करै कानैना प्रेमाती मन मद

मने मानिना पीहीलागी नभतम भासै माये कं-
काने कार्मुक जलधर्मा लाये ॥ २७ ॥

सखी कहती की पीव की सख्याको जाउ ताको कान
नहीं कर्ती पनि को प्रेम अत्यन्त जानि मन में मान मद है।
ताने मान तीनहीं है ताही अवसर आकाश की प्रकाश जा-
ती रही अन्धकार छाड गयो ताको देखि आपही पीव केगं
में लागी कार्मुक छाड आयो कार्मुक अनेक अर्थ वरया का-
नते मंग जानिये भूरा प्रेम प्रताप ते गर्व बडो ताते मद हाव
है सभामेंसा भगान भगन सगन भगन ॥११॥ ॥१११॥ यद्जल
धरमाला चन्द है २७ ॥

भासमतन गोरी भोरी है विभ्रम यकिता सेदु-
रहा में भाले लाये अंजन चकिता नूपुरगरमालाये
बाजी सुनि बनिता धावत ब्रज देशे गाई वंशी सुरधु-
निता ॥ २८ ॥

शोभा सब तन बराबर ते गोरी चकित विभ्रम यकित है
भोरी भई ताते दगन में सेंदुर भाल में अंजन गो नूपुर पाँवों माला
इत्यादि राजि बाजी सुनतेही बनिता धाई बाजी अनेक अर्थ
जनदेश ते वंशी सुरधुनि जानिये भूरा स्थान बदल वताते
विभ्रम हाव भासमतन गो भगन सः मः तः नः गुरु ॥११॥ ॥१११॥ ॥१११॥
यद् चकिता चन्द है ॥ २८ ॥

नूप जाबामवाम पूजनका मिलना आदिवाग
पूजनका शरज्यों लाग बाल दास रथी अविधार्या
न शब्दवा अर्थी ॥ २९ ॥

वाम गिबतिन की जो बाम पार्वती पूजन हेतु जानकी

जीर्ण फूल लेन हेतु रघुनाथ जी गये बाग में प्रयत्न मिननभ-
 यो परस्पर अवलोकन संक केसर भो लागो इहाँ बाग-
 सरवालादि शब्द श्लेष है तहाँ अविधाशक्ति करिके गकही।
 अर्थ की व्यक्ति याको अविधाशक्ति करी धो प्रयत्न मिलन है
 सरज्योलाग सगन रान जगन लघु गुरु ॥५१॥५२॥५३ यद् अवि-
 धा छन्द है ॥२६॥ इति अविधा शक्ति ॥

वन भूयित दिशि दश फूले योड़श रस शृंगारदृ-
 ग साफलता पीवत छ्वि छकै खेदि पलाकै मां-
 दकलाकै मनधलता लूटीरति रंगी मै न उमंगी मंत्री
 मंगी वैकलता जानै सुनिराधन स्वारथ वाधन करुनी
 लक्षणा विचुरनता ॥ ३० ॥

अथ लक्षणा जहाँ लक्ष सों अर्थ नाबने तव दिग तेगहिनी
 जे ताको खड़ी लक्षणा कही भूयित को अर्थ नहीं पाइये तव
 वन शब्द दिगते फूलो अर्थ गहि लीजे तथा फूले शब्द को मां-
 र्ह शृंगार भूयित अर्थ पाइये साफल्यता नेत्र करि देखना अर्थ
 रंगव छविकरि आसती खेदि पला करि एकटक चलता मन
 करि आनन्द इहाँ धुनि नहीं दिग शब्द तं अर्थ वनत ताते रंगी
 लक्षणा वन शृंगारादि भूयित दिग्भाव एकटक अवलोकन आ-
 इती अनुभाव हर्य विचुरन को वियादादि संचारी रति अर्थ
 है ताते संयोग शृंगार मांग प्रसा है दश १० योड़श १६ रम रं रलोत्
 मात्रा त्रिभंगी छन्द है जानै कहे जगन ना मोड ॥ ३० ॥

सुवाग प्रयोजन वंति यधारी शिवापन इति श-
 जायनिहारी प्रभाभाले है सुत फूलननेना कही।
 सि अलंब शृंगार सलोना ॥ ३१ ॥

प्रयोजन याइ बाग को गर्द पर्वत को इति जायदे

तहाँ फूल सहित दोना करि भली शोभा है ताहि देखि जानकी
 जी चकित भई याते आलंबन विभाव है तहाँ फूल दोना करि
 शोभानहीं चनि परत ताते फूल दोना सहित रघुनाथजी की
 शोभा भली यह धुनि ताते प्रयोजनवती लक्षणा है जिमुजा-
 यचं जगनयगन ॥३॥ ॥३॥ ॥३३ धारी छन्द है ॥ ३२ ॥

रस गानपुर शोभायक से सुन तो लगाहिये शा-
 यक से छउपादनलिनी के वन में बनहै रसिक उ-
 दीपन में ॥ ३२ ॥

प्रयोजनवती छा भौति की प्रथम उपादान जो परगुरा
 लीकं होइ यथा रस को गानपुर को शोभायमान सुनत शा-
 यक सो लागत इहाँ पुरमें पुरवासीन को गान यह परगुराते
 उपादान लक्षणा है कमलवन पर भ्रमर गुंजत यह उदीपन
 विभाव है ताको देखि मन रसिक होत सुन तो लाग सगन ना-
 नसगन लघुगुरु ॥३॥ ॥३॥ ॥३३ शायक छन्द है ॥ ३२ ॥

गुंजत भ्रंरा सरै लक्षणा लीला करे आनंद ही जा-
 नसी सानुभावो मानसी ॥ ३३ ॥

लारवन लीला करि भ्रमर सर में गुंजत ताको देखि उर में
 आनन्द होत सो मानसी अनुभाव हैं अबसर में भ्रमर गुंजत
 वहाँ बनत ताते कमल पै सर आपनो गुगा कमल को दियो-
 ताते इसरो भेद लच्छ लक्षणा हैगा सरै गुरु सगन गान ॥३३॥ ॥३३
 लीला छन्द है ॥ ३३ ॥

सरोजातोहि दरवेरी हगाली अन्तना जाही भुजा
 लां शायलां की लया सो जात है नाही करे छे पातु
 भावो लाउका सम्बन्ध दी नाही सरुपा शुद्ध गायेरी

तुमाला मोहिये माही ॥ ३४ ॥

जाको आरोपिये जामें आरोपित कीजेते राज पद पाडये
सो तीसरी शुद्धासारोपा यथा हे नायका सरोजाताहिंइति
मेरेनेत्र अनत नहीं जात भुजनकरि गरेमें लगावै की नयानहीं
जात तं सो उर की माला है नेत्र के तकनि भुज अर्च्ये पादिका
इक अनुभाव है नायका अरुनेत्र को कमल भ्रमर में आंग-
परोज पद बरावरी सम्बन्धते शुद्धासारोपा लक्षणा ये गी त-
माला मो ॥SSS॥SSS॥SSS॥SSS शुद्धा छन्द है ॥ ३४ ॥

कंज लोचनि रूप माल सराल गौनि सुसंद हेरती
किन हेरि तोहिं अधीर होत सुचंद त्यागुलाज अलिंग
हार्ज रसात्नु भाव चरचंद है चकोर ललारि साजि य-
थोचितो सुखचंद ॥ ३५ ॥

हे कमल नयनी रूपमाला हंस मन्द गर्चनि तोको हेरत स्व-
चन्द हरि तेरी अधीन होत तूकाहे नहीं हेरत अलिंगन की ह-
र्ज है ताते लाज त्यागु इत्यादि अहार्ज्यानुभाव है नेत्रन की क-
मल में आरोपगुरा सहित गौनी सारोपालक्षणा सुखचन्द
में आरोपकाश गुराते गौनी सारोपा लक्षणा रललारी सा-
जजऽऽऽऽऽऽऽऽऽ रूपमाला छन्द है ॥ ३५ ॥

तकतै हरि बाला विवरणा हाला मन औरै रंगतन
और गहि प्रलय समाधी फंदन बाँधी असतंभ थकित
रहि ठौर अंकुर शृंगारो मच थल सारो लगी भेन भूमि
पुलकान सात्विक अनुभाव सदसव सुत्रै दश कहि
घता साध्य वसान ॥ ३६ ॥

सात्विक अनुभाव यथा हरि को तकतै बाल के तन में और
रंग भयो मन में और रंग भयो याते विवरणा १ नेह फंदन हों बाँधी

धन की समाधि लागी चेष्टा निरोध याको प्रलयवाही श्यक्ति
 तद्वेद्यो यैरही याते स्तम्भ है ३ मेन भूमि पुलकित देह में राव
 यन्न चंगार के अंकुर उटे रोमांच है ४ इति सात्विक अनुभाव
 है अंकुर चंगार रोम मेन भूमि देह के बल उपमान ते शुद्धा-
 साध्यवसाना लक्षणा है दश २० बसु ८ त्रैदश २३ एकतीस-
 मात्र की घत्ता छन्द है ॥ ३६ ॥

घनग्यास नवलशोभि छद्विलखि लोभि भय
 चपला तनकंपरी गरजनि सुनि भद्रभोरी थकित
 मयूरी विहवल है सुरभंगरी चन्द्रमुखि चोच्चो-
 रिदिशि शशि हेरि अमकन चकोरि भोर की रुद्रमु-
 नि त्रिदश गमन साध्यवसन तिस घत्तानंद किशोर की ३०

नवल घनग्यास शोभित की छवि देखि चपला को तन
 यर यरानां सो कम्प है ५ गरजनि मयूरी थकित है भोरी भद्र
 शब्द निच्छल भयो सांगुर भंग है ६ शशि मुख नायक दिशि हेरि
 चंद्रमुखी के आंशु गिरत सो अश्रु है ७ चकोर के तन में अमकन
 कांठे सां संद है ८ इति सात्विक घन चन्द्रसा नायक चपला
 मयूरी चन्द्रमुखी नायका इहाँ केवल उपमान सुरा सहित ताते
 गोनी साध्यवसाना लक्षणा है शिव मुनि देवन को साधना
 करि ब्रह्मकरव की गमन ही तानन्द किशोर की घात देखी नाय
 यन को गानन करत रुद्र २२ मुनि ७ त्रिदश २३ एकतीस मात्र
 की घत्तानन्द छन्द है ॥ ३७ ॥ इति लक्षणा सात्विक भाव ॥

पतिवर्त अरुदा सुरगानि अरुदा धतही में नु
 चाला तनजे हंस माला ॥ ३८ ॥

यद्य अंकक मंचारी यथा पतिवर्त पर जो अरुदा हैं निवर्त
 पतिवर्त यथा यथा गायन है ताको अंकक माला इति भाव ॥

वक्त्रावैशिष्ट्यं ग है स्तीया ॥११११॥११११ रुक्मवती छन्द ॥ ४३ ॥

विचारि सपत्नि अमरुवी प्रबोधतमीत महरुवी ।
किते घरको तजि जैये निशा भरि सून गवैये ॥ ४४ ॥

सवति पै क्रोध अधिकताते आमर्ष संचारी भाव है पति
दुरभाव ते मीत सों चचन चातुरी करिकहत घर छाड़ि कहां
जाइये राति भरि सून घरमें बिताइत है इहाँ मीत को बुला-
वन व्यंगताते बोधव्य व्यंजक है जिजैये जगन द्वे यगन ॥११११
॥११११ यह महर्ष छन्द है ॥ ४४ ॥

करत चपलता घनीनारिरी प्रकटसरा प्रभा
दुरैहारिरी पटकसितन छोरती देखने करत वरगा
व्यंग सूने बने ॥ ४५ ॥

सरा में तनकी घना प्रकट करिसरी में दुरादलंति पटक-
सिधुनः छोरि अंग देखावत इत्यादि अनेक चंचलता सों चरा
देखाइ मीत बोलावब व्यंगताते बरगा वैशिष्ट्य व्यंग है घनी-
चंचलताते चपलता संचारी है नीनारिरी द्वे नगन द्वे रागन ॥११११
॥११११ प्रभा छन्द है ॥ ४५ ॥

सहि मोरको किलन कूक कानसो रहि चंद-
खि मम देह प्राणा सो सजि साज गोन पिय रैन सा-
खिनी निरवेद काकु कहि मंजु भाखिनी ॥ ४६ ॥

मोरको किल की कूक कान सों सहि वै व्यंग कीन सहि
जाई चन्द महि देखि हमरि देह में प्राणा रहि वै व्यंग नरहि द्वे यकी रागिनी
रुवी है हे पिया साज सजि बिदेश गमन कीजै यहाँ साकु नैप-
ति रोकव व्यंग ते काकु वैशिष्ट्य व्यंग मंजु भायिगी नायका चर-
मृति मानि पति को निन्दत सो निरवेद संचारी है सहि नारिरी

संज्ञासंज्ञा संज्ञा भाषिणी चन्द है ॥ ४६ ॥

गलन भरेयहिनेन क्योतिहारे हरिसुखतेयम
बुन्दजातधारे थकित रहे चुप कौन हेतु धारी मृदु
हंसि भायत वाक्य व्यंगनारी ॥ ४७ ॥

हे हरि आशु के सुखतेयम बुन्द की धारा चली तुम्हारे
नेत्र में पलाक्यों नहीं चलती कौन हेतु चुप साधि थकित-
संके रहे इत्यादि मृदुवाक्य भाषत में यह व्यंग भयो की तु-
म्हारा मन और नायका के अनुराग बश है ताते वाक्य वैशि-
ष्ट व्यंग है थकित रहिबेते अम संचारी भाव है लन भरेयल-
पुनः भः रः यः ॥ ४७ ॥ हरिसुख चन्द है ॥ ४७ ॥

स्नेहित्रास घात्रिका पीहीनश्वेत रात्रिका त
री लगेन रात्रिका ती भाष्य व्यंगवाचिका ॥ ४८ ॥

पीवहीनश्वेत रात्रि नाराच सों लागत मोको प्राणाधात
की लोभ है तातेयम संचारी भाष है स्नोघर कहि बचन
चातुरी गों सीत को बुलावत ताते वाचवैशिष्ट व्यंग है त्री
लगेतः रः लघुगुरु ॥ ४८ ॥ नराचिका चन्द ॥ ४८ ॥

सांचे सों करु जनि उग्रताई भोरी शृंगारै सजुतन
मान जास गोरी रुसेमें रहत प्रहर्षिनी वृथा है है प्र-
ताप प्रवाद व्यंगकीय का है ॥ ४९ ॥

हे भोरी तें जले में खुशी रहति सो मान में आगि लगाउ
इंगार को जनु सांचे पति सों उग्रताई जनि करु इहाँ सांचो
पति कहिबे में यह मूचित होत की भूठे पति सों नेह रावत
रहे ताते प्रलाप वैशिष्ट व्यंग है पति सों निर्दयताई सो उग्र-
ता संचारी भाव है मान जास गोमः नः जः रः गुरु ॥ ४९ ॥

5।5।55 प्रहयिगी छन्द है ॥ ४६ ॥

पिपैस्थित चट्टो उन्माद जैसे गिरै गलिन गंटे-
गात तैसे न और दिग मेरे आवयाही अकेलि रदि
हो हो द्वार माही ॥ ५० ॥

पति समीप गात सँठि गलिन में गिरत कहत मेरे लग
कोज नारहें अकेले बरोद में रहिहों पीव के दिगही फुकेत
रहियो मीत पे व्यंजित ताते और दिगते व्यंजके विचार बेन
चित भ्रमते उन्माद संचारी भाव है जै गिरै राजः मः गुरुरः गु-
ह ।5।।।555।55 पैस्थित छन्द है ॥ ५० ॥

आवेग घास डरवाग जाइहो छाया जलादिल-
लिताइ पाइहो तू भाजुरी इतन आउ संग में नारी
कहै समुझ देश व्यंग में ॥ ५१ ॥

घास के डरते आकुली ताते बाग को जाइहो तहाँ छा-
या जलादि सुन्दरई पाइहो हे सबी तू मेरे संगना आउ इहाँ
बाग में मित्र को मिलिबो व्यंजित ताते देश वैसिष्ट व्यंग मि-
त्रन मिलिबे की आकुली विभ्रम ताते आवेग गंचारी भाव है
तू भाजुरी तगन भगन जगन खान 55।5।।।5।5।5 ललि-
ता छन्द ॥ ५१ ॥

नसजन नित त्यागो विद्यादाजु है शरद ग्यन में
चन्द्रिका साजु है तरु प्रफुलित गुंजारत भंग है कह-
त प्रकट नारी समै व्यंग है ॥ ५२ ॥

हे सजन नितही ना त्यागो आजु मेरे बड़ा दुःख है उहाँ
पति विदेश जात इष्टहानि ताते विधाद गंचारी भाव है तरु-
प्रफुलित पे भौर गुंजत शरद रति में चाँदनी प्रकाश है इत्यदि

अभागिनीहसजातपितु गृह दीनता इमि भारिव ल-
घुतादिपंचनबीसबिधिसुगाइतवजसुगीत ध्वनि
अर्थोतरसंकमितवाच्यसविवक्षितरति ॥ ५५ ॥

तइहाँ रहि गृहको काज करि भली भाँति लान को मन
राखियो हम अभागिनी हैं जो पितु गृह को जाती हैं इत्यादि
दीनबचन में कहत की आदि में तइहम ते छारी द्वे अब पञ्चन
में बीस बिधिते तेरो यश गायो जायगो यामें यद्गधुनि की-
तेरी भाग्य जागी अकेले सुख बिलास करु इहाँ वक्रा नायका
की इच्छाते व्यंगकड़ी इहाँ अपनी अभाग्यता को अर्थ सपत्ति
की भाग्य को लौ रहो ताते विवक्षित अर्थोतर संकमित वा-
च्यधुनि है दुःखको उत्कर्षताते दीनता संचारी है लघु आदि
पंचबीस मात्रा की सुगीत छन्द है ॥ ५५ ॥

लखुचन्दपूरराश्वेतकिरिरी रैन भलसुख देत सुनि
अप्समारप्रस्वेदतनमें बालबिकल अचेत लघुआदि
द्वैषदविंसकलगीताहि प्रकटसुजाचि अविवक्षिते
यहिजानिजग अर्थोतरसंकमितवाचि ॥ ५६ ॥

देखु पूराचन्द्रमा कीश्वेत किरिरी रति पात्र भली शोभादे-
ती हैं यह सुनतेही बालके प्रस्वेद चलो बिकल मूर्च्छित नै अचेत
भई इहाँ चन्द्रनायका शोभा किरिरी कुंज राशि इहाँ व्यंगकी अ-
धिकारि कहिबे को घाचक आपनो अर्थ छाड़िदियो ताते अ-
त्यन्त निरस्त वाच्य ध्वनि है मूर्च्छित होबो अप्समार संचा-
री है आदि है लघु चबीसमात्रा की गीता छन्द है ॥ ५६ ॥

गोपस्थिति लोग सयानजागे गंजंघनपोत्र-
हिध्यानलागे शोचै विरहानल में विपश्चा चिं-

ता व्यभिचारि धुनी विवक्षा ॥ ५७ ॥

मयान गाय बेंद जागत ताही ममय भेच गरजे नायका
को विरत्र न सतायो ता शोच में विपक्ष आयुको जानि योत्र में
ध्याननागां इहो गरजनि त्रास सो चिंता व्यंग ताते चिन्ता सं-
चारी भाव धुनि है तिलोग मयातगन लघु गुरु सगन यगन
॥ ५७ ॥ उपस्थिति छन्द है ॥ ५७ ॥

उपचारयोऽशुशोरूपन पूजते भावते अवरणा-
कथा शिरनाय विष्णु पद गुरु ताच्यंत पावते विरह
प्रेम में सगन रहत मन मरणा मरिस जगत में धुनि भा-
व विवसित मदेव रति देरिये भगत में ॥ ५८ ॥

जें भाव सहित योऽशु उपचार करि दशोरूपन को पूजते
अपरा करि कथा सुनत विष्णु के पावन में माय नावत ते अंत
काल गुरुता मुक्त पद पावत जिनको मन प्रेम की विरत्र में स-
रा मगन रहत संसार में मृतक मरिस रहत सेसे भक्तन की प्री-
ति परमेश्वर में सदा देखियत है याते देवरति भाव धुनि है ज-
ग में मृतक सो रहिबो मगन संचारी है सोरह दश चबिस मात्र
पुरत विष्णु पद छन्द है ॥ ५८ ॥

भवश्रोत सुक्य मन सो सुजसे सुनि अवरणा सो श-
रणागत सुखद में रघुराज रति पद में ॥ ५९ ॥

भवदः स्वते आकल है शरणा सुखद सुयरा कान सो सु-
नि रघुराज के पावन में प्रीति करत हो याते राज रति भाव धु-
नि है आकली श्रोत्रक्यता संचारी है सुनि अ मगन नगन म-
गन ॥ ५९ ॥ रति पद छन्द है ॥ ५९ ॥

ननामिसे सोइ करिवालि भेद सो सशक जाती

लजिरही सुस्वेदसो हितैलियोगोदभरिमंदभा-
यिनी अलक्षकसीहिरस्यंभा सारिवनी ॥ ६० ॥

और भेद वहाने सो रौद्र करि नायका को नन्दा दुलाद नि-
यो शंका सहित जाय नायका के मुग्ध हैं स्वेदतकि आपुं उ-
सक्त जानि लजाय रहि गई ताही समय मंद भायिगीकों गीत
ने अंक भरिलियो इहाँ रस पूरसा है अरु विभावादि करन नर्ता
जानोजात ताते विवक्षित अलक्ष क्रम रसव्यंग है शंकासंचारी
भाव है जाती लजिर जगन तगन लछु जगन रान ॥ १११॥ १११११
मन्द भायिगी चन्द है ॥ ६० ॥

बुंगला बीच मसाल है तदा अधरपान भजुरी
प्रियंबदा सुमुख वीडुन हिलात् प्रस्तुते सबदलक्ष
क्रम वस्तु वस्तुते ॥ ६१ ॥

बंगला पान बीच मसाला है ताको अधरपान करु हे
प्रियम्बदा सुन्दर मुख वीडुन करिके लालिगा प्रशंसित हे
पुनः बंगला बीच मसाल बरत तहाँ लाल के सन्मुख हे अ-
धर रसपान करु हे प्रियम्बदा ब्रीड़ा लज्जा ना फरु इहाँ वक्ता
इच्छाते विवक्षित बंगला मसाल विभाव सन्मुख हांको अन्त-
भाव लज्जा संचारी अधर पान स्थाई यद्ग क्रम जानबे ते लक्ष
क्रम है वाचक ते अर्थ ताते शब्द शक्ति साधारण अर्थ व्यंग्य
अर्थ रोक वस्तु ताते विवक्षित लक्षकर्म शब्द शक्ति प्रस्तुते व-
स्तु वीडु संचारी भाव है न भजुरी नगन तगन जगन रान ॥ १११
॥ १११११ प्रियम्बदा चन्द है ॥ ६१ ॥

भोर दिन यामगत नैन सुदिता मे इच्छु यदना
भजसि लाल यह श्यामे मानत गलानि यद्रिजन

सन्सारी वस्तुद्विअलंकारतनुवस्तुद्विव्यजारी ॥ ६२ ॥

प्रभात ते पहर दिन चदा ताहू ये नयन श्रैदि रही हे इतु चरना
 नानान को त भजती हे ते थ्यास रंग हे याही ग्लानि ते मन
 में उदासी हे गतिथम चिह्न देखनो सखिन प्रति ग्लानि संभा
 री हे आलस वस्तुते थ्यास को भजिबो व्याज अस्तुति व्यंगला
 ते विवक्षित मलक्ष शब्द शक्ति वस्तुते अलंकार भजसि -
 तायाः॥॥॥॥॥॥॥ इतुवदना छन्द ॥ ६२ ॥ इति शब्द शक्ति

सुन्दरव्याहो अंतगुरु शुभगीत गावत भामि-
 नी केहि हेतु त्वर रोस पाव वितर्क करती कामिनी
 धनवन्त ससति आलसी सुनि धूर्ताही हर्ष हे स्वतः
 संभावी वस्तु वस्तु धुनि अर्थ शक्तिहि कहै ॥ ६३ ॥

अथ अर्थ शक्ति तामें जरात प्रसिद्ध अर्थ को स्वतः संभावी
 कवी कविकृत प्रौढ़ताको कवि प्रौढ़ोक्ति कही सीधी कह चूति
 ते अलंकार न दहरे ताको वस्तु कही स्वतः संभावी वस्तुतेष-
 तु यथा सुन्दर नक्षत्र में व्याह भयो शुभस्थान में बृहस्पतिकी
 न जेतु न रेसा वरपायो की आलसी सस धनवन्त धूर्त हे ऐसी
 तर्क भामिनी करती ताको सुनि नायका स्वरी भई की आलसी
 हे तो कही जायगो नहीं धनवन्त सस तो स्वर्चना करी धूर्त हे तो
 कामी होइगो नायक के अवगुण वस्तु तामें हर्ष सोऊ वस्तुलो-
 क प्रसिद्ध अर्थ ते स्वतः संभावी वस्तुते वस्तुव्यंग धुनि सखि संशय वि-
 तर्क संचारी नक्षत्र सत्ताइस मात्रा अन्त गुरु शुभगीत चंद है ६३

सासगानि तिथि अंतलौ थकि विरह तापन व्या-
 धि होत गुंज भौरन की दहे अतिगीत कांकिल सो-
 धि मीन बालका मुनि चोकि के इत पीव मोहे कौन दंग स्व-
 ता संभावी वस्तु धुनि अलंकारहि होत व्यंग ॥ ६४ ॥

अवधि मास दूरभा नक गनि विरह सो तत्र भई गैतें पंजा
 कोकिला को शब्द अत्यन्त दुःखदा भई परीक्षा को नोन गुन
 तै चैंकी की मंगो पीव इहाँ कौन भौति है इहाँ परीक्षा इति
 वस्तु में पति को भ्रम होवो भ्रान्ति मान अलंकार लोक प्रति
 अर्थ ते स्वतः सम्भावी वस्तु ते अलंकार व्यंग बिम्बादि दुःखते
 व्याधि संचारी भाव है मास १२ तिथि १५ अन्त लघु मन्त्रास
 मात्रा की अतिगीत छन्द है ॥ ६४ ॥

मोहन इत उतलीलावति सजि धांड़ श ह इरित
 अत्रनधारी सेज समर महिरति सुरवलरि गिरि रस
 शिथिल अंग घावनकारी असुधि विबोधनि द्युगा
 लस मै पल खुलत अधखुली रहि जावै स्वत सम्भावी
 अलंकार ते वस्तु व्यंग धुनि कविजन गावै ॥ ६५ ॥

इत मोहन उतनायका सोरह अंगार रूप सेत अत्र धारणा
 करि सेज समर भूमि पै रति सुरय समर लरि सब अंग गिरि
 सोईकारी घावन करि गिरे सोऊ ता अम आलस ते बिबुद्धता
 ते पल खुलि अधखुली रहि जात इहाँ रति समरदि रूपका
 लंकार सो अमिता वस्तु सरवी लक्षित करत सो व्यंग ताते स्व
 तः सम्भावी अलंकार ते वस्तु व्यंग धुनि है पला अध खुल ताते
 बिबोध संचारी भाव है योड़श दोज बत्तीस मात्रा की लीला-
 वती छन्द है ॥ ६५ ॥

शोभा इतहि जगत की रसबश इह संज परदो-
 वै बिलसत रहै रैन दिन रति सुरव नैनन मुरव चवि
 जोवै तदपि नत्रपित नेह करिय कदी रूप वरसा इर
 कोवै स्वत सम्भावी अलंकार धुनि अलंकार व्यं-
 गोवै ॥ ६६ ॥

स्वके चरा रोड गेज पर जीवन जैसे गगत की सब जग की
 गोभा गाली गोर बन्दुरि के गदिगद काहेते दिन गति रति मुन्व
 विनास में मृचन की गोभा परस्पर देखत रहत ताहू पर तपि
 नहीं होत नह करि दोक मकर्ता रूपले रहे तिनके आगे शिव
 पावती कौन है भाव गोर वरगा रूप दोक इहाँ श्याम गोर ताते
 इहाँ मय नग की गोभा यह परमरुप्या संकार ते शोभा देखतत
 रपि अघात नहीं गह विप्रोक्ति व्यंगनेहते हो वरगा सका है
 ल आगे शिव पावती कौन है यह बतरेका ताते स्वगः संभाषी
 अलंकार ते अलंकार रोवबेते सुधि संचारी है रस ई बसु देखै
 चौदह दून अष्टाश्रम गाथा की रोवे छन्द ॥ ६६ ॥

घोड़ग नवल सजि नायका उत सनसुख लाल
 है मोहवशा हउ थकि रहे सुरपुर लागि असहाल है
 उमंग बदि गगनांगना परि वृद्धि सुरतिय दंग है धु-
 नि वस्तु ते कदि वस्तु कवि प्रोदांक्ति हि व्यंग है ॥ ६७ ॥

मोहवशा नवीन सजि इतनायका उतलाल अवलोकियो
 वरग ते दोक थकि रहेताकोरोसो जाल भवोकि रस्यकी सेसी उमंग
 बदी गगन रूप आंगन में परिदेव तिया वृद्धि कै दंग है रही इहाँ
 गोभा बस्तु ताका उमंग देवतिया वृद्धि इतरी बस्तु व्यंग मोह
 वशा थके सुलोक में यह हाल गगनांगनादिक विप्रोदांक्ति
 वस्तु ते वस्तु है चितवनि आरती मोह संचारी है घोड़ग नव-
 पचीस भाषा अंतगुरु गगनांगना छन्द है ॥ ६७ ॥

वामग्रहे मान सुताहीर की नोदस्वज्ञ में मिलनि
 बलवीरकी जागि द्वियलागि मानगत पार है वस्तु
 प्रोदांक्ति ते अलंकार है ॥ ६८ ॥

गान किह अहीरकी सुतावाम घर में सांबत रहे तहाँ स्वप्न में

चुलियालात्तु ॥ ७७ ॥

तुम लायक में नहीं हैं यह वस्तु तुम नवीन नायका हो। तुमको नवीन नायका सेजपै चाही यह दूसरी वस्तु व्यंग है लोक प्रकाश अर्थ ते स्वतः संभावी वस्तु ते वस्तु व्यंग भुनिसक पद प्रकाशित सपत्ति की दर्शा विप्रलंभ विद्योग अंगार है उन्तिस मात्रा की चुलियाला छन्द है ॥ ७७ ॥

यक सुर प्रारा तु छत हम पीग प्रात समय चिह्न
साकीन्ही स्वतसंभावी अलंकार ते वस्तु व्यंग चौ-
पदलीन्ही १ ॥

हमारे तुम्हारे प्रारा सत्य मर्य एकही हैं काहेते तुम्हारे कपोल में क्षतलगी हमारे पीराहोती यह असंगत अलंकार ने तुम परारी तिया पास रहे यह वस्तु व्यंगलोक प्रकारा अर्थ ते स्वतः संभावी अलंकार ते वस्तु व्यंग सक पद प्रकाश जो शक्ति को आवते तो चिह्न वाहि को देखती प्रभात भये ते देखिलई याते समय वारो विप्रलंभ विद्योग अंगार है यही छन्द आगे है तामें लक्षणा लिखे हैं तीस मात्रा की चौपद छन्द है ॥ १ ॥

स्वातिसमेति चातकिघन उटि पीछे गुरानि दे-
अनुसारा तिय पहिले गिरति सकल देखी स्वत-
अलंकार लंकार २ ॥ ७८ ॥

धुनः तिय चातकि बिहार समय स्वाती के भेघ पीवडे ताही अवसर अन्तजाये को गुरु आज्ञा पाछे रई तिय का गित नो पहिले सबनने देखी इहाँ रूपक ते अत्यन्तशयोक्ति व्यंग ताते स्वतः संभावी अलंकार ते अलंकार एक पद व्यंग भुनिसकलाकी चौपद छन्द गुरानिदेश वारो विप्रलंभ २ ॥ ७८ ॥

नम भूयियेकदासुशयिकै हरिरालुप्त भयेजे-
 द्विदेखिके वशशापपांडुनासंगचहै कवि प्रौढो-
 क्ति वस्तुहि वस्तु कहै ॥ ७६ ॥

बियोग भूयगा नाकी रहिये समकहे साधारण भूयगा
 कारिभरु समयकुन्ता दाढ़ीभई तिनको देखिरुख्य अस्त न
 भवे देना स्त्रीपात्र शापवरा पांडुभोग करियो नहीं चाहत
 यह शापवरो विप्रलंभ बियोग अंगार है सहज अंगारवस्तु
 तैरुखिको मोहि जाबो वस्तुव्यंग समभूय कवि प्रौढोक्ति व-
 स्तुतेवस्तु व्यंग एक पद प्रकाश समकहे दूसरेचौथे भूयिवा-
 त्त शंभु प्रथम तीजे एकादश बरसा हरिरालुप्त छन्द है ॥ ७६ ॥

धीप्रवासतियहग अपूर्व घननिशि दिन वरखत
 अकरसधार कहत सवैया यदतलेश्वरल को कवि
 प्रौढोक्ति वस्तुलंकार ॥ १ ॥

पाय बिंदरा में देरान्तरवरो विप्रलंभ है बियोग वस्तु
 निशि दिन अकरस वरखत ताते नयन मेघ तें अधिक यह व्य-
 तेलका उपलब्ध यन प्रौढोक्ति वस्तुते अलंकार ॥ १ ॥

पिचकतिचकि निशि दैवद्वानल वरत देखि म-
 नइतउतजान समुभूत सुकविजानि प्रौढोक्तिहि
 अलंकार तें वस्तुवरवान २ ॥ ८० ॥

नायक चकवा तिया चकई दैवयोग दवानल संकेत
 यन में बनने लगी सो शशी है बियोग करी ताते दोज के मन
 इतइत धावत यह दैववरो विप्रलंभ बियोग अंगार है चकक-
 की अयक से बियोग होबो वस्तुदैव कवि प्रौढोक्ति अलंकार
 तें वस्तु व्यंग एक पद प्रकाशित यकलीसकलाकी सवैया छन्द है

गुरुजन की समूह सरवी तिनकीलाज देखवे की इरुघताते
नेत्रम के आगेतेलला को सराहू मात्र नहीं टारत इहाँ ब्रीड़ा
इरुष भाव की सन्धि है लारवनवार निहारत बिना तन सों मिले
तप्रिनहीं ताते अभिलाष दशा है नवसतभ सोरह मात्राजम-
कयुत भगनांत अलिला चन्द्र है ॥ ८६ ॥

गंगा मेरो रोगाय कैसे मिटैवी वेपीकीरैना
क्यों घटै विश्वदेवी गौरी गौरी सौनाहि शक्ति ।
असा है मिथ्या भावा भासाहि चिंता दशा है ६० ॥

हे गंगा मेरो रोगयह कैसे मिटाय सकौगी हे विश्वदे-
वी लक्ष्मी बिना पीव की रात्रि कैसे घटै शिव गौरी को ऐसी
शक्ति नहीं है जो मेरो दुःख हरे इहाँ देवतन सों चिन्ता अल-
चित ताते भावा भासु है चिंता दशा है गंगा मेरो रोगाहि
गुरुगः इरः गुरुः ५५५५५५ ५५५५५५ विश्वदेवी चन्द्र है ॥ ६० ॥

शुतिकर्मासनास।तेसोगी होत अचेत दशात
नखोगी अचलातन वेगवती को भाववली जड़-
ता युवती को ॥ ६१ ॥

यति विरह भूतकी करतब सम दुःख शयक यामें वि-
षाद संचारी ताते अचेत यामें अयस्मार वेगवती को तन अ-
चल यामें जड़ता संचारी हुबराति जात तन खोइ देइगी यामें
मरणा इत्यादि बड़ भावन ते भाव सबल है विभुद्धि ते जड़ता
दशा है शुतिकर्मा समासति सोगी अस असम प्रयस तीजे
अरणातिसोगी तीनि संगनांत ये गुरु ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ सम दूजेचो-
ये शुतिकर्मा भगन तीनि द्विगुरु ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ वेगवती चंद्र है ६१
शुति दशा दशा ॥

॥१५ मदन ललिता छन्द है ॥ ६४ ॥

लघुकुलजाति जावसन मैलसातिन्हें प्रीतिजो
तबहिकारके करत और बैयहै रीतिजो हसतजि
नन्दनदनजि भैजु हैरिहो जान है असुयविभस्तयार
सबलंकातामधीमान है ॥ ६५ ॥

लघुकुल जातिजाके वसन मलीन तासों प्रीति यह धि-
ना है तब हमसों करार और और कि हे अब और करणी देखि-
यत है हमें तजिजो और सों प्रीति करै तो हे नन्दनन तुम्हारे है
जीमै हमारे जान है इहाँ विभस्त रस असुयाभाव को अंगता-
ते रसबत् अलंकार है मध्यगमान नायका को है नजिभैजु।
हैरिनगम अगन भगन जगन है रगन ॥१५१५॥१५१५१५१५१५ यह
नन्दन छन्द है ॥ ६५ ॥

रहौ देखीकोऊ वसन कचमालांगमाही नहोनी-
कोलागै तुमहिं सोहातयाही यमैनासोगाये प्र-
वरणाललिताहासताही भयोगवलीमानप्रिय
उचितलंकारनाही ॥ ६६ ॥

वसन कच मालादि विगलित अंग मेंकोऊ देखी ताते र-
हो हमें नहीं नीक लागत तुमको यही सुहात ऐसे चरित ना-
यका के प्रतिवरण सुन्दर सब हालमैना गायो ताको सुनि
हासमानि लजानी इहाँ लज्जा भावहास रसको अंग ताते प्र-
योचित अलंकार हास ते गरवकरि प्रतिसों मान करी ताते ल-
घुमान है यमैनासो गाये यः मः नः सः युः यगन ॥३३३३३३॥१॥
३३३३ प्रवरणाललिता छन्द है ॥ ६६ ॥

पीसा सीसा देखी बोली लालिआरुखी ॥ ६६ ॥

भूटी सोमे माया याके साथ लेंई मसरवीं येसे करंत
रोजै बंची धूर्तकारी चरित्रे मानो पी शुर्जास्ती भावा
मासरोडो बिचित्रे ॥ ६७ ॥

पीव सहित शीशा में आपनी छाया देखी ताते आम रख
करिलाली आंखि करि बोलीकी सोमं भूटी प्रीति याको।
साथ राखत हो सोममारखरहै सेसी बात मुमरोज करंतरो
ताते छली धूर्तकारी तुमारे चरित्र में इहाँ लालि आंखि करि
बोलिवो आमरव सोमे भूटी माया यामें निखेद मसरवीं ल
जेयामें अश्रुया साथ सुखदेखन हर्ष इत्यादि भावा मास रो
डरसके अंगताते उर्जस्ति लंकारतिय कीजास्ती ते पीव
को शुरु मान है सोमें मायाया ५५५५ः५५५५ः५५५५ चित्राचंद्र
हे ॥ ६७ ॥

कलहासरोड सजि सासग्रहीता करबोति।
क्रोधसुखसुख अहीता पिय मध्यमान उर्जस्ति
तियाकी सति उग्रतासुरस भासपियाकी ॥ ६८ ॥

पीव हैंसिबे में हर्ष तामें तियरोडनो रीनत्त उसास सजि
बोवियादकर बुयेक्रोध में अमरख अहित में उग्रता इहाँ
अंगार रसाभास उग्रताको अंगताते उर्जस्ति चलंकार पिय
को मध्यमान है सजि सासग्र सः जः सः सः शुरु ॥ ६८ ॥
५॥५५ कलहंस चन्द्र ॥ ६८ ॥

सजिषोडश सुद अन्तइकर्ना जेहि उपाय कु-
लकानि विगर्ना भावसंधितिय सुकीन आई म-
नसमाहित लंकत गाई ॥ ६९ ॥

षोडशो अंगार सजिनायक यासजावे की हर्ष कुतकी

लज्जाते जाइस की ताते नायक को लघुमान औ हर्यत्री
इकी संधि ताते समाहित अलंकार सजिघोड़श अंतष्क-
स्तासोरइ कलाअन्त द्विगुरु यहपाया कुलक छन्द है ॥६६॥
इतिमान ॥

चाहौहौहीय सोप्यारेजूतुम्हारीमायाया न-
ताको छड़िये जापे प्रीति की नींदयाया नारीबेपी-
पिवे नारी रातिबे चन्द्रलेखा ॥६७॥ तो अलंकारो
भावसांतीसयेस्वा ॥ १०० ॥

अयमान मोचन उपाय साम यथा हेप्यारे जो द्याकरि
प्रीति की नीताही मया को हौइ हिये सो चाहती हौ ताको
न छड़िये काहेतेनारी बिनापीव यथा राति बिना चन्द्र
मन्दपीवबे नारीयथा चन्द्रबिनराति अंधियारी इत्यादि
साम उपायमान मोचन है दीनता बचनन में कोपशान्ति
सो धृति भाव को अंगताते समाहित अलंकार है म्हारी
मायायामः रः मः यः यः ॥६८॥ ॥६९॥ ॥७०॥ चंद्रलेखा छंद है १००

माननकीजे प्रिय सुनु भूले भागभलायाइउ
अनुकूले भाउदचंदानिशिलखिहरवी सामअ-
लंकारः ॥७१॥ ॥७२॥ परवी ॥ १०१ ॥

हे प्रिया भूलिहू मानन कीजे जब दोऊ की भली भाग्य
होती है तब अनुकूल रहते हैं यहपीव की समउपाय है तही
समय चन्द्रमा उदयहै राति में प्रकाश देखिमान छूटिगयो-
इहां हर्य भाव की उदयमानिनी नायका को अंग है ताते स-
माहित अलंकार है भागभलोया मः युः भः सः यः ॥७३॥
॥७४॥ अनुकूल छन्द है ॥ १०२ ॥

विधरराकेचन सेदमासती । थेरपदन । रिभ

आसुवालती विपद्युप्रले सुरभंगलंकृते स्वलसमा
हितदानदेहिते ॥ २०२ ॥

नायक को मान देखि नायका विद्वरणा भई सो कंचन हे
सेद सो मांती माल थिरता वसन आसूनजरि विपद्यु प्रनय-
सुरभंगादि भूषणा इत्यादि दानदेनायका मान छुड़ावा चा-
हतताते दानउपायमान मोचन हे बह्मभाव मवन मानी
नायक को अंग है ताते समाहित अलंकार है नन्नरिनः नः
जः रः ॥ १११॥ १११११११ मालती छन्द है ॥ २०२ ॥ इति उत्तम काव्यं

वासौजाताले कुसुमित लतावलिताही थलाये
सुग्रीवै राजै दशनन सुमोती नये आस्य पाये गंभैसो
मिश्रकर हनुमानांगदै लंक ग्राही याशोभाभै दान
नरसवतसा शब्द सक्तीय काही ॥ २०३ ॥

अथ मध्यम गुराी भूत यथा वासौजात चालिता आले
किहकिंदा जहाँ कुसुमित लतासर्नी थल आइ रघुनाथजी
सुग्रीव को राज है कहे कि रावणा करिके हमारी सुन्दरतिय
नेनये आस पाये ताके हेतु सोमिश्र आंगे करि हनुमान् अंग
द लैलंका गांसे भैदान युद्ध करि शोभा विजय पाई गम उप-
सा है उपमेय यथा कुसुमित लताता आस्यमेवाम स्थान में
गये तहाँ नायका की सुन्दर ग्रीव राजत आस्य मुख ने दन्तन-
ये मोती पायो इत्यादि शोभामयी दान है गम सेमे मिश्र ने
आपने अंगनायका के अंगान में है है लंक करिकर सो गति
हनुमान् मान को मिटाइ दई याते दान उपायमान मोचन है
गमउपसा मिश्र उपमेय इहाँ शब्द शक्ति सो उपसा रद करन है
ताते अंगरांश है मोती नये अमः तः नः यगनवं १११११ ॥ ११११

११११११११ प्रकृति लतावलिता छन्द ॥ २०३ ॥

छन्द गानन रो पहरन कलिका नलनि प्रकृत तप

निधनिञ्चलिका तियिधनिजुटे प्रभेदमन अरुद्ध है
अरथनतर संक्रमित अगुढ है ॥ १०४ ॥

सरासरा गनत पहरन बीति गये कलिका कहे सम्यु-
टित मानिनी वनी रही हे कमलनी नायका त् प्रफुल्लित प्र-
सन्न होतौ भ्रमरनायक धनि होइ जो अभेद पर आरुद्ध है
उतौ तिय पिय सोज धनि होउ नायक सरवी को मिलाइ लि-
यो सोई मनावत ताते भेद उपायमान मोचन है कमलनी-
कमलनी को अर्थनायका में मिलि रही ताते अर्थान्तर सं-
क्रमित अगुढगुराी भूत है ननगननगे ॥१०४॥ प्रहरन
कलिका बन्द है ॥ १०४ ॥

भानुउदै दिन सबगत पञ्चदश्यां वरवेनन
मनराउरि भेदलखाय मानगहे जलु विनतिय जन
मगवाय व्यंगत्यंततिरिस्कृत अगुढ कहाय १०५

प्रभात ते दिनगयो रातिआई आसुके बचननेमें मन-
के भेदजानि पाये संसामान किहे हौ मानों बिनां तियेजन्म
गवाँइ हौ व्यंगकी फिरितिय के लगजाउगे इहाँ व्यंगके अर्थ
याचक अर्थ छाड़ि दियो ताते अत्यन्त तिरिस्कृत्य अगुढगुराी
भूत है नायका सरवीको मिलाइ लियो सोई मनावत ताते
भेद उपायमान मोचन है भानु १२ दिन ७ घन इसमात्रा की
वरवा चन्द है ॥ १०५ ॥

किमिवचनकहै गहे रसनामने अचरज यह
जीवनो रहनो तने । हेत प्रसाद । राजित दृगदै पगे
सरितुलप प्रधान प्राप्ता रुसे लगे ॥ १०६ ॥

बचन कैसे कहै जीभको तो मनुषकरै है याके तनको
जीवन रहनो अचरज है कांहते प्रधान प्राप्ता नायक रुसे है

खनुपेच्छतियाको विलखिचोंकि भभकी हर-
हर्यानी सद्गतपांवधरिपीलपटानी ॥ १०६ ॥

रिसते पीवकी सेजपर नहीं जात ताही संसय सुकुलित
लता पर नजरि गई तैसें कामोदीपन सो चोंकि भभकी अके-
ली ताते विलयी पीवलागी चही जानि हरधी जलदी पांवध-
रिपीव के गरे लपटानी ताते तिय को उपेक्षामान मोचन है
इहाँ कए सो अर्थ पाइये ताते अस्फुट सुराी भूत है नाभजय
॥ १०६ ॥

चपलाचमकि मेघ गरजे घमासान इतचाति
कसुकारिअवरारिहोमान पति सोनभजिते म-
त्तिनदीपकीअंस क्षराकाकुशलहोतय प्रसंग-
विध्वंस ॥ ११० ॥

चपला चमकि मेघ घमासान के गर्जे औ चातिकपीव
पीव सुकारी ताको सुनिसरबी कहत की अब मानुगरि हो-
भाव की अब मानुना रहैगो याते काकु है दीपज्योति मली-
न अर्थात् मोरमयो तू पीव पास नहीं गई अब कुशलमा-
नुना रही गरजनि सुनि मान छूटिगयो ताते प्रसंग विध्वंस
सान मोचन है चाति चारितगन ॥ ११० ॥

नवल लिय सुन्दरिल्लेसजे फूलिके त्रिविधिबह
कोकिल धुनैलता भूलिके करुणा सुनु रारि यह
काल अवतंस है विपिनि तिलको मधु प्रसंग वि-
ध्वंस है ॥ १११ ॥

नवीन पल्लव लिहे सुन्दर चसफूलि रहे हैं त्रिविधि
पवन बहत लता भूलि रही तापर कोकिल सुकारत यह उत्तम

काल हैं बसंत ताते गरि ना करौ यह सुनतेंही मान चूटो
 ताते प्रसंग विध्वंस है अबतंस समय तें बसंत ग्रंगसो चा-
 चकते सुन्दर नहीं हैं ताते असुन्दर गुराी भूत है न मुनुराए
 नः सः नः रः रः ॥११॥११॥११॥११॥ विपिनि तिलक रुन्दे २२२
 इति मध्यम काव्य ॥

स्वात्या भ्रुपि प्रेम अमीपपिहा तीला भगना-
 लनलौतपिहा पीकी समिता गुरा काम दुहा पि-
 सा मन मोटन कान सुहा ॥ २२२ ॥

अथ गुरातहाँ वोज प्रसाद माभुर्य हत्यानुप्रास में कति
 आये हैं समिता गुरा औसी कर्म यथाशिक्षा स्वाती को
 मेघ पीष ताको प्रेम जल पपीहा नारि को सामको समय
 वीति गयो तो सालन पियास सहनो परी पीकी समिता गुरा
 का काम भेनु है यह कहनूति प्राचीनन की नहीं है गुराते
 समिता है ताते समिता गुरा है सिखावन ते सखिन को
 शिक्षा कर्म है मिलाभ ससा ११ ॥११॥११॥ मोटन का बंद है २२२

हँसी तो काँति गुरा सुकुता तेरे हेरे मगन सुसु-
 ता जाँचिता देह दरश दिखा मानो प्यारे हरि मु-
 नि सिख ॥ २२३ ॥

तुम्हारे कान्ति गुरा सुकुतापे घृषभानु सुता हँसी है जो
 देखने ही मगन रहत ताने जो याचना करै ताको दरश दि-
 खा दीजै हे प्यारे हरि मुनि के सिखावन मानो यात शिक्षा
 बार्ग सखिन को है हँसी सुकुता काँति दरशादि सुन्दर परन
 ग्राम्य रहित ते काँति गुरा है मगन सुमः सुः नः सः ११११
 ॥११॥११॥ हँसी चन् है ॥ २२३ ॥

बाम बाम सा बाम सबाम पीबिनती बिनती

भई ताते परनिष्ठ करुणा रस है भरिसे सरिभेया में तीनि चरणा की
समिता ताते विषम सरि उत्तम तुकांत है भारणा भौन ला
गि ॥ १२४ ॥

निज भजती गरुड रत पन्नगी सीतिया तुमवि
नवादि कष्ट सरिताहि सा भीतिया करुणा विल
म्ब है निदुर कौन तौ प्रीतिया कहत हम जाव तौ
रहन सोहिं प्रातीतिया ॥ १२५ ॥

पन्नगी सीतिया वियोग गरुड के डरते आपही को भज
ती है बिना तुम्हें कष्ट सरिता बाड़ी तामें बूड़िबे को तिया
डरती है चाके लग जाबे में विलम्ब जनि करौ जो निदुरता
करत हौ तौ यह कौन प्रीति है कहत हौ कि हम जाब सो जो
जै होना तौ मोको यह परतीत की बहनारही वा तुमना जै हौ
यह सखी को बोरइनो है इहां तिया शब्द चारिह चरणा में
ताते कष्ट सरि उत्तम तुकांत है निज भजतीग ॥ १२५ ॥

गेदत मध्य करील पिष्यारी निज जय पायस
जोगतियारी मेसुलजाय पती सक्थारं मृदुह
सिबाल स्वपनि सटारी ॥ १२६ ॥

करील मध्य कुंज रोज गये संयोग समय तिया आपनी
जय पाई तब लज जाय नायक सुसक्थानो याते स्वनिष्ठ हास
रस है नारी हँसी तामें प्रविष्ट हास है प्यारी क्यारी पदते असंयोग
मध्यम तुकांत है गोसुलजाय ॥ १२६ ॥ निज ॥ १२६ ॥

दृगपाल निष्ठ परमेश्वर भालु कीश हू लै

रथवाजिपालकी साजत जे गयंदहू वै हनुमान
पीठि मुस्लाय चढ़े पयान स्वकै लखि देवपुण्ड्र
वै कलहासनारिहूकै ॥ १२७ ॥

दृगपालन के इस परमेश्वर भालु कीश संग मेंलिया
रथ घोड़ा पालकी गजादि राजसाजतजि लंका पयान
समय रघुनाथ जी सुस्वधाय हनुमान की पीठ पर चढ़े
यामें स्वनिष्ठ मंदहास है ताको देखि फूलवरसि देवनागि
कलहास करती यामें परनिष्ठ कलहास है नद्दा लैचनेग
सुरते तुकांत ताते तिसवर मध्यम तुकांत है साजतजंगय
॥SISISS॥SISISS दिगपाल छन्द है ॥ १२७ ॥

मोहनवनिनारी सरिनशृंगारी दरदशिरद
शूषरा निरसला शुरा रूपहि माती द्याकरनाती
हसनजरीजरिउज्जला देखीपियायाही दिशिव
सुधाही सुवनतिया असदुरमिल्ला भेंटतउरजानी
प्रियासुखव्यानी हंसी तालदय सबवाला ॥ १२८ ॥

मोहननारी बने निर्मल शूषरानरय शिरद सरिन
शृंगारी शुरारूप मातीनेत्र कानादि अतिमुन्दर जरी क
उज्जल बसनधारे सरवी कहती है प्रिया देखो रेमी तिया
सुवन में नहीं मिलि सकत है ताको मिलत में प्रियाजानी
इसव्यानी ताते स्वनिष्ठ अतिहासतारी है सब सरवी हंसी-
यामें परनिष्ठ परिहास है जल्ला मिला बालादि ने दुर्मिल म-
ध्यमसुकान्त है दिशि १० वसु ८ सुवन १४ वतिस मात्रा है
रु अंत हरमिला छन्द है ॥ १२८ ॥

करिदो हाथको दण्डकारणा दिजदेव हितर्य

मनउमंग रघुवीर को बद्ध सुरसमर्थ बद्ध सुर
समर्थ हमि सुहाय्य है चार रुंडडुपटि प्रचराड
डिगतन खंडित्थि कर जुभाहरिपुर संताद्यमि
सपादक्षमतरि देवर्षिपसरबद्धिज जयत्य
मृदुनिकरि ॥ १२६ ॥

द्विजदेवन के हित अर्थ रारा में कोदराड को दोऊ-
हाथन में करि खेंचतही मनमें उत्साह रघुनाथ जी के
मयो ताते असुर सामर्थन को कैसे बध करतकि एकही
चारा अमित निशाचरन के उरनाथि जात शिर बाहु खं-
डित ह्ये गयो ताहपर डिगतनहीं प्रचराड ह्ये रुंडडपरत
है जूभातही हरिपुर जो सन्तादिकन को अभिलनाही मि-
लतताही यदको अधम तरिजात ताको देखि देव ऋषि
अपसरादिजादि अमृतधुनि करि जयजयकार वदत है
इहाँ देवनयै दया वीर मुक्ति देवे में दानधीर समरते युद्ध
वीर रस सुख्य है देवहितर्थ इसुर समर्थ यदप्रथमाक्षर में
एक सुर नहीं ताते आदि अमिल सुर अधम तुकांत है दोहा
को आदि कै तापै दंडिका करन द्विज द्वैगुरु चारिलधुतीनि
आहत पदमें दोहा १३ ११ दंडिका ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ अमृत
धुनि बन्द ॥ १२६ ॥

जगत सब और्थे को धायो भूपागारे मध्य
मिल धने सो गंगौ शोहाधारे प्रभुजनम में नंदी
सुखे कै सन्माने नृपति मन मोदि सो सो सर्वे ध-
न्दाने ॥ १३० ॥

सबध में भूय धाम को सब जग धायो तिन मधिलुने
रह मांगन हेतु आनन्द ते गये भूय सबको सन्मान करे प्रभु

घाटोयाम कालत्रस लागत विना लाल के मिले जातेभया
नकरस लाल लाल दोऊमें तातेजामक सुकांत है सुजासः
जः ॥ १३१ ॥ मधुमार छन्द है ॥ १३३ ॥

मेघनादपूरावरवान रविइन्द्रमदहरवान ।
दशसुखभूषपूरावलवान रुद्रवराचलवान सुव
ननिरकपुरीसुखदान निशिचरजूकिलालाट
कटिहरिशरअन्तकवान तालंकिनिरंडाभईवि-
भस्तहोदनकवान ॥ १३४ ॥

मेघनाद पूरावर पाये रविइन्द्र की मदहरागारो दश
सुख भूष पूराबली ताकी पुरी सुखद सुवन में सकाही है
तहाँ हरिके शरलागे शिस्कटिकटि निशाचर जूमे दल्य
चरा भये ताते लंकिनी रंडा भई देखे छिन लागत ताते वि-
भस्तरस है यान वान सब तुक में ताते लाटि तुकांत है प्रथम
चरगा पन्द्रह कला दूजे १२ तीजे १५ चौथे ११ पंचम १४ पीछे
दोहादे तालं किनिरंडा छन्द है ॥ १३४ ॥ इतितुकांतविभस्तरस ॥

देखत अद्भुतरूपतातको विसमितमनभा
रामभातको पूरापरंत कहत जाकला उत्तमक
विहरियश उज्जला ॥ १३५ ॥

अथ उत्तम कवि अद्भुत यथा जैसा कहत नहीं बनत से-
सा अद्भुत रूपपुत्र को देखि दौशल्या जीविसमित भई कि-
जाको उज्ज्वल यश बालमीकादि उत्तम कवि गावतकि पू-
राबितार परब्रह्म है जाकी कलाते सबजगहै विसमित हो
विते अद्भुतरस है हरिको उज्ज्वलयश कहै सो उत्तम कवि है
पूरापरंतगानांत पन्द्रह कला उज्ज्वला छन्द है ॥ १३५ ॥

सारे ज्योतिषिकाको छलत कि जल में साहसे

करी नाथे सासुद्ध मारगाननत स सुरसाको मद्
हरी वैदेहीवीधिलकै दृष्टि फिरिमन विस्मे तव
धरी गावैदेवाशु कीर्ती कवि सवि सुखजैकार
उचरी ॥ १३६ ॥

जल में छलतकि साहस करि यथा सिंहिका कोमो
तैसे संसुद्ध नौघत में सुरा मागी प्रवेश करि सुरसाको मद्
हरे जानकी जीको बोधकरि लंका भस्म करि फिरिमसुद्ध
नौघे तव हनुमान जीके मनमें विस्मय भई याते स्मनिष्ट ।
अद्भुत रस है ताको यशदेव कवि सुरवते उच्चार जयकार
करत देव यश गाइयो मध्यम कवि है मारगाननतम ॥ १३६ ॥
॥ १३६ ॥ ॥ १३६ ॥ ॥ १३६ ॥ ॥ १३६ ॥ ॥ १३६ ॥

तपै करत उक्ति उद्धृग है मनोखिंचत गंगा
धारहि गहे भगीरथहि क्यो कवी लघु कहै जलो-
द्धति गती सुजा सुयश है ॥ १३७ ॥

तपस्या करत में जप को नेत्र किहे ताकी यह उक्ति है
सानो गंगाधारा को गहे खिंचत है जाको जल संजन ते
ऊँची गति देत सोई जाको यश है ता भगीरथ को कैसे
कविलघु कहै दृष्टि ते गंगा जी को खिंचयो आश्चर्य ताते
अत्युक्ति अद्भुत रस है मानुष यश गायषो लघु कवि है जा-
सुजस ॥ १३७ ॥ १३७ ॥ १३७ ॥ १३७ ॥ १३७ ॥ १३७ ॥

प्रभावदेश लौ लगे जुराज उदार रूप सेनिका
सुसाज समिंत्र मंत्रि कौटको सपाय सुखांगराज्य
लै रसै सुमाय ॥ १३८ ॥

जाराजा को प्रभाव देश भर में जाते उदार रूप होइ

चतुरंग सेना को साज होइ सुभिन्न मंत्री कोट खजाना राज्य
सुरव के सब अंग याइबो माया रस है राज्यांग है लगे जुरा-
जा ॥ १३८ ॥ रूपसेनिका चन्द ॥ १३८ ॥

विवेकसुरवलोक मनंन्द्रिय चाह असारहित्या-
गिसुसारगहान्त गुरुश्रुतिवाक्यगहै सति चित्तय
काग्र किये दुखलौ सुखमांत सजीवन युक्त हरा
सुखद्वै वसुधास समाधि गहै शिथकांत समादि
सुसुसुतत्याग विवेक सुसाधन चारि कहे रसशां-
त ॥ १३९ ॥

त्याग विवेक समादि घट सुसुसुता इति चारि साधन
शान्तरस में कहे हैं यथा लोकन के सुख ते वैराग्य सो-
त्याग है असार जगतजि सार ईश्वर ग्रहणा सो विवेक है
मनादि वासना त्याग समहै नेत्रादि को रोकनो दम है वि-
षय में पीटि देना उपरति है दुःख सुख समान लितिसाहै
गुरुवेद वाक्य में विश्वास अज्ञा है एकाग्र चित्त समाधान
है इति समादि घट संसार बंधन ते कब छुटिहो यह सुसुसु-
तायाते दुःख चूटे आठयाम समाधि में खनाथ जीको गहै
रहै सो जीव युक्त है यह शांत रस है वसुजा आठ जगनजामें
होइ ॥ १३९ ॥ सुक्तहरा चन्द है ॥ १३९ ॥

हरिनयमालिनीनिजभयोहै सखिसंगलै प्रिया
दिग गयोहै सुमनहराल ग्रीव करदीनी करत
शृंगार हास सखिकीनी ॥ १४० ॥

हरि आपही मालिनी है सखिसंगलै प्रिया जी के
दिग को गयो कूलन को माला हाथ में लै ग्रीव में शृंगार
करतही सखी हंसी इहां शृंगार हास को कारणा है निज

आपनो पाय भोगो हास करुणा ते विरोध है इहाँ शत्रु
की नारी ये करुणा देखि कपि हंसत समय ते अविरोध है
ताते हास को कारणा करुणा रस है भासस्व भः मः सः ॥
॥ १४४ ॥

लगाते मेहिकांते को न राखै शुद्ध गाते को
समुग्धासोन प्यारी है विभत्सृंगारो नारी
है ॥ १४५ ॥

नबोदा को पीव उर में लगावत बह दुःख ते गात शु-
द्ध नहीं राखत ताके रति जख को रुधिर देखि यति को प्रि-
या लागत विभत्सृंगार ते विरोध है रुधिर में विभत्सरति
में शृंगार मुग्धारति प्रिया समय ते अविरोध है ताते विभत्स-
शृंगार को कारणा है लगाते मेलः गुः तः मः ॥ १४५ ॥

सजिसैन भट शरचाप गहिकर खडग खेंचे
चमचमाति खरदूधराहु त्रिशिरा सम करिस-
मगुहटागे विषम पाँति प्रथमै धनुष हरिकै धुनि
सुनि सुनि न सभाजे निशिचराति अरि वीर रस भ-
यना समय करि परशु धरै लहरताति ॥ १४६ ॥

त्रिशिरा सम जे हरि करिके समर करे ऐसे विषम जो
धन की पाँति आगे करि सेना सजि खरदूधरा चले धनुष
बागागहे तरवारि खेंचे चमचमात आवत देखि रघुनाथ जी
प्रथम धनुष टंकोर करे ताकी कटोर धुनि सुनते ही भयमानि
निगाचर अति वेगते भागे वीर रसते भयानक ते शत्रुता है
इहाँ समय करिके शत्रुता नहीं परधराम से वीर जनकपुर
में निरिसत गये याते समय करि वीर भयानक ते वीर अभाव

है मुनि मुनिन सभाजं सः नः सः नः सः भः जः ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ सरहदा छन्द ॥ २४६ ॥

मोहित देखि क्रोध धनु क्योँदल परिचोपाइ
 रूप योइ शकल हरि पर परशु गस विसैया अद्भु-
 तारि नहिँ रोइ समैया ॥ २४७ ॥

अथ स देखि मोहित है चोले मरे गुरु को धनुय क्योँ नोरे
 योँ कहि परशुराम क्रोध करे पीछे परचोपाय की योइरो क-
 ला पूगाचितार रूप है ताको देखि मोहित भये अंग विम्वर
 भई रोइ अद्भुत सो वैर है इहाँ ममय ते वैर को अभाव है यो-
 इशकला रूप चोपाई छन्द है इति रस ॥ २४७ ॥

भागलया गमतो को चित्र पदार्य चरि गृह
 सुभाव सुने वामे भंड रोधित नारी ॥ २४८ ॥

अथ चित्रकाव्य तोको विचित्र चारु पदार्य पंगु तेरे
 भाग्य में आगे अकार है यह मसुक्ति नारी रोधित रई ताँत
 गृहोत्तर चित्र है भागलया ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ चित्र पदा छन्द है २४८

कारिको गैल तातीश व्यालहा कौन लक्ष्मीग
 रास सैनाहि काहीक वाइ प्रश्नोत्र नारीक ॥ २४९ ॥

मारग तातीको करत हाथी को कौन मारत लक्ष्मीको
 पति कौन रासकी सेना में है तिनको का काही इति वाइ प्रश्न
 को उत्तर एक हरि रवि सिंह विष्णुवानर इति वाइ प्रश्नक
 उत्तर गैल ताती गुः लः तः नः ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ लक्ष्मी छन्द ॥ २४९ ॥

धरिगि धराह को असुर सात को जगत प्यागलां
 नव भया रवि चडि जाहि नाहि काहि काहितो कइत

अनंग शेषर छन्द है ॥ २५३ ॥

मर्तेको भयकारी होतो किहित कि लुरत भजत
पंडितै कर जो द्यता सागै में जातो ताको का कह
तलहत किहि कहते सबै धन को भृता का संज्ञा
छोटे जीवोंकी कहिक परिचर कमलवद्ध उत्तरयो
दत्ता हेरीवे पीयासीरी पौन समतन निरसल गैशु
जंगविजृंभृता ॥ २५४ ॥

मरे पर भयकारी होत सो कौन है भूत परिडितन के
करकी करी कौन वस्तु है जाके देखत भूत भागत जंत मार
ग में जात ताको का कहत गत का पाय धन धर कहों जात
वित छोटे जीवन की संज्ञा का है जन्तु परिचर को का नाम कही
भुत हेरी सखी विना पीवसीरी यवन समतन में सेसी निरसला
गत यथा भुजंग विजृंभृत् जैसे सर्प की स्पर्श पौन यह क
मलवद्ध उत्तरचित्र है समतन निरसल
गैमः सः तः नः नः नः रुसः लः शुः ५५५५५
५५५ ॥ ११११११११ ॥ ५१५१॥ ५१५ यह भुजंगविजृं-
भृता छन्द है ॥ २५४ ॥

कमलवद्धोत्तरचित्रम्



शोक देह लेत है जुताहि नाम होत को खुजात को
प्रिया लगी पिरात है पुनात हा पाय के समै सुकौन
घात जीवकी करै सुअंग पै जु होत है कुचोट पाइके
कहा कोप नैन खोलिके महेश भस्मकीन काहि वाग
दृस होत को सुगन्ध होत है महा उत्तरादि अन्तजर
सोजगो लगी सयेकती स है सदा अशोक पुष्य मंजरी दहा १५

दुःख को देह प्रदद्या करिलेत ताकां का कहत महा स्वमुखा
 त धियलागत पाछे पिगत ताकां का कहत दाद समय पाइने
 वकी घात को करत अरिकटिम चांदलांग देह पैका दांत मोज
 कोषकरि तीजो नेत्र खोलि शिवजीका दां भस्मक्रीन कासा,
 वाग वृष्णन मेंका होत जामें महा सुगंध दांत पुष्य इति आरि-
 अन्त हैद्वै वरणा को उत्तर भाए हो जग में लागत ताकां विरहि-
 नी एक तियां मदत सो काहे सो सदा अशोक सुष्य गंजरी दूत
 यह आद्यंतोत्तर धिय है गोल सकतीस गुरुलए यकृतीन ॥१५४॥
 ॥१५४॥१५४॥१५४॥१५४॥१५४॥१५४॥१५४॥१५४॥ अशोक सुष्य गंजरी चन्द्र ॥ १५४ ॥

को खर है वरणांत गहे सब जातजि आवत है म-
 उदात्तना लोगन के बतरान समै विचका विन होत सु-
 दूसरिबातना काज पढाय कह जनको विल भोतिहि
 जबिके बोलत कातना तू पल शंखल सेवत क्यों दि-
 न भोर तिया कहि मैं अरसातना ॥ १५६ ॥

वरणा अन्त कौन सुरगहे जा निना जैच खर नदीं होत व-
 बतरात में का बीच में है दूसरी बात कहत अरु काज हेतु जना-
 को पढाये पर बिलम्ब लागे जबिके का कहत अरसाहे तिया-
 भोर भयो अब पलम में शंखला क्यों सेवत तिया काहे में अन्त
 त नहीं हैं एक एक वरणा बड़ि बड़ि उत्तरताते शंखल व्यक्त न
 मस्तोत्तर है दिन भोर दिन कहे सात भगन तापै रगन ॥१५५॥
 ॥१५५॥१५५॥१५५॥१५५॥ अरसात चन्द्र है ॥ १५६ ॥

कालै जगनाश शोभकामाहि कोही रिसकोय
 अक्षमा आहि कौंती लरायल पुत्र काकीन कामी-
 द्यउत्र चित्रवानीन ॥ १५७ ॥

कारैकै जगनाश करत कालै शोभा कामाहि नाना

कोटीरिस कोही कोय अहमा आदि कोय कौंतीलरायल उव
को कीन कुन्ती विचित्र वानिन सो उत्तर दैसौं दै दोको देत वा-
निनी इहाँ प्रश्नही में उत्तर है ताते प्रश्नोत्तर चित्र है तीलरा-
यल तः लः रः यः लः ॥ ११॥ ११॥ ११॥ ११॥ चित्रवानिनी छन्द है १५१॥

ग्राह्यस्योक्तापटनपितुपकाभरना पन्नगधा-
मनामसिरिफलजमनकना रामतिकोहिमाल
यकहिधवलकिता कोपसुसासनोत्तररुतगज-
विलसिता ॥ १५८ ॥

ग्राह्यका कोयस्योपटकासोनापिये तुपकाका सो भरिये
तीनि प्रश्न को उत्तर गज पन्नग धाम को श्रीफल नामको
जमनकी नाही को तीनि प्रश्न को उत्तर बलराम की तिया
को हिमालय को धवलकाको कही तीनि प्रश्नन को उत्तर
सीतासासन उत्तरकोन पश्य करत गज विलसिता या सासनो-
त्तरचित्र है भलापन्नग भः रुः नः नः नः गुः ॥ ११॥ ११॥ ११॥ ११॥ ११॥
गज विलसिता छन्द ॥ १५८ ॥

नयनयमाहामरिगभुविमितै मनमगनैभाग्य
महतनितै सुधरमकारोअसरिचरित्रै मधुरमशयेन
कुसुमविचित्रै ॥ १५९ ॥

नवीन महामरिगी भूमि में अमित पावत, बड़ी भाग्य है ताते
मनमें मगन रहत सुधरम करत ताते चरित्र असर है जहाँ फूल
बिन्ने तहाँ शृंगार करत मकारलोपिये और अर्थनैन हानिभू-
तिमें नगन भाग्यहत्त नित सुधरौ करे तौ अरिसे होइ धूरि कु-
सुमशयणयह शरणा सुप्त चित्र है नयनय ॥ ११॥ ११॥ ११॥ ११॥ कुसुम
विचित्रा छन्द ॥ १५९ ॥

सुकरम सुगम सुवृत्ती में सुधरम शरणा सुकी-

तीसैं तिन हरिफलद्य चूकेना जनन मुकारनवि
विभूषेना ॥ १६० ॥

सुकरम आदि करनहारन को फलदेत में हरि चूकत नहीं।
सुगति करिये विसुख नहीं होत इहाँ मकार के नराव नकार
लगाइ दीजे तौ कुमारी आदि को सुगति देवेत और चूकत नहीं
हैं इहाँ और वरणा दीजे और अर्थ भयो याने इदजापर चित्र
नमसुकरननः नः सः द्वियुरु ॥१॥१॥१॥१॥ सुगति कन्द ॥ १६० ॥

तन धन सुख नहिं हीय धरो हरिहरिजीह निरा-
सुरो सहज सुखहि नित दास चरो घोर ह्मना क-
लिकाल डरो ॥ १६१ ॥

तन धन को सुख हिय में न धरो हरिनाम जीह सो रती-
यह निरोय चित्र है दास चरोदश चारि नन्दु मात्राहान्कानि-
का छन्द है ॥ १६१ ॥

जलगान हर चरणा धरत लगान कर रक्षार १६२

जब लग शिव चरानहीं गहत तव लग घर की कोरना
कोर लगान लः युः नः । १॥॥ हर छन्द मात्रा नहीं ताते अमल
चित्र है ॥ १६२ ॥

जलजनयन घन सजल हररा तन दसन प्ररत ।

गर सजतनगानलर अधर दधान कल धनन हसन
तसलसत कनक तर भालक अलक कर करजन
खनदल जलजन गन यश दश चहत अयश कल
अजरहर अधनरहतजर अनदकरत नर शरगा ग-
हतजन जशर असन धर ॥ १६३ ॥

कमल से नैत्र सजल मेघ शोभा हररा तन शंख गोभाहरन-

यारो गरनें मणिमाल मोहत चोठ दन्तसुत सुखकी हैसनि
 तंसे कानक कुंडलतर अलक की भक्तक चंद्रुरीनख जस कंज
 दस्तपेनग है तिनको दरश ब्रह्मा शिवादि देव चाहत हैं प्रर
 सन धनुषधारी की शरणा जो जन गहत सो आनन्द करत
 अरुनरन लो पापनाश होत यह अमन निरोध है बत्तिस-
 वरणा लख जलहरणा छन्द है ॥ १६३ ॥

कपिय गंगा भव पिवाक अधरु हा कहि
 पियमाक ॥ १६४ ॥

कपिय हनुमान् जी गंगाभव भीषम इनकी वाक्य है कीसा
 लक्ष्मी के पतिहर नाम लेते पाप की नाश होत पिवाक बाणी
 के पति धाता द्रवकाल में आठम भेद को नाम है धाता ॥ १६३ ॥
 वाकि छन्द है यह अजीह चित्र है ॥ १६४ ॥

लीलेलाल लालिलालिलोलै लैलै
 लालललि लैललैलैललोलै लालेलालिल-
 लिखालीलालीलिलिलै लीलै लालिलालिल
 लीलैलैलिललोलै ॥ १६५ ॥

लीले नीले लालि ललि ललललित लाने आलै लेत काला
 जलललि अलि भंवर लोल चंचल यथा नील लालि मणि मं-
 दिर लै अमर अंजजल कुहार शोभित ललिलललितलौ सहित
 ललदललौ नौ नवीन लैने अकिल ललल लतालोलै चंचल य-
 था लैलै लाल ललित सहित दल नवीन अकिल लता चंचल है
 मन्त है लाले पटने लाली लालि ललित है लाली लली सहित लै
 लीला करत है तालाल लली की लीला लाली कहे सुन्दरि है
 ताको हे अली लैले देखि लै इहाँ तवरगा के वरगा लकार को
 आगे पाइ लकार हैये लालीला ललीलै लकार पर लकारो

भवति यथा तत लिखति तस्मिन्निवति गतय गतयः ॥ १६५ ॥
लोलाच्छन्द यकाक्षरी चित्र हे ॥ १६५ ॥

हहरिहहरिहर रहि रहि हरिरर ॥ १६६ ॥

शिवजी हहरि के प्रेम में रहिरहि हरिनाम रत्न हैं।
यह द्वि अक्षर चित्र है चारि लघु ॥ १६६ ॥

धारा गिरे रागंधरा धीरै धरौ राधा रा १६७ ॥

धरा भूमि पेशारि बढ़ाये भव धारा में गिरिज्ञे ताते धागज
धरौ राधा को नाम रदौ त्रय अक्षर चित्र है गिरे गुरु गगन-
॥ १६७ ॥

सीता सतवती सेवै सब सती बासों बसुमती
सारी बसुमती ॥ १६८ ॥

सबसती इन्द्रभूमि भूमिवासी सब सीता सत्यवती ।
को सेवत है चौ अक्षर चित्र है तासु तः सः ॥ १६८ ॥

सुख सारौ सगरामै सुखरागौरसगामै ॥ १६९ ॥

सारौ सुख रागही के संगताते सुखते राम रस में प्रीति
करो पाँच अक्षर चित्र सगसः गुः ॥ १६९ ॥

रखिलाज रघुवीर खलघोर घर घोर १७० ॥

घोर खल घर घरे हैं हे रघुवीर लाज राखे यउक्षर चित्र
है लाज लः जः ॥ १७० ॥

सुबुद्धि सिद्धि साधत जुगंगजलगाधत १७१ ॥

जोगंग जल असनान करत ताकी बुद्धि सिद्धि की साध-
ना करत सप्ताक्षर चित्र है जलजलः ॥५॥ बुद्धि छंद है ॥१७१॥

भारानिद्योसनव रामशुरागावतव ॥१७२॥

नवीन भाग्य होइ तो निशि दिन रामशुरा गावबे में मन
लागै अष्टाक्षर चित्र है गनि शुः नः ॥१॥ निशि छंद है ॥१७२॥

अथगतागत यथातरगिजाबल सदा तरक
जामिनि मदा ॥ १७३ ॥

अथगतागत यथा तरगि सूर्यवंश उतपति जो रघुनाथ
जी केबल ते सदा मोहमद रात्रीपार जाबे की गति होत इति
गत निमिजा जानकी जी दास को लव मात्र आशु में प्रीति जा-
नत तो दामद्रव्य समूह देत इति आगत लसलः सः ॥१॥ तर-
गिजा छन्द है ॥१७३॥

श्रीरामास्याकारा सीतालीलाधारा ॥१७४॥

जैसी रामलीला की आकार तेसही सीता के लीला की
धारा है इति गत राधा ललिता सीसखीलै रंका शूरिमा रा-
ति में कृष्णा संग रास करत इति आगत मगनः ॥१॥ तालीछ-
न्द ॥ १७४ ॥

जगकरतानरसमरा जराहिष्टाः ॥१७५॥

हजारन यश अयश सहितनर अमरादि जग करता ब्रह्मा
है इति गत हजारन हाथी साथ सजेते बलते रंक भये जब रा-
म शरणा भये तब गज उद्धार भयो इति आगतनरस नगनर-
स वि मात्रा अन्तशुस ॥१॥ करता छन्द ॥ १७५ ॥

हेयाजविलौबैजनाथ नालौ नदीता तटजतिव

च सीतानया सरिव रावगा मरी द्वैमासवरिक ती-
 सरिहृहेरिमनांतरनिजाया हितै धीरमो वानिद
 की खरी हैरायनिदिनकल्पविरहददामिति स
 दारोष से कानसो काहुनाहिय तरी है दाहु खन
 घरिपतोरि मारुत लता करतरासान बोल पिकते
 घनाक्षरी इति गत ऋक्षनाघते कपिलवरासागर
 तरकतालतरुमारितो परिघनखहुदाहै शितयति
 नाहुकासोनकासे खरो दासतिमिदाहहरविपल-
 कनदिनियराहै रोषकीरवनिवासोरधीतै हिया।
 जानिरतनासरिहै हरिसतिकरिवससाहै शसनच-
 राखिसयानतासीचवति जटत तादीनलौ नाथनाज-
 बैलौ विजयाहै इति आगत ॥ २७६ ॥

गतमें जानकी की विरह यथा हे त्रिजटा द्वागुण्य जब
 लों बना है तौ लों नारभरि जो दुःख है सो हमको नदी से घ-
 पार है ताके तदधैटि सीता कहत हे मखी यह रावगा नामी-
 सबरी एक तीसरी है ताको माता सम माने यह आपने मनमें
 विचारि हमारे धीरुज है कि हमारे वरकी वानि रारी कहे दु-
 डहै शति दिन कल्प समविरह हइते नाहर सदा रावगा को
 रोष कान सों सुनि तता दुःखते हिया हमारो कष पार जाई-
 लतन को तोरि सुगंधित पवन जो बहत ताड़ी रंग में मानि
 पिक के घनाक्षरी बोल धरी घरी सरा सरा पर दाह करत-
 यकतीस वरगा गुरांत घनाक्षरी चन्द है इति गत अथाथा-
 गतमें त्रिजटा को ससुभाइबो यथा रोष बानर लवगा सागर
 को तरकिनाघते हैं ताल के रक्षन ते मारते हैं जिनके नखे।

परिग्रह है तिनसे राक्षसन के दाह करते हैं यथा सोन कसे खरा
 होत तैसे दास को कसिलेत यह तुम्हारे नाहकी रीति है अब
 तुम्हारी दाह हरिहै दुःख की नदी को पलक सम नियरिजाने
 ऋषि की नारि तारे ताको विचारु अथवा सोरी बुद्धि के कहे
 वचन मानु अथवा तोहं विचारु कि मेरो उरनाम में रत है सति
 करिके हरि यही नाम के बसिहै हेरी जानकी मन में समान-
 ता राखु दीनन के नाथ जबलै विजयनहीं पावत तबै ले तेरो
 दुःख है इत्यादि विजटा के बचन जलरूप विरह दहित जान
 की को सींचि हरित करत इति आगत में विजयाब्दहोत २३६

गोसकलालाकसगो गोपसुतातासुपगो २३७

यशोदा के मन में सक गई कि वहाँ मेरो लाला कसगयो
 तब यह विचारी की वहाँ गोप की सुता है तिन सों पगो है
 याते गयो गोसगुः सः ५॥५ कलाञ्जन्द है ॥२३७॥ इति गतागत

तारणाजाको नाम सदा है तिहि भजु विघ्न
 अगिनिकिमिजरता तारजपावोकी धरिमाथे
 ऋषिवरखनितनसुभगकरता तारकचक्रौचारि
 भुजाजा शरणा गहत नित सचर - ६५५॥ तारचरक्षी
 भामसभानौनलिनसद्गजिहिरचसुरनरता २३८
 इति डमरूवद्ध ॥

जाको राम सेसा नाम जगतारणा है ताको भजु विघ्न
 अग्नि में क्यों जरता है जाके पावन की रजमाथे धरि अह-
 ल्या सुन्दर तन है गई जाकी शरणा चराचर आवत ताके
 तारणा हेतु चारि भुजा सहित चक्र धरेहैं तामें प्रीति करुजो
 सभामें डोपदों की रक्षा करी जाके नवीन कमल सेनेत्र जामें

सखादासे तबे में मान तो खाम त्रखा सारी तजे
 येके सुमेरास यरीत तो अरी में राम मारास सदा
 मैत्र समें मैशत्र में दास ॥ १८४ ॥ इति मेरु बद्ध

श्रीरघुनाथ जी के बचन हैं कि खास सखा दाम तबे में
 मानत हों जब सब आश तजि एक मेरी आश शखे अरु जे
 याते बिसुख हैं तिनको में शत्रु हों दासन को राम बिसखन
 को मारा मित्रको मित्रशत्रु को शत्रु दामको दास यरीत तो ॥३३॥३३॥
 ३३॥ यह सुमेरु छन्द ॥ १८४ ॥ इति मेरु बद्ध ॥

मेरुबद्ध चित्रम् १८४

				स					
			खा	दा	क्षे				
		त	बे	बे	मा	ग			
	तो	सा	स	ब	खा	सा	री		
	त	जे	ये	जे	सु	मे	ग	स	प
री	ते	तो	अ	री	मे	त	म	मा	रा

शिशु सोल गिरोवन पीत के नंद जु जाय रची व-
 हिर खाटे दृग सों जल रों कि ठपी तबे नंदित जा चुप
 चित्र कपाटे ॥ १८५ ॥ इति कपाट बद्ध ॥

नवोदानायका पीव को देखि
 रति भयमानि शिशु सम रोवन लगी
 ता समय बाकी नंदने बांक हेतु शय्या
 रची है सही नेत्रन सों जत रों कि शय्या
 पर जाय चुपचाप विचित्र कपाट बन्द
 करि आनन्द ते सोइ रही शिशु सोत्तगि

रिपु	जे	१८
अनि	सु	२३
बन	क	२६
रुड	य	३३
१३	ज	३६
३३	की	३९
३३	रे	४६

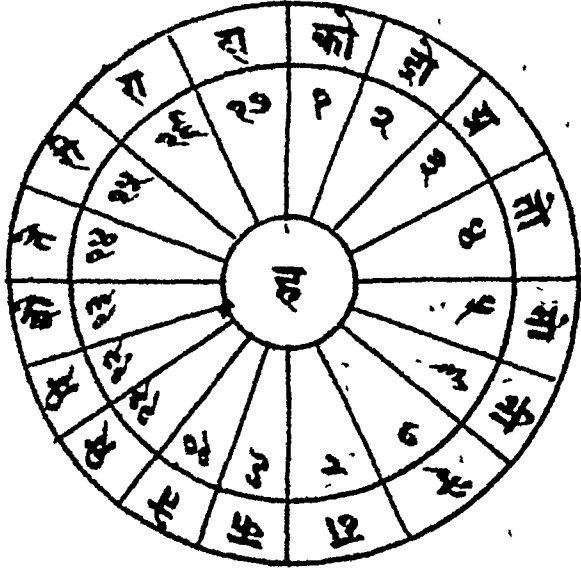
इति कपाट बद्ध चित्रम् १८५

सः सः सः लः गुः ॥५॥५॥५॥५॥ प्रथम दल नन्द जुजाय नन्द वक
लादि गुरु ऽजः जः यः ॥५॥५॥५॥५॥ इजो दल उपचित्र चन्द ॥
२८५ ॥ इतिकपाट बद्ध ॥

कोह द्रोह घृह तोह मोहनी हरैहटाह कहते हरि
हरि चोह ते हरीहराहदाह ॥ १८६ ॥ इतिकम-
लवद्ध ॥

क्रोध पर द्रोह घर को मोह परिवार को नेहादि हठ छां-
डो हरि हरि कहौ ताते हरिमया करिकौ तेरो दाह जो है ता
पताको हरिलेहैं ते हरि हरिकहे ईश ते आदि में ईश पीछे
तेईस मात्रा की मोहनी चन्द है ॥ १८६ ॥ इतिकमलवद्ध ॥

कमलवद्ध चित्रम् १८६ ॥



ब्राह्मणा जगत असीर बादनहरतसपीर सा-
धनभगतसधीर भासन कस्त अहीर ॥ १८७ ॥
इतिकंकनवद्ध ॥

ब्राह्मणा आशीर्वाद है जग की पीर हरत जे भक्त भक्तिके

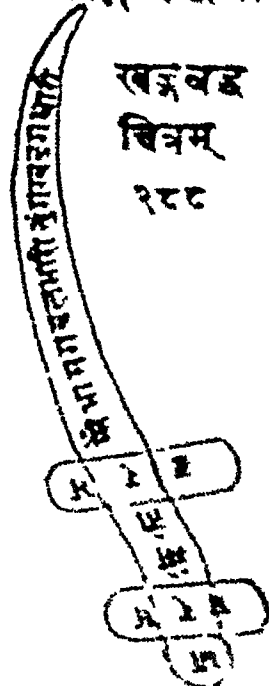
साधन करत तिनको अहीर कृष्ण शोभा को देखाय दर्शन दे
भक्त न को धीर्यमान करि देत भनज ॥॥॥॥॥॥ अहीर चन्द्र
इतिकंकन बद्ध ॥ १८७ ॥



धीरधर धरमै तोर डर भरमै भासग बलभा
री तुंग खडग धारी ॥ १८८ ॥ इति खड्ग बद्ध ॥

धर्म में धीर्य धरै भर्म डर
तोरि ऊँची खड्ग धारणा करै सो
शोभा सहित बलवानन में गनो
जाय भासग ॥॥॥॥॥॥ तुंग चन्द्र
है ॥ १८८ ॥ इति खड्ग बद्ध ॥

हियरति सजौ द्विजजन
द्विदास सियपति अजौ
भज मन छवि आस १८९ ॥
इति त्रिपदी ॥



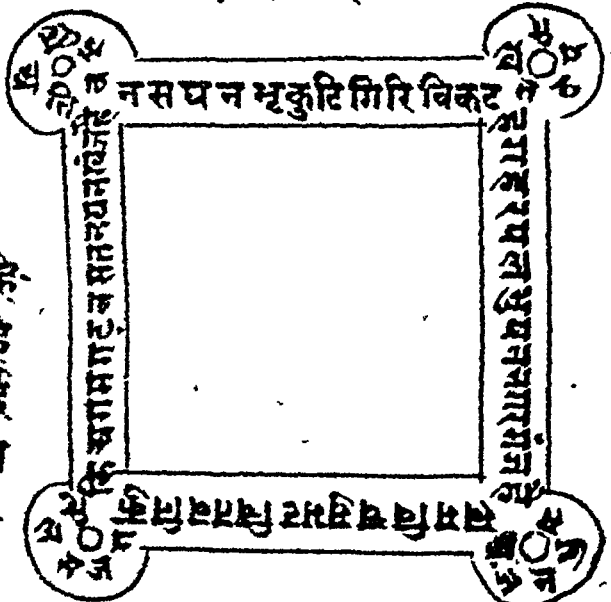
हे भगवत् रामो ब्राह्मरान को स्वाउ राखे रहौ हृदय में
 प्रीति करि जनकनन्दिनी के पति विपरी चक्रम् १८६
 जो ग्युनाय जी को अजहूं भजौ
 अरु मन में शोभा देखने की
 आश राखौ कि कब दर्शन देखे
 हिज्ज द्विज कहे चारि लघु तापै जगन
 ॥॥॥ ॥ छवि छन्द है ॥ १८६ ॥ इति
 विपरी चित्र ॥

८	८	८
८	८	८
८	८	८
८	८	८
८	८	८
८	८	८
८	८	८
८	८	८

वरुणी अतिवन सघन भृकुटि गिरि विकट
 तटपरिवतहगहरपलभुवननगरमंज है अंजन-
 धुस अरवम विच सुभद चितवनि कुटिल सजग-
 टिकि अगमगढ़ वसत नयन खंज है ॥ १८७ ॥ इ-
 ति गढ़ वद्ध ॥

गढ़वद्ध चित्रम् १८७ ॥

वरुणी सोई
 सघन वन है भृकुटी
 सोई पर्वत है ताके
 तट पलकन की गहि-
 रई सोई परिवरा कहे
 स्वावा है भूयसा तेई
 सुन्दर नगर है अंजन
 सोई धुस है ताते अ-
 रवम के बीच कुटिल



चितवनि सुभद ते सजग है टिके हैं सेसे अगमगढ़ के बीच
 नेत्र खंजन वसत है भूयसा नगर बारह नगन रान खंजा छन्द
 यथा ॥ १८७ ॥ इति गढ़वद्ध ॥

वीतापरे याम आधा कदानालधीमें यशो जा-
 पकारी ममा प्यारही तानरे धाम साधा फदा दाम
 तीमेकसौ आपटारी नआ भार भीता करे काम बा-
 धा गदा बाम जीमें धसौ पाप भारी तमा हार सीता
 हरे राम राधा सदा श्यास ही में बसौ ताप हारी क्षमा
 कार ॥ १९१ ॥ इतिकामधेनु ॥

परे परे जन्म वीता दोऊ घरी कबहूँ परमेश्वर को नाम न
 लीन्हे हे मेरे प्यारे जीव बुद्धि ते परमेश्वर को यशगाउमुस ते
 जापनाम को करु जाको तू साधे सो धाग तेरो हित नहीं है
 तिया के दाम रस्सीमें फंदा ताको आपहीं कसि लियो ताभार
 को नहीं टारे बाम रूपी गदा सो बाधा करि कामने समीत
 करी ताते जीमें पाप धसि गयो ताते भारी अंधकार में हारि
 परो ताताप के हरगाहार क्षमा करनहार सीता राम राधा-
 श्यासही में बसौ बसौ ता आठ तगन ॥ १९१ ॥ इति कामधेनुचित्र ॥

कामधेनुचित्रम् १९१

वीता	परे	याम	आधा	करा	नाम	धीमें	दसौ	जाप	कारी	ममा	प्यार
हीता	नरे	धाम	साधा	करा	राम	तीमे	कसौ	जाप	टारी	नआ	आ
भीता	करे	काम	बाधा	गदा	बाम	जीमें	धसौ	पाप	भारी	तमा	हार
सीता	हरे	राम	राधा	सदा	श्यास	हीमें	बसौ	ताप	हारी	क्षमा	कार

दो कुच कुंतल शोभ भरो भल नागद्वयोबर वी-
 चदुमंदर ॥ १९२ ॥ इतिनागबद्ध ॥

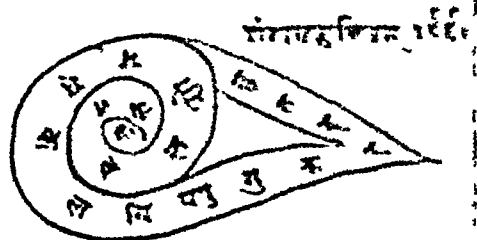
रोजहीजोजीवधीको रोगनन्दालाजपीको ॥
१६५ ॥ इति चूरी बद्ध ॥

पीब लज्जा करत नन्द दरतनहीं
ताते रोग है ताते हमारो जीवधिका
करत रोजही रोग ॥ १६५ ॥ नन्द छन्द १६५
इति चूरी बद्ध ॥



गोलनवल प्रोभसकल विषाणुमुकर सोहत
दर ॥ १६६ ॥ इति शंख बद्ध ॥

गोलनवा सुन्दर शंख
विषाणुकर में सोहत गोलन
॥ १६६ ॥ विषाणु छन्द ॥ १६६ ॥
इति शंख बद्ध ॥



कृमीसतजानीरय संजाजमवीतालय १६७
इति यंत्र बद्ध ॥

जा यमुना जल में सतकर्मो स्नान
करै तो यमालय जाब बीता अर्थात्
ना जाई ताल ॥ १६७ ॥ कृया छन्द १६७
इति यंत्र बद्ध ॥

यंत्र बद्ध चिह्न १६७ ॥

ग	नी	र	य
क	नी	म	न
लं	मा	म	क
की	ता	न	य

मात का वाक का जा ससारा करी लोकनामो मरा
खा महादाह धामातके घामां नागलीं नाघरीं ता
सुसौगोन में राजना राग कारी मनो कौशला को तजे
कारना पीरताके गता दंड केशोभमा की भलीं ताख
राग कसादौन मेरो घताराम तो जानकी जाहरी रव-

नावरत्नाका महा औघ मो पाप के बास माता द-
 ली राम राजा जला जौन सेवान ज्ञाता दशा शीशका
 ऐ अयोध्या सजो सात लोका लखे द्वार पै राम के मत्त
 सातंग लीला करानन्द साभौन में श्रुं॥ इति सखु बद्ध

मात कैकेयी के बचन दो जिन सारा करी लोक में आपनो
 नाद राखा बात को महा दाह करितके गली में घाम नहीं
 माने घर सो खुल नगरे जात में माने राज में राग कहे प्रीति
 नहीं करी अयोध्या जी को तजत में पीर करिके मन में नहीं
 तके दगाडकवन को गये सा जानकी जी की भली शोभा दे-
 सि राक्षस खर धायो ताको हीन कही मारि डारे ताको रोष
 राम सों करि रावरा जानकी हरि बैर कियो तामें अधानो भ-
 महा पाप समूह में ताको मन बसा रहै ताको रघुराज नेदलि
 हारो जाते जगमें यश भयो वारा विद्या में प्रवीरा दशो मा-
 य काटि आइ अयोध्या सजो राजगद्दी पर बैठे राम के द्वार पै
 मत्त सातंग लीला करि रहे आनन्द ते आपने भवन में शोभित

३

बा	न	दा	वा	क	का	जा	स	सा	रा	क	री	लो	क
ना	भो	म	रा	खा	म	हा	रा	ह	धा	मा	त	के	पा
म	मा	ना	ग	ली	ना	घ	रा	ता	खु	सा	गौ	न	मे
रा	ज	ना	रा	ग	का	री	म	नी	की	श	ला	को	त
जो	का	र	ना	पी	र	ता	के	ग	ता	दे	ड	के	श्री
भ	भा	की	अ	ली	ता	ख	रा	रा	क	सा	ही	न	म
ग	घ	ता	रा	म	तो	जा	न	की	जा	ह	री	रा	व
मा	बै	र	जा	का	म	ता	औ	प	मो	पा	प	के	वा
स	मा	ता	द	ली	रा	म	रा	जा	ज	सा	जो	न	मे
वा	न	ज्ञा	ता	र	शा	री	श	का	दे	अ	यो	धा	स
जो	मा	त	लो	का	ल	से	जा	र	पै	रा	म	के	म
न	मा	नै	ग	ली	ला	क	ग	न	द	सा	भो	न	मै

॥ ३६८ ॥

१

१

२

शेषाय सरभाप्रयुक्त को द्वाद ॥ २०१ ॥ इति अ-
प्रयुक्त ॥

बीसो बाँह ते बड़ो बली रावरा है जो इन्द्रको मानतो-
रोजा समय को दंड अत्रसरप्रयुक्त करोता समय शेष दुःखि-
त भये इहाँ सुर्वलौ दूषानो शब्द शुद्ध है परन्तु ऐसा पदको-
न कहत नहीं याते अप्रयुक्त दूषण है बीसो सुर्वलौ बासो बी-
स गुरु आठ लघु अहाइस वरणा तीजो दोहा-सरभ है ॥ २०१ ॥

चापौ स्वरा सारवी मृगागेनंदा दशार्थ लंकाया
भूजालये दशासेन असमर्थ ॥ २०२ ॥ इति असमर्थ

भयवचारा धरि बानरन को लै भूमिजा हेतु दशार्थ-
नन् लंका पै गये दशसुख को असमर्थ करे यथार्थ शब्द-
ही कहि सकत अपर अर्थ देखत ताते असमर्थ दूषण है रो-
नन्दा रासबन इस गुरु लये दशा लघु दशवंतिस वरणा सेन
दोहा चौथ है ॥ २०२ ॥

दशा स्याद्यौ भुजगो दैलै है भूषरा स्वार्थ मंडूकं
गामी कहे रहै पापनिहितार्थ ॥ २०३ ॥ इति निहित-
ार्थ दूषणा ॥

मंडूक गामी शूकाचार्य कहत की हे दशास्य आठ
बारह तीस भुजगो इन्डीको विषय में दीने पापही स्वार्थ
ले है तामें प्रयोजन नहीं है इहाँ मंडूक गामी शूक को कहे
आठ बारह भुजरावरा को कहे जहाँ दुअर्थी शब्द ते यथा-
र्थ अर्थनाकड़े तहाँ निहितार्थ दूषण है दश आठो गो अठारह
गुरु लै है भूषरा लघु बारह तीस वरणा मंडूक दोहा पंचम
है ॥ २०३ ॥

दीपे दशधा वीरगेत् भुवनैले भूय अनुचिता
 र्थ कूदे कोरे लेखा मर्कट रूप ॥ २०४ ॥

हे भूय तेरे वीर भुवन भरे में दशो दिशा दीप्ति मान है अनुचि-
 तार्थ करि कूदत है यथा मर्कट रूप को लेला मर्कट शब्द न-
 चित नहीं है अकाल है ताते अनुचितार्थ दूखरा है रोपे ७ दशा
 धा १० गे सत्तरह गुरु भुवनैले १४ चौदह लघु यकतीस बरगा
 मर्कट दोहा यद्यम है ॥ २०४ ॥

शृंगारी कर भल लगो संस्कारहत नाहिं न-
 न भलो पीना भली नाली संगति नाहिं ॥ २०५ ॥

शृंगारी को भलो हाथ नहीं लागो ताते तेरो शृंगार संस्कार-
 रहत कहे कर्म विबर्जे है तू भलो नाहिं पी भली नाहिं संग-
 ति संगति बाली भली नाहिं इहाँ बोली में विरोध है ताते सं-
 स्कारहत दूखरा है पी भलो तू भली कहो चाहिये शृंगारी
 लगो सोरह लघु सोरह गुरु बत्तिस बरगा कर भसत वा देता
 है ॥ २०५ ॥

नर आठो दिशिलो गुरो पूर्ण भरे हैं धाम बके
 बके न निरर्थ के लाज वाजह जु बाह ॥ २०६ ॥

हे बाम छोटे बड़े नर घर में भरे हैं जो तेरे लाज वाजह होउ
 तो बके बके ना इहाँ वाजब केमें अर्थ नहीं है ताते निरर्थक दू-
 खरा है आठो ८ दिशि १० लो अठारह लघु गुरो प्रगा पन्द्रह
 गुरु तैतिस बरगा आठव दोहा नर है ॥ २०६ ॥

वक्ता भे आवाच को जीवन भुवन जगाल दि-
 शि दिशिलो चैतन्य की करनिकरे सुमराल ॥ २०७ ॥

मराल कहे हंस सूर्य दिशान में चैतन्य की करनी करि कवन

के जीवन को जगाए दियो ताते अवाचक सोधनहार बक्ता
 भये बोलन लगे इहाँ सूर्यम को मराल जागिबो जगाल सो-
 दको अवाचक इत्यारि संप्रदाय बाहेर बनाइ लीन्हे नाम ता-
 ते अवाचक इयरा है सुवन जगा चौदह गुरुल दिशि दिशि
 लगु पीम चौंतिम बरसा नवम मराल दोहा है ॥ २०७ ॥

साक्षतापट त्रिदशगिरिघिनह्या शुभअस-
 लील पीमदकलहसिदेवि सो रक्तबीजलैलील २०८

त्रिदश देवता अपट बख रहित रसा घायल है गिरे तिन-
 को देखि मद पान करि कलहास करि देवी रक्त बीज के-
 रुधिर को पान करि लियो इहाँ बसन रहित में लज्जा झील-
 मिरिबे में अशुभ अतलील रक्तपान में घिना झील इयरा ती-
 निहं भाँति हैं त्रिदशगितेश गुरुलहसि देवि सो लघुबाइसपें
 तिस वरसा दशमदकल दोहा है ॥ २०८ ॥

गुरुवारै पायोधरलसा चौबिसनव रास धिरे
 यह चीत सरेखहू पुषयावरसिय ग्राम ॥ २०९ ॥

हे गुरुवापावधरी बिसनवसाचुरामे आइ ताते बताबोचि-
 रेया आदि नसत्र कौनोह मारेगा उंसावरसीया दोहा में जावत
 शब्दते गावन बोली में प्रसिद्ध है काव्यमें नहीं ताते ग्राम्य
 इयरा है गुरुवारै १२ लघुसचौबिस चतिस वरसा गैरवाँ प-
 योधर दोहा है ॥ २०९ ॥

गुरुयकदासी साँवरत पापनवशा फल पाय ।
 लघुप्राकृतिया काकरी सकरसदेहवलाय २१० ॥

गुरु गजादृती बंते हैं आजु अन्न में पापघसत फल भोजन-
 कुरुअनुक्ति प्राकृतिज करी शकर संगीद देह या दोहा में संदेही

शब्द है ताते संदिग्ध दूयरा है गुरु एकादश ११ लघु प्राल-
ति कहे यक्षीनशका कहे एक और चबिस में तिस बरसा न-
रहमबल दोहा है ॥ २१० ॥

ज्ञानाजानिवटयन छव्य अप्रतीतल विस्वास
लोगबहवागत रावलत भौटवानस्तवस २११ ॥

दरिद्र दिशा दशहं में है जीवनेकी विश्वास में अप्रतीत
है लोग घर छाड़ि जात पहार पै चानर अशिफाल फूलगवा-
इ वास करत ज्ञाना अंज में दरिद्र को कहत जानिय पारस्ता-
न में दिशन को कहत वैन ईग्लिस्तान में दूर को लहानांग
या अवध में लोगन को कहत पागतजैपुर में जावे को क-
हत रावल घर को जैपुर में भौटा चित्रकूट में पहार को कहत
इत्यादि शब्द एक एक देश में प्रसिद्ध हैं सर्वत्र नही ताते अ-
प्रतीत दूयरा है ज्ञा गुरुदयन दशला विश्वास दरा गुरु अ-
इस लघु अरतिस बरसा तेरहमवानर दोहा है ॥ २११ ॥

गृहगुरुलघुतीसव दिवस मित्र कलकानेयार्थ
इन्द्रधामकटिनाहडरहानि बडतलघुस्वार्थ २१२ ॥

घर में छोटे बड़े तीसों बिनवने रहत समय नहीं पाइयत-
ताते मित्र मिलिबे की कलक नाहक है इन्द्रधाम नाकका-
दिबे को इरताते हानि बडत स्वार्थ लघु है इन्द्रधाम कटिबो
लक्ष्यार्थ तेज्यो त्योंनाक अर्घ जानो गयो ताते नैयार्थ दूयरा
है ग्रह ६ गुरुलघु तीसबन्नालिस बरसा चौदड़ मंत्रिकल दो-
हा है ॥ २१२ ॥

बसुमतिदुहितानाह गहिक्लेष्टधनुय अरुगच्छ।
चतुर आर्यजजतनय दलकीन्हे सकल अकच्छ २१३

भूमि सुता पति रघुनाथ जी कठोर भुस गहि शीघ्र गये ब्र-
ह्मा पुत्र ता पुत्र ता पुत्र रावरा को दल अकच्छ कीन्हे इहाँ सी-
दिन सीदिन चदि अर्थ मिलो ताते लिख्य दूधरा है ब्रह्मा के चारि-
रि सुलक्ति को एक विश्वेश्वर वाको एक रावरा के दशसुस
सब सोरज भये दल देने किहे वतिस लघु वसु आठ गुरु चालि-
स वररा पन्द्रहमकच्छ दोहा है ॥ २१२ ॥

सुनइ गौरि ऋषि सप्त कहि तिस विचार लहु व-
च्छ अब भयतव तप भ्रंश सब भसमकेतु भयमच्छ २१३

सप्त ऋषि कहे है गौरि सुनौ कहौ जौने विचार में रहौ सो-
लेउ अब काम भस्म भयो इहाँ मच्छ केतुको केतु मच्छ क-
हे यद विधान छाड़े हैं ताते अपभ्रंश दूधरा है गौरि सप्तगुरु
तिस विचार लहु तीस चारि ३४ लघुयकतालिस वररा सोर-
हममच्छ दोहा है ॥ २१४ ॥

इच्छति सकल शार्ङ्गल सम विरुधनरस गुरु देश नि-
जकुल कमल सुताप करहित कुमुदनै कलेश २१५ ॥

बिरोधी सब सिंह सम देवत गुरुजन देश में रस कहे श्री
तिमान् देवत आपने कुलकमल के प्रकाशक सूर्य हित
कुमुदन के सुखद चन्द्रमा इहाँ तापकर कलेश शब्द सुनत
में बिरोध लागत ताते बिरुद्ध यद दूधरा है छतिसकल लघु
३६ रसगुरु ६ बयालिस वररा संतरहम शार्ङ्गल दोहा है २१५
श्रुति शब्द दोष ॥

अथ वाक्य दोष भुस गहि सरः हिवराते समल-
हलह हनति समूह अरिजीवन सुखलिपिलिपन-
प्रतिश्लाच्छरजूह ॥ २१६ ॥

अथवाक्य दोष ध्रुव गहि सर समूह इनतते लइलहात वि
याग्नि ज्वलित सूर्य सेते अरिजीवन बुखाक्षर पाँति मिटाइवे
हेतु मानो प्रतिकूल अक्षर है इहाँ बीर रस भेट बर्ग चाहिये सो
नहीं ताते प्रतिकूलाक्षर दूषणा है गहि सर गुरु ५ बरतिसब-
कारकी अकार लै अरतिस लघु तेंतालिस चरणा अठारइम अ-
हिवर दोहा है ॥ २१६ ॥

श्रुतिअरिगुरुलघुचलिसबदकारिश्रुतिकुकवि वि-
संधि मनरुचिचरतविआघ्रजिमिमानसमद् बुधि
अंधि ॥ २१७ ॥

जेवेद तेविरुद्ध लघु गुरु चलित सन्धि रदित शब्द बर्णन
करत तेयथा व्याघ्र मनरुचि चरत तैसे कुकवि विद्या केअ-
नमद् सो बुद्धिकारि अंधे निर्मय काव्य करत इहाँ व्याघ्र श-
ब्द को विआघ्र कहे ताते बिसन्धि दूषणा है श्रुति चारि गुरु-
चालिस लघु चवालिस बरणावनइसम व्याघ्र दोहा है ॥ २१७ ॥

गुरा गुरुजन बुधि न पदननद सरम ससुचा-
लि तितन सदन पिय मन सुरबकडर रति विलसि
बिडालि ॥ २१८ ॥

गुरा गुरुजन शरम नमद् सुचालि साधु तिया को तनस-
दन में बुद्धिपतोइ न्यून पदमाने पतोइ शब्द नहीं है धीबमन-
मूष करति डर तिया बिडाल चाहिये सो तिया शब्द नहीं
ताते न्यून पद दूषणा है गुरा तीनि गुरु विलसि चयालिस
लघु तेंतालिस बरणा वीरम बिडाल दोहा है ॥ २१८ ॥

श्रुतिश्रुतिश्रुनकारिलघुनिलजदुगुरा अधिकपदलाज
परम सुभगमत सुसुतरु निपतिरत कृतगृहकाज २१९ ॥

वेदवाराणी कानसों सुनि निलज्जताको लघु करु लाजपद
को दुयरा अधिक करु हेतुरुनिपति मंतरप्रह को काम यह
सुन्दर मन है दुयरा अधिक ताते अधिक पद दूयरा है अतिशु
ति चवालिस लघु दुयरा चियालिस बररा अकेसम सुनका
रोहा है ॥ २१६ ॥

कलकित शशि गुरु तिय निरत ब्रत हत छुट-
तसुरपुर लहि मत घट चलि सुचल मग कुचलत
जड़त उदूर ॥ २२० ॥

गुरुतिया में रत भये ते चन्द्रमा कलंकित भयो उत्तमचित्त
की वृत्ति नाश भई मन्दबुद्धि भये गुरु कोप ते देवलोक छूटि
जातो ता त्याग करे ताते शास्त्रन को मत लैके सुचाल चलो
कुचाल दूरही त्यागी लुकान्त में संभ्रता नहीं ताते इतहत
दूयरा है शशि एक गुरु खट चालिस लघु सरतालिस बर-
रा बाइसम उदूर रोहा है ॥ २२० ॥

लयचलि सरबसु लय रिसुनि चल सुनि किन
तरुनि कसकस सुनि सुनि कथित पद कत बकव
क करियरुनि ॥ २२१ ॥

लेचलु सरबसु ले सुनु चल हेतरुणि सुनत काहे नहीं
ज्वाव हे यरुनी काहे को बक बक वहीवात बारबार कहत
इनाँ एक पद डे डे बार परे ताते कथित पद दूयरा है चलि
सरबसु अरतालिस बररा लघु तेइसम सरव रोहा है ॥ २२१ ॥

त्रैदशपतत प्रकर्ष करि अक्षुर रुद्र बल पाइ ।
प्रबल प्रताप प्रचराड भुजद्राड चराड शर छाइ २२२
रुद्र को बल पाइ अक्षुर को प्रताप प्रबल है ताते उत्कर्ष

करि भुजदगाडन सों प्रचराड शर बाड् दियो ताते देवपत ते प्रथ
म चरणात्रैश दो शर में रुद्रग्यारह मात्रा दोहा को लक्षणा है
प्रथम दल सम वरणा वृजे उद्धत वरणा एक रस रीति नहीं ताते
पतत प्रकर्ष दूषणा है ॥ २२२ ॥

व्याकरणासरकाव्य द्विजपदपुराणावेदान्त ।
चरणादीमात्रैजगनकरसमाप्तपुनरान्त ॥ २२३ ॥

हे द्विज व्याकरणा अमरकाव्य पुराणा वेदान्त पत्रिले पदो
पीछे वरणा मात्रागन पद्वि समाप्त करौ इहाँ व्याकरणादि
पद्वि वरणा मात्रा पद्विबो पीछे कहे ताते समाप्त पुनरात दूष-
णा है नादी मात्रै जगन आदि पद तीजे पद में जगन नादीजे यह
दोहा को दूषणा है ॥ २२३ ॥

चरणांतरगत जोर दोहाथै कहि चलतु किना ।
करती क्यों अलि सोरट गिनी म्बहि बोलै कहा २२४

हे दगिनी सोको कहांको बोलावती तब पावन के बीच
दोहाथ जोरि कहत हे अली चलती क्यों नहीं इन्ना क्यों क-
ती चरणा उलटि कहते दोहा की सोरटा छन्द भई दोहाथे जात
अंस पदचाही जोर हाथे के बीच में दो अक्षर पंगे ताते चम्प-
न्तरगत दूषणा है ॥ २२४ ॥

अहा भुवनमत एकही यह दोहिसकर कहि ।
आस पूर्णा अमा जिहि विनसो कवन रुड शीश का
बास ॥ २२५ ॥

भुवन के मत एकही है सोय चन्द्रमा कहाते भये जाके
पूर्णा रहे पूर्णिमा विन रहे अमावससो चन्द्रमा कौन है रुड
शीश परबास करत सो कवन है इहाँ अहा पदको अहं करिद

तीबने रुद्रशीरा कवनबास अस्त करिये तो बने इहाँ सम्बन्धको
 निबाध नहीं ताते अक्षर सुस्वार्थ नहीं कहि सकत ताते अभ-
 वनमत दूधगा है भुवन चौदह रुद्र म्यारह पच्चीस मात्रा दोही
 छन्द ॥ २२५ ॥

**सवतन भूधरा विषम सदसायेकरमनीय मा-
 ल दोहरावन गुरातह अकाथे कथनीय २२६**

सवतन में भूधरा विषम है एकदशा सुन्दर है बिन गुरा
 दोहरा माला है इहाँ बिन गुरा चाहिये सी नहीं ताते अकथि
 कथनीय दूधरा है भूधरा २२ दशा एक २२ तेईस मात्रा दलमें
 दोहरा छन्द है ॥ २२६ ॥

**पूरा पदस्थानस्य शशितमदिशिद्व ती-
 निडंलोकभरि सगारिबीतिगैतकतनिशितुम्हें
 देखनतउलालालापरि ॥ २२७ ॥**

पूरा शशि स्थान पद पर अस्तभयो तम दशाहं दिशाती-
 निडं लोक में भरि रहा है सगरी राति देखत बीति गई तयो-
 तुम्हें देखन लाला परी इहाँ पूरा पद शशि दिग चाहिये सोन-
 हीं ताते स्थानस्य पद दूधरा है पूरा पद्दह दश तीनि अद्वा-
 इस मात्रा उलाला छन्द है ॥ २२७ ॥

**एकदशोदिशि घेरि त्रिदश अरिबीच ठाडिह-
 रि गनत स्वलनरन भूमि अन्तपदतिनहिसुलधुका
 रि जीत सखर वैशिराहि दूधताहं रुद्रादिष्ट जयश
 काव्यसंकारासकल सुरमुनिसकिय ॥ २२८ ॥**

बीच में हरि एक ठाडि राक्षस दशो दिशा घेरि रहै न भूमि में
 सुलगाय ज्योतिष को लघु करि गनत त्रैस्वरदूधरा विशिरा-

सहित दलच्छरो मंत्रभुजीति लियो ताको देखि सुरमुनि सक-
ल संकीर्ण काव्य करि जैजैकार शब्द करत इहाँ एक शब्द
हरि शब्द गनत लघु करि जीति लिये जय शब्द किय प्रत्यादि-
शब्द दूरि परे बुद्धिते ज्यों त्यों मिलाइ लिये याने संकीर्ण शब्-
दाहै एक दशौं त्रिदशौं चौबिस भावा की काव्य चन्द है ॥२२५॥

बास सुत वित पाय गर्वित साधु सतमति ।
होत शुभगति ॥ २२६ ॥

बनिता सुत्र इव्य पाइ अहंकार के बश भूले तामें कुग-
ति होइगी ताते सत् साधुन की मति में रही अर्थात् परमेश्वर
को भजौ तब शुभगति होइगी सत् कहे सात भाषा की शुभ-
गति छन्द है साधु मति शब्द के बीच मति शब्द है ताते गर्वि-
त पद दूषरा है ॥ २२६ ॥

सांगैना सागररनथ कंठी माल मोती शुहै वा-
है तेरे हृगवसिवसे सोनेन वाके तुहै प्राकर्म भंगत-
कि छकि क्यों दोहारिनी के रहै तू बोले मानिनहि-
तव मानी वास देशो कहै ॥ २३० ॥

प्रथम पद सांग है तामें मोती युहिबो पहिले चाड़ी दूसर
नासा तालें नाथ चाही तीजोगर तहाँ कंठी चाड़ी चौथर
तामें माला चाही इहाँ भूषरा स्थान के क्रमते संग नदी ब-
नत ताते प्रक्रम भंग है वाहै तेरे हृगवसी तहाँ तू है वाके नेन
वसो सोनहीं इहाँ नैन एकसम नहीं याइ प्रक्रम भंग पर-
स्परतकि छवि सो छकि दोऊ हारिनी के क्यों रहे तहाँ चाहि-
ये ज्यों प्रक्राम भंग भये थकि रहत क्यों जवाब पर ज्यों चा-
हिये सो नहीं इहाँ विधि समेत बात नहीं ताते याइ प्रक्रम भं-
ग है संदेशदि हैना मानी तब तुम बोलायो अस चाही यामें

हे तुम बोलावो ना मानी तो सेंदेशो कहे मानी इहाँ प्रथमही ।
 कम झाड़े ताते प्रथम भंग दूखरा है भागेनासागरुमःगुःनः
 मःगुःरःरः ॥११॥ ॥११॥ ॥११॥ ॥११॥ दोहारिनी छन्द है ॥२३० ॥

गाहादोहाथ प्रसिद्ध हतपशु चूड़ा मरिा कोप ।
 त्योःपंजनहिनिशाचरन दशरथ सावकचोप दश-
 रथ सावकचोपासित पर अर्थ चाप शायकलै रम-
 कि भूमकि रसाभूमिकामसे शोभितो पायकलै ॥
 २३१ ॥ इति वाक्य दोष ॥

यथासिद्धकोपकरि दोहाथनगहि पशुन को प्रसिद्धही मार-
 तैतेसेपंजनसों गहि निशाचरगारिवे को दशरथके सावककोचोप
 है ष्टगसावक प्रसिद्ध सो दशरथ सावककहे नरकेकर प्रसिद्धसोपंजा
 कहेमिहकेपंजा प्रसिद्ध सो हाथकहे याते प्रसिद्धहतदूखराएनःदशरथपुन
 के अमितचोपपरारे हेतु धनुषवारा लै सेवकन सहित रमकि
 भूमकि रसाभूमि में काम से शोभित होत रमकि भूमकि श-
 न्द अंगार रस में चाही याते अमृत परार्थ दूखरा है गाहादो-
 हा गिलि चूड़ा मरिा छन्द है ॥ २३१ ॥ इति वाक्य दोष ॥

अथ अर्थदोष तू कामै मत्ता को । ११११११ द्विज
 यरुतकतनहिलजतहो सारोगावापुथार्थकेक-
 हतलघुवरगाहितहुतजतहो तोसोनाचन्द्रातैव-
 शौकलंकितशशि भवकहबहुकहनो ऐसीतो क्यो
 नाताको व्याहत कुकरम करि अजसहिलहनो २३२

अथार्थ दोष तू सदा कामै में माता रहत तेरी कीड़ा द्विज
 यरुजन नयन करि देरवत तो को लाज नहीं आवत सारोगा
 व पुष्ट करि तेरी लघुता कहत यामें कुन्नु बड़ाई नहीं है ताह
 परनाहीं तजत ही जैसा तू कलंकत है तैसा चन्द्रमा नहीं है तू

रोवत आँशु सँभारन चेत बालइलास गयो निरहे-
 त निरहेतु दुखवाही अचरज नाहीं नहिं अचर्य बिल-
 ग्यतलरिका अनविक्रत विकाही पशु मगराही नहिं
 अचर्य रीभे भरिका वातुल मतवारे भूत धरारे नहिं
 अचर्य रोवै गावै कामातुर क्रोधी धर्म विरोधी न-
 हिं अचर्य करि हे कावै ॥ २३४ ॥

मित्रता भंग भई की पति बहू नारिन सोरगो यह निश्चय
 नहीं की बाला काहे ते व्याकुल है याते संदिग्ध दूषण है बा-
 लको आनन्द जात रहो रोवत में आँशुन को सँभार नहीं ना-
 देह की सुधि इहाँ रोववे को हेतु नहीं कहे याते निरहेतु दूषण
 है बिन हेतु वनिता दुःखित होइ अरु लरिका रोवै ताको कहु
 अचर्य नहीं अनविक्रत घर के भये विकाही मोल के लिये प-
 शु संग में गहत तेरी कि कै लगे आवै भरकि कै भागी तौ कुछ
 अचर्य नाहीं चाई के भरे भरे मतवारे भूत के धरे रोवै गावै तौ कुछ
 अचर्य नाहीं कामी क्रोधी धर्म विरोधी चहै जो करै कुछ अचर्य
 नहीं इहाँ बहू अर्थ सकही रूप होत जात याते अनविक्रत दूष-
 णा है पाया कुलक विभंगी मिलि इलास छन्द है ॥ २३४ ॥

मुख तें बचन नियम हृदय मिट दिशि बसुन
 तुम सरिरव्यु । जेहि हृदय अति हि ६ ॥ ७ ॥ तकि त्रपित
 निशिहि मिलि नित सवाते सलज नियम न सरिव्यु
 ॥ २३५ ॥

मुख ते बचन बोलिबो हृदय सीठा सरिवबो नेमंहे
 ताते तेरी समिता आटहु दिशि जग में नहीं है इहाँ मुख ते
 मोर बचन कहुबो नेम चाही तहाँ बचन कहे हृदय बच-
 कहिषां चाही ताको सीठा कहे इहाँ नेम ते अनियम दूषण है

रूपीदेश विरुद्ध है चम्पापै भँवरलोकं विरुद्ध है साँभ सोड-
बो वेद विरुद्ध भादों चाँदनी कबिरीति विरुद्ध दूधरा है मां-
ती निसरि राय सः तः नः सः रः गुः यः ॥ २३६ ॥
कुल्लदास छन्द है ॥ २३६ ॥

नछायामानो सो गरूरनहि हीये कें धनी मानती
प्रकाशैना दोषै विरुधनहि राखै पीरु पी जानती पि-
या एकै चाहा रुपिय एक चाहे दोऊ एकै कमा स्व-
कीया सामान्याहि सहचर भिन्नो आत्म एकोप-
मा ॥ २४० ॥

जिनके मानकी छाया सी नहीं न उर में गरूर राखै एक
ही धनी कहे नाह को मानती है ताके दोय को कवहं प्रका-
श नहीं करती न विरोध राखै एक पतिही को रूप जानती है
इति सुकिया तामें गणिकाहू को बोध होत धनी दर्विमान को
मानती एक रूपैया पीब जानती यह प्रकार अर्थ को विरोध
करती ताते प्रकाशित विरोधार्थ दूधरा है पुनः एक पियाका
चाहत एक रुपिया को चाहत दोऊ को एकही काम है ताते
सुकिया सामान्या दोऊ आत्म तत्त्व करि सकही उपमा है
केवल संगती इनको उनके न्यारे है इहाँ ऊँच नीच के संग
कहिबो सहचर भिन्न दोष है या मानो सो गरूर ॥ २४० ॥
॥ २४० ॥

रामझीलार्थ ज्यौ मारि नलसत सुरारी सर्ववदना
तैसे कादंब नारी सुमग भरत त अंकुर मदना नामे
कोपही में सबन गहत भारबो ना कुवचना लाग्यो-
सौ गंदखायो तजत तजि सुना स्वाक्य रचना ॥ २४१ ॥
इति अर्थ दूधरा ॥

श्रीगमलीना में रावरा के सब मुखन में बारा छेदे शोभि-
तभये तैम ममृद् नारिन सुभग सुख में मदनांकुर भरत हौ ल-
ज्जा मा भोरु पदते शील दूधरा है नमोउरकोपन कुचचन।
कहौ चुपहौ परन्तु लारवन सौगन्द खाय तजे तजि कै फिरि
सोई रचना करते हौ यातेत्यक्त सुनास्याकृत्य दूधरा है मार-
गननसतसु ऽऽऽऽ।ऽऽ।।।।।ऽऽऽ।।।।ऽ सर्ववदना चंदहे ॥ २४१ ॥
उति अर्थ दूधरा ॥

अथ भूयरा अभ्यांगमंजवासदयसजाव कवि
चित्रसिखसँवारिवीचरक्तपांसुताहिभाँति चन्दन
लगायल करनलाल हियदल सुभगहिबीचअराज
नाकनधियाति फलपितुदासमहि मारी भीसिकुंद
बाचभौरकीहकीक तिन कंदुसुतदल काँति कज्जल
मेंदगचतुराई बिस्वा बीस सजिपाटी रूपधन अच्छरी
शिंंगारदिम पाँति ॥ २४२ ॥

अथ भूयरा अभ्यांग उचदन लगाय मंजन कारि वसन
पहिराड बिचित्र महाउर देँ बार युहि सेंदुर देँ चन्दन लगाय
मेंदरी कर में लगाइ उरपर अराजा नाक में नथफूल मा-
ला सुगंधित दाँत में भीसी ताम्बूल नेत्रांजन चातुरी इत्यादि
शंगार की पाँति घनाक्षरी रूप पाटी पर लिखीसी है अभ्यां-
ग कानसुने करु ताते श्रुतिकहु है मंजमेंनकार बरणाघटि।
ताते भाया हीन है बसन बास सुद्ध है कवि घनादूर योग्यताते
अश्रुक्त है सजावकविचित्र जावक अर्थ कहिये को शक्ति
नहीं ताते असमर्थ है सिख सँवारि बार सँवारिबो नहीं प्र-
सिद्ध करि सकत है शिर औ यश प्रसिद्ध करत ताते निहित-
ग्य है रक्तपांसु सेंदुर उचित शब्द नहीं है ताते अनुचितार्थ है
लगायल मेलकार निरर्थक है मेंदरी की लाल हिया दल।

वनाइ लीनो नाम है ताते अवाचकद्वे शुभगहि नीच लज्जा
करत ताते स्त्रील है नाक नथिया गवारी बाली ते प्रार्थाने
फूल को फल पितु नाम संदही है ताते मंदिग्ध द्वे महिमारी
एकदेशी खुगंधनाम ताते अप्रतीत द्वे कुंद बीच भौर की इ
कीकृतिना लक्ष्यार्थ दंत ताते नैयार्थ कन्द सुत दल कान्ति
सीदिन सीदिन अर्थ पान ताते स्त्रिय है कज्जल में द्यु शब्द रि
धान छाड़े उलटा ताते अपभ्रंश है चतुरार्द विश्वा में विरुद्ध
होत विश्वा गरिणा को कही ताते विरुद्ध मति कृत द्वे इ
त्यादि शब्द दूधरा को भूधरा यथा रूप पाटी पर घनाक्षरी
पाँति शृंगार की लिखी दीप्तमान है क्रमते शृंगार रूपक अ
लंकार करिके भूधरा है शृंगार ही बलिसवर्यान्ति लघुरूप
घनाक्षरी छन्द है ॥ २४२ ॥ इति स्त्री सोरह शृंगार ॥

मंजु उबटि अंगश्याम पट चपला सो लिखि कै
तिलक रेख अंजन शोभित कल भलभल कुण्डल
बुलाक तकि चाह फूल गरेहार सजा शिर कीट पदच
पुरल कटिही पै मेखलांग चन्दन सकंचु मणि कंकरा
करगामें चटक चावि अहिदल चातुरी सुमन हरिप्रफु
लदलन युततन तरुवरहि सफलित शृंगार फल ॥
२४३ ॥ इति पुरुष शृंगार ॥

अथ वाक्य दोष भूधरा श्याम अंगपै उबटन लगाय मं
जन करि पीताम्बर बरख भाल पै तिलक नेत्रांजन कानकुंड
ल नासिका पै बुलाक गरे फूलादि हार शिर पर कीटपाँनमें
चपूर कटिपै मेखला अंग चन्दन उरपै कंचुमणि करमंकरन
खुरब ताम्बूल चातुरी इति शृंगार वाक्य दोष यथा उबटि
वर्ग रौद्र रस में चाही ताते प्रतिकूलाक्षर है पहिले अंजन तर
उबटन यह सुमिल पदनाहीं ताते इतइति है उबटि अंग में

मन्त्रि-नहीं ताते विसंधि है पद चपला सो तहाँ श्याम तन मेघ
 मां चार्दी सो नहीं ताते न्यून पद है लिखि के तिलक रेख रेख
 अधिक पद है अंजन अंजित चाहिये सो रिति लिहे नहीं ताते
 पतत प्रकृत्य है झलझल है बार ताते कथित पद तकि चाह स-
 नात्र पुनः कहनी पुनरात ताते समाप्त पुनरात है फूल हार बीच
 मां गार शब्द पंगु ताते चरणांतरगत पद है सजा कवि हृदय को
 अर्थ नहीं कति सकत सम्बन्ध निनाह नहीं सजे चाही ताते अ-
 भवन मत्त योग है त्रपुर लसै अवयव कहिवी चाही सो नहीं
 ताते अकथित कथनीय है कटि दिग मेखला चाही सो नहीं
 ताते स्थानस्थ है ही शब्द ते कंचुभरिा दूरि है ताते संकीर्ण
 पद है ही पैलाग चन्दन ताबीच मेखल शब्द है ताते गर्वित प-
 द है चटक चावि अहिदल रोसे शब्द रोरोदुरस में चाही ताते
 अमृत परार्थ है अंगार फलन में कहे तहाँ चापुरी सुमन कहत
 यह विधि सहित बात नहीं ताते प्रकस भंग है प्रफुल्ल फूलनको
 प्रसिद्ध है तहाँ प्रफुल्ल दलन युत कहे ताते प्रसिद्ध हत है इति
 वाक्य दूयरा सुन्दर मनको आनन्द हरे दलनयुत चापुरी फूल
 तनतरु अंगार फलन ते फला है इहाँ रूपक अलंकार ते अंगार
 अराम ताते भूयरा है चन्द पूर्वही की है इति पुरुष अंगार २४३

धृति शशि झलकलावनी पानी पानी जात सवैया
 जान विन भूयराहि विभूयित रूपा सुन्दर सजत सुठौ-
 र समान रसन्यन देखसि देखत सौनसिकांति त्रपन्न
 अंग मधुरान परसे परसन मृदु समनै कीती सकुमान्य
 चरजन डुरान ॥ २४४ ॥

अथ अर्थ दूयरा भूयरा शोभा के अंगायथा चंद्रमा कीसी
 झलक ताकां धृति कही पानी जात मोती ताको जैसे पानी
 ताकां लावनी कही बिना भूयरा भूयित ताको रूपक ही म्भ

अंगसुठौर सजे ताको सुन्दरता कही देवत में अनदेखी सीचा-
हताको रमणीकता कही सोना की ज्योति को कान्ति कही-
जा देखि लक्ष्मिना होइ ताको साधुरी कही परसे तं परसना जा-
नै ताको मृदुता कही फूलन पर पांवधरत डराइ ताको मुकुमर
ता कही इति शोभा अंगनव है इति कहि चुके मालक बिना
कुछु विगतरत नाहीं ताते अशुष्ट है पानी जात के पानी मसना
वनी यह अर्थ अक्षर नहीं कहि सकत ताते कथार्थ है चिन
भूषणो विभूषित भूषणो तेजसकी चाह भूषणो को निगद-
ताते व्याहृत है सुन्दर सजत सुठौर अर्थ सकही ताते पुनरुक्त
है देवत अनदेखी सीबिन विचार कर्म है ताते दुःखम है मान
सी कान्ति ग्रामीन है दृगमधुरान संदिग्ध है परसे परसन मृदु-
यामें हेतु नहीं ताते निरहेतु है मृदु सुकुमार सुमन की अचर-
जन डरान सकही भाँतिनवा अर्थ ताते अनविकृत है इहाँ क-
मते शोभा के अंग वर्णान ताते डूषरा अर्थ आपनो प्रकाश-
नहीं करि सकत ताते भूषरा है नैकी तीस यकतिस सात्रा-
की सबैया छन्द है इति शोभा अंगार्थ दोष भूषरा ॥ २५४ ॥

तुवाहीवातेरी प्रणय मन ललाकैति प्रेमै अशक्ती
बिनाकीनेतेरी सुधिलगन सदालागत्सानुरक्ती र-
गीतेरेवानेह मिलनि हैंसिबोलैतकै लाजरीती चको-
रीचंदा प्रीति विशुधि सुख भाषै सुधाबैन जोती २५५
इति अर्थ दोष भूषरा ॥

प्रीति अंगयथा दो०। प्रणयप्रेम आशक्तिपुनि लगन।
लाग अनुराग। नेह सहित सब प्रीति के जानव अंगविभाग
तूवाकोवातेरी या अपनपै को प्रणय कही याकी सौम्य-
दृष्टि मनकी ललकताको प्रेम कही याकी बिह्वल दृष्टि ज-
हँते मन निकसैनाताको आशक्ती कही याकी एकटकदृष्टि

दृष्टा जात यह मनमें जानि नवीन साज भूयगा वसन मजे नन्द
 शिख तव विचारे की धं पर भूयगा त्यागि वन जो है गरी तांकि
 साज श्याम वसन पहिरि जान्ये जामें रतिके सुख दाता सुन्दर
 मित्र मिलै यह विचारि पल में राइ पल में तैसि पल में बोलत प-
 ल में चुप रहत भीत को प्रेम भूत सो मन में लाग है पुनः नादान
 कला करे न देव इजे जन्म दृष्टा शयो यह जानि नवीन साजकोटी
 द्वाप तिलक करे पर भूयगा त्यागि वन साजतपस्या चन्द्रकल
 वस्त्र धारणा कारि चलौ जामें सुमित्र लक्ष्मणा ते बड़े रघुनाथ ।
 प्रीति में सुखरगता मिलै यह विचारि पल रोवत पल है मन
 पल में बोलत पल में चुप है रहत इहाँ निरबेदादि संगार में इ-
 यगा अश्लेष करि भूयगा है नवरा ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कुसुमस्तवकं राडक छन्द है ॥ २४९ ॥

दरसत्तावनजुदिगपरभरतप्रभुहियात्रिरुभार
 विचारा माखे लखराक्रोध करिबेना चपलगाय
 अपारा ॥ २५० ॥

भरत आगमन ह्य परत प्रभु के उरमें रुभार दरगत होत
 क्षमराजी विचारि माखे ताते क्रोध करि चपलताते यहत क-
 था कहि अनेक वचन माखे इत अंगीवरीन दूखरा है पर्य-
 तीस इजे सत्ताइस सत्तावन गात्रा दोऊ दल में चपला गाय
 छन्द है ॥ २५० ॥

त्रिदशशत्रुवलरुद्रसोरचो रारि हरि प्रिया हरि
 लायो । विपुलगाय सुग्रीव काहि भूलि गोव नव
 घरपायो ॥ २५१ ॥

रुवरा रुद्र बल ते रारि रचो हरि प्रिया हरि नयो तांकि इन्दु
 सुग्रीव ते अनेक वार्ता भई जवआपनी राज्य तिया पायो तबना

नकी जी का शोध लेना भूलि गये इहाँ अंगी रघुनाथ जी अंग
नृणां अंगी को भूलि जावो रस इयारा है प्रथम पद त्रैदश दूम
रे पद में शत्रु कहे सबह तिसरे पद में रुद्र ग्यारह चौथे सोलह
सात्रा बिजुला गाया है ॥२५१॥

धुरधीरयुतशान्तिमनसतोगुरापाँति तनशां-
तरसजाति अनुकूल रघुवीर छलधीरललितारु
मनरजोगुराधारु रस कृप्या अंगारु दक्षिन्नहरवीर
वलधीर उद्धत मनतमोगुरारत हररौद्र रस मत छि-
न प्रीति कोधीस सुदधीर उद्दात गुरा मिलित चोपा
ति रस वीरता भाति तिमि धृष्ट सुरइस ॥ २५२ ॥

धीरशांति शांतरस की प्रकृत्य है श्री सतोगुरा है यह रस
अनुकूल नायक योग्य है धीरललित अंगार रस की प्रकृत्य है
और जोगुरा है यह रस दक्षिणा नायक योग्य है धीर उद्धतरौद्र
रस की प्रकृत्य है श्री तमोगुरा यह रस शठ नायक योग्य है।
धीरोदात वीर रस की प्रकृत्य है मिथित गुरा यह रस धृष्टनायक
योग्य है धीरशांतियुत मनसतोगुरा तन में शांतरस दर्शित
अनुकूल नायक रघुनाथ जी हैं धीरललित सहित रजोगुरा
मनतन में अंगार रस दर्शित दक्षिणानायक कृप्या जी हैं धीर-
उद्धत सहित मनतमोगुरा तनरौद्र रस सहित शठ नायकत्व
शिव जी में है धीरउद्दात सहित मिथित गुरा सहित मनवीर
रस सहित सुरनायक धृष्टनायक है अंगार श्याम रंग विद्या
देवता हास रस श्वेत रंग ब्रह्मा देवता करुणा रस कपोत रंग
यम देवता रौद्र रस अरुणा रंग रुद्रदेवता वीर रस पीत रंग
उन्द्र देवता भयानक रस श्वेत रंग जल देवता विभत्सरसनी-
तरंग महाकाल देवता अद्भुत रस पीत रंग ब्रह्मा देवता शांति
रस श्वेत रंग विद्या देवता चौपाति रस (वीरता) ५ द्या-

गुच्छांती ३ व्याल ४ जीमूत ५ लीलाकर ई उद्याम ७ शंख ८ ।

अथ गद्य । अयोध्यानगरे कनकमणिमराडपे
 कल्पद्रुमगुहो दिव्य धर्यंके सुखासीन ब्रह्मेशेन्द्रादी
 नांवाड्यनपरस्वरूप रूप सुरा विभवैश्वर्य स्वभा-
 वः नितैश्वर्य विशिष्टानंत विभीषणांगदहनुमा-
 नादि परिचरितचररायुगलः स्वभाविकानवधिका
 तिशयज्ञानंवलैश्वर्यशक्तितेजः सौशील्यवात्सल्य
 माईदार्जव सौहाई सौम्य कारुण्य माधुर्यगांभीर्यो
 राय्य स्थैर्य धैर्य सौख्य पराक्रम सत्य काम सत्य संक
 ल्प कृतत्व कृतज्ञाता च शंख्येयकल्याणायुगाग-
 रीो घमहाराव सर्व पूजनीय सीता रामाभ्यां वैचना
 द्योतसाम्यहं २५४ ॥ अथ कविमाल । अग्रसूरके-
 शवकविंद चन्द्रगंगादास टाकुर निवाज कविराज म-
 न्यकाशीराम भंजन मुकुन्द ब्रह्मवंशीधर रघुनाथ
 लन्दनदिनेश इन्दुवलिभद्र धनश्याम केहरी नरोत्तम
 अमरयशवंतदेव संगम किशोर लाल मारबन सबल
 प्रयास चन्दन शिरोमणि प्रताप कान्ह नीलकण्ठ
 सूरति प्रसाद हेम महाराज मतिराम २५५ मराडन
 चतुर कृष्ण नियति गोविन्द दत्तनायक धुरन्धर रतन
 बोधमनी राम मनसा सुमेर पूरि सुन्दर सुरारा शोभ
 बोभाप्रति शिवलाल चिन्तामणि मोतीराम रामराम
 सखी प्रेम राम कृष्ण घनानंद हित हरिवंश हरिदया-
 निधि दयाराम सदानन्द भूधर अनीसमन निधिनाथ

मदनगोपाल तारा हरिलाल गान्धी राम २५६ तो
 नेश पद्मसाकर जगतसिंह स्वात सन्तार ओवन
 सिरीपति वेनी प्रह्लाद जगजीवन विहारीलाल
 तोत्रनिधि कृष्णसिंह शुकादेव कुलपति लीला
 गोकुलनरायण उदयनाथ कालिदास देवी रघु
 शिवसेनापति देवकीनिन्दन भान भूयरा गुला
 स्रद्धिजदेव पुङ्गकर हरदेव तारापति २५७ भरम
 शम्भुनि कंठ हरिकेश खान सुरली नवल भगिवंत
 कृष्णलाल जीवन महेश हरजीवन परशुराम क
 लदेव शुकादेव सन्तनोगोपाल सोमनाथ कावि
 रारि शिवनाथ शिव हरिजन दीटल नवीन मीर्न
 तीलाल आलम प्रवीन राय डूलहर हीमजैन रा
 नरसरवान नायक सुकुन्दलाल २५८ ॥ संवया ।
 दयाकृष्णनाथ अकबरजैन महम्मदनाथ शशी
 रूपनारायण भूपति शास्त्रु चतुर्थज दीनदयाल क
 को दत्तनुनैन मसारख राम सहाय सुसंस्क राम
 श्रीको वैजसुनाथ स्वबुद्धि गुरीकविमाल सुसं
 तुलसीको २५९ परतापगंज परगनवंकी में पूर्वल
 ऊ योजन दोड़ ग्राम मानपुर वैजनाथ वसि जमी
 के राती सोड़ २६० कातिक असित भौम पंचि
 शादियाम रोहिनी नक्षत्रवरियानगरकरनाथ
 स अधिक उन्नविंश सत संवतार्क सुतांश कराति
 ब्रह्म लगनि विनाश जगत्पति जीने के न शर्मा

पाठ पंचमे सुबुधस्य भौमताहिरविसाथ याचप-
नगतदंडपेंतिसकोद्रय कालकाव्यकल्पद्रुमको-
समाप्त कीन वैजनाथ ॥ २६१ ॥ इति श्रीवैजनाथ-
विरचितेकाव्यकल्पद्रुम समाप्तम् ॥

शुंरी नवलकिशोर के छापेखाने सुहस्ता हज़रतगंज सुकाम
शरबनक माह अक्टूबर सन् १९८७ ई. में छाया गया ॥

इस पुस्तक को पण्डित रामबिहारीसुकुलने शुद्ध
किया है ॥

इति

इतिहार

भकर होफि ग्रन्थकर्ता ने इस किताब के छापने का हक इसी मतबे को दिया है
इत कारण इत मतबे की आज्ञाबिना कोई छापने का अधिकारी नहीं है .

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
कठबली उद्यनिघ्न	(८)	(६)	पद्यायतभाषा
केनोपनिषत्	चित्र चन्द्रिका	दुर्गास्तोत्र मूल	प्रलोत्तरी
काव्यसंग्रह	चारावधनीति	दुर्गापाठ सं. टी. म.	पदवारिषे नीफुन्क
रुचितरत्नाकर २ भाग	चौगरी वार्तिक	दुर्गायन नवकाण्ड	द्वितीय ३ भाग में
कवितरत्नाकर २ भाग	(९)	देवीभारतन भाषा	श्लोकचन्द्रोपमाद
ऊषाचालीली	छन्दोराव विंगत	पारहोस्काध	स्यद्वितीया
(१०)	(११)	सामान्य कर्माह भजा	पदार्थ विवर्णन
गीतगोविन्द्या दर्श	जातकालंकार	द्विधमन	प्राकृत भूगण संज्ञिका
गंगालहरी	जातका भरसा	द्वैक्या भरसा	पत्रदीपिका २ भाग
गोपीचन्द्र भरथरी	ज्याडिक्कद	दानलीला	प्रेत प्रकाश
गुरुसुमिररा	जातक चन्द्रिका	दोहापत्नी रत्नावली	पद्यायती मगह
गीतरसिका	जातकालंकार	(१२)	पद्यसंग्रह
गुटका १ भाग	ज्योतिषसारांजली	जिर्गाहसिन्धु	(१३)
तथा २ व ३ भाग	जनकपञ्चीसी	नाग नाहातय	उद्घातक
गर्गसंहिता	जलभूलग	नानार्थनरसंग्रहावली	उद्घातप्रिता
गरुडपुराण प्रेतकल्प	जीवविज्ञानविवेक	नवीनानुष्ट	वेदमुक्ति
गरुडपुराण मथुराका	नगाङ्गोल १ भाग	नवरत्नभाष्य	विद्यासुखलन
ख्या ज्ञा	तथा २ भाग	निर्व. पाठ	विनयपत्रिका दश
गणितकामधेनु	(१४)	नारीवंद	गणदीया कृत
गोवर्द्धननाथ के प्राक	तुलसीकृत रामायण-	(१५)	शिवप्रसाद जी
थ की वार्ता	का शब्दार्थकोष	पदार्थरत्न	विद्वद्वैद्यजी
गोवर्दी माहात्म्य	तु. क. रामायण का	शुक्ला	अभिज्ञान शुक
गुप्त उपकार कथा व	इतिहास	भारतकथा	विनयपत्रिका
भजन विनय प्रकाश	तु. क. रामायण की	प्रेमकथा	भारतकथा
गणितप्रकाश चारों-	भजनदीपिका	श्रीदयलहरी	दशरथ
भाग में	शरीरकृतहृदयकूर्चन	प्रेतकथन	

इतिहास

साहसार्थ सन् १८८६ ई. से सुमालिक नगरवी व शिमाली का बुक डिपो इलाहाबाद क्यूरेटर बुक डिपो से मातवा मुंगी नवलकिशोर सुकाम लखनऊ में आगया है इस डिपो में नगरवी व शिमाली स्यूकेशनल बुक डिपो के सिवाय और भी हर एक विद्या की किताबें मौजूद हैं इन हर एक किताबों की खरीददारी की कुल शर्तें कीमत के सहित इस द्यापेखाने की छपी हुई फ़ेहरिस्त में दर्ज हैं जो दरखास्त करने पर हर एक चाहनेवाले को चला कीमत मिल सकती है - जिन साहबों को इन किताबों का खरीद करना होवे इस द्यापेखाने से खरीद करें और फ़ेहरिस्त तलब करें ॥

द. सनेतर अध्यक्ष अरववार
लखनऊ मुकला हज़रतगंज.

